Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

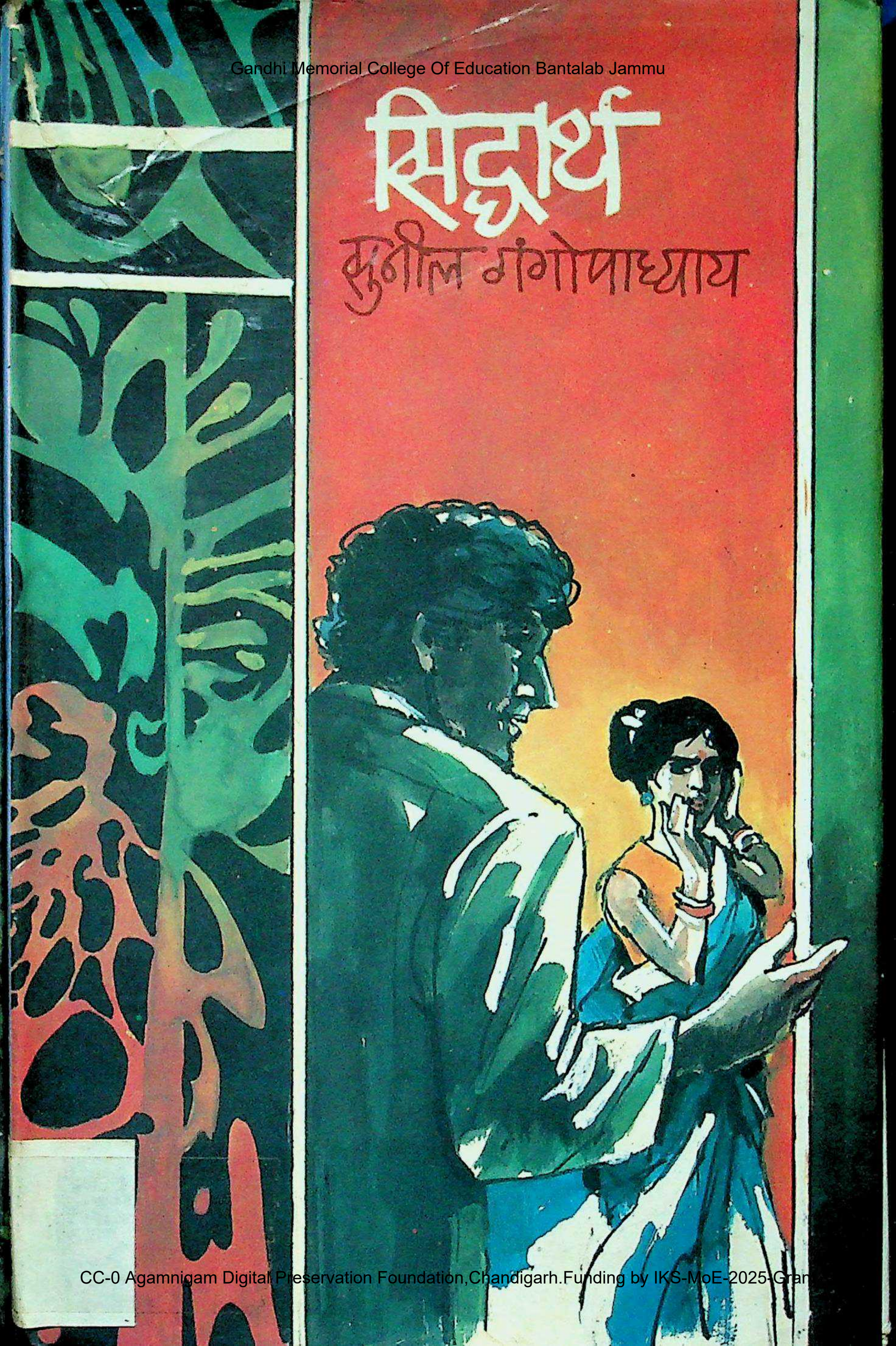

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन्मार्ग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

सरहद के उस पार

अजनबी

राधा माधव

सिद्धार्थ

दद-दर की माटी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 4539
Dated 19/3/003

8 (VI)

लेखक

सुनील गंगोपाध्याय

G.M.C.E.J
4538

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली–110007

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 81-7145-154-3
© : प्रकाशक
प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन,
16, यू०बी०, बैंग्लो रोड़,
जवाहर नगर, दिल्ली-110007
मूल्य : 100.00
प्रथम संस्करण : 1998
आवरण : सौजन्य सत्यसेवक मुखर्जी
मुद्रक :
पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

SIDHARTH (Novel) by Sunil Gangopadyaya
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

सिद्धार्थ अपने मकान से निकल ही रहा था कि अचानक ही उसके सामने एक कार आकर रुकी। कार की पिछली सीट पर कोई भद्र महिला बैठी हुई थीं। ड्राइवर ने सिर निकालकर एक बार इधर-उधर निगाहें दौड़ायीं। गली के बिल्कुल आखिरी छोर पर सिद्धार्थ का मकान दिख रहा था।

ड्राइवर ने उसी से पूछा ? "बता सकते हैं, पचीस बाई-एक नम्बर वाला मकान कौन-सा है ?'

सिद्धार्थ ने भौंहें सिकोड़कर जवाब दिया, 'वोऽ-रहा।''

ड्राइवर अपनी सीठ से उतर पड़ा और सम्मान के साथ कार का पिछला दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया। वह महिला उतर पड़ीं। सूरत-शक्ल से वह चालीस-पैंतालीस के आस-पास की लग रही थीं। गोरा चेहरा ! सुनहरी फ्रेमवाला चश्मा ! काफी रोबीला व्यक्तित्व !

उन्होंने सधी हुई आवाज में पूछा, "मैं जरा कालीप्रसाद चौधरी से मिलना चाहती हूं। इस वक्त क्या वह घर पर हैं ?''

इससे पहले कभी कोई महिला छोटे कक्का से मिलने नहीं आयी थी, अतः सिद्धार्थ के चेहरे पर हल्का-सा विस्मय उभर आया। उसने दरवाजा खोलते हुए कहा, "आइए, भीतर आइए न !''

दरवाजे से अन्दर घुसते ही सब से पहले बरामदा पड़ता है ! बरामदे के एक कोने में एक छोटी-सी मेज और उसके चारों ओर कई कुर्सियां पड़ी हुई थीं। बाहर से आने वाले लोग अकसर यहीं बैठते हैं। उसने कुर्सी पर पड़े अखबार के मुड़े-तुड़े पन्ने समेटते हुए कहा, "आप यहीं बैठिए। मैं उन्हें खबर करता हूं।'

हालांकि उस वक्त छोटे कक्का के सामने पड़ने का सिद्धार्थ का कोई इरादा नहीं था, फिर भी उसने अन्दर जाकर आवाज दी, "टूनू ! ओ टूनू !''

अन्दर से केई जवाब नहीं मिला। इसक मतलब टूनू घर पर नहीं थी। मां जमीन पर चावल फैलाकर कंकड़ चुन रही थी। इसी बीच उन्होंने खिड़की से झांककर महिला को शायद अन्दर आते हुए देख लिया था। उन्होंने सिद्धार्थ को देखते ही सवाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किया, "वह कौन हैं रे ? कहां से आयी हैं ?'

सिद्धार्थ एकबारगी झुंझला उठा, "यह मैं कैसे बता सकता हूं ? वह क्या मुझसे मिलने आयी हैं ?'

"क्यों ? उनका नाम-धाम नहीं पूछा ?"

"हुंह ! किसी शरीफ महिला से, घर में घुसते ही उसका नाम-धाम पूछा जा सकता है ? खैर, छोटे कक्का कहां हैं ?"

मां का चेहरा अचानक बुझ आया। आजकल सिद्धार्थ बात-बात पर मां को मुंहतोड़ जवाब देने लगा है। उन्होने आहत स्वर में कहा, 'देख ले ! वह शायद बगलवाले कमरे में हैं।"

छोटे काकू उस कमरे में नहीं थे। कमरे में एक छोर से दूसरे छोर तक काले रंग की एक साड़ी सूख रही थी। सुतपा की साड़ी होगी ! लेकिन सुतपा तो आज दोपहर से ही घर में नहीं है !

बाथरूम का दरवाजा अन्दर से बन्द था।

सिद्धार्थ ने बन्द दरवाजे के सामने खड़े होकर आवाज दी। "छोटे काकू, कोई भद्र महिला आपसे मिलने आयी हैं, आपको बुला रही है।"

"कौन ?" अन्दर से किसी की विस्मित लेकिन गम्भीर आवाज सुनाई दी।

"मुझे उनका नाम नहीं मालूम ! कोई भद्र महिला हैं। गाड़ी में आयी हैं।"

"कोई महिला ? अकेली ही आयी हैं ?"

"हां।"

"उन्हें बैठने को कह दे। बस, मैं पांच मिनट में आ रहा हूं।"

सिद्धार्थ बरामदे की तरफ लौट आया।

वह महिला बेहद रोबीली मुद्रा में तनी हुई बैठी थीं।

सिद्धार्थ ने कहा, "आप जरा देर बैठिए। बस, वह अभी आ रहे हैं।"

"उन्होंने पल-भर को उसकी तरफ देखा, फिर नजरें घुमा लीं। अपनी तरफ से कोई बात नहीं की।

सिद्धार्थ एक कुर्सी खींचकर बैठने ही जा रहा था कि फिर लौट पड़ा और दीवार से लगे स्विच-बोर्ड तक जाकर बत्ती जला दी।

अभी भी पूरी तरह शाम नहीं हुई थी, लेकिन अन्दर के बरामदे में काफी अंधेरा हो आया था। हालांकि सिद्धार्थ ने कमरे में लाइट भी ऑन कर दी लेकिन उस महिला ने उसकी तरफ एक बार भी नहीं देखा। किसी को यूं अकेले छोड़कर चल देना शोभनीय नहीं लगता, अतः उसने सोचा कि छोटे काकू के आने तक उसे वहीं बैठना चाहिए। लेकिन उस महिला की तटस्थता देखकर वह मन-ही-मन खीझ उठा। "धत्तेरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की !'' और वह बिना कुछ कहे दरवाजा खोल घर से बाहर निकल गया।

सामने की गली पार कर के वह विवेकानन्द रोड की तरफ चला आया। बस रुकते ही वह फौरन चढ़ गया। उस दिन बस में काफी भीड़ थी लेकिन पीछे का रॉड पकड़कर झूलने में उसे खास असुविधा नहीं हुई। पैण्ट में पड़े हुए सिगरेट का पैकेट कहीं दब-दबाकर चपटा न हो जाये, इस ख्याल से वह रह-रहकर झुक जाता था। बस से उतरते हुए एक आदमी ने उसका पांव कुचल दिया। सिद्धार्थ की मुट्ठियां कस गयीं। वह दो-चार सेकेंड तो यह देखने को रुका रहा कि वह आदमी उससे माफी मांगता है या नहीं। उस भारी-भरकम चेहरेवाले आदमी ने उतरने की अफरातफरी में उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। उसने नीचे उतरने के लिए बस के फुटबोर्ड से बाहर कदम बढ़ाया ही था कि सिद्धार्थ ने उसे धीरे से लंगड़ी मारकर गिरा देने की कोशिश की। वह आदमी लड़खड़ा कर गिरने ही वाला था कि अचानक संभल गया। लेकिन उसके हाथ का बैग छिटक कर रास्ते की गन्दी नाली में जा गिरा। बस उसे छोड़कर आगे बढ़ गयी। सियालदह स्टेशन पार होते ही कण्डक्टर ने उससे बस का किराया मांगा। हालांकि वह कण्डेक्टर खाकी रंग की काफी मैली-चीकट कमीज पहने हुए था और शायद छः-सात दिन से दाढ़ी भी नहीं बनायी थी, लेकिन उसकी आंखों में अजीब-सी चमक थी। वह सीढ़ी तक झुक आया और उसने टिकट की गड्डी सिद्धार्थ की नाक तक ले जाकर फ़र्र-फर्र आवाज की ओर गेट पर खड़े लोगों से टिकट के पैसे मांगने लगा।

सिद्धार्थ को अपनी नाक पर यूं टिकट फड़फड़ाना पसन्द नहीं आया। उसने भौंहें सिकोड़कर कड़कती हुई आवाज में कहा, 'देता हूं।''

'देता हूं-देता हूं क्यों कर रहे हैं ? अभी ही दे डालिए न।'

सिद्धार्थ ने कण्डेक्टर की तरफ तीखी नजरों से देखते हुए सामने की जेब में हाथ डाला। उसे जेब में हाथ डालने में भी दिक्कत हो रही थी। बस की रफ्तार जरा धीमी होते ही, वह हैण्डल छोड़कर खट् से उतर गया।

कण्डेक्टर ने बस से बाहर झांकते हुए चिल्लाकर कहा, ''क्यों, अपने बाप की गाड़ी समझी है ? सिर्फ पैण्ट-शर्ट पहन लेने से ही आदमी शरीफ नहीं हो जाता।''

सिद्धार्थ भी आंखें चढ़ाकर गुर्राया, ''भाग, स्साला !''

मिर्जापुर स्ट्रीट के फुटपाथ पर चलते हुए अचानक वह एक मकान के सामने आकर रुक गया और अन्दर दाखिल हुआ। वह मकान मेडिकल छात्रों का हॉस्टल है।

शिवेन का कमरा तीसरी मंजिल पर है। उस दिन उसका दरवाजा अन्दर से बन्द था। दरवाजे पर धक्का देते ही अन्दर से आवाज आयी, ''अभी दरवाजा नहीं खुलेगा। अभी मैं बिजी हूं।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"एइ, खोल ! मैं हूं। सिद्धार्थ।''

"कौन-सा सिद्धार्थ ? दासगुप्ता या चौधरी ?''

"अबे, खोल न ! इतनी उस्तादी क्यों मार रहा है ?''

आदिनाथ ने दरवाजे की दरार से बाहर की तरफ झांका। उस वक्त वह बिल्कुल नंगे बदन था, सिर्फ एक अण्डर वीयर पहने हुए उसके समूचे शरीर, छाती पर उगे हुए काले-काले बाल साफ दिख रहे थे। उसने रहस्यमय ढंग से हंसकर कहा, "चट से अन्दर घुस आ।''

"शिवेन नहीं है ?''

"अबे, वह भी है। तू अन्दर तो आ।''

सिद्धार्थ के अन्दर घुसते ही आदिनाथ ने दरवाजा बन्द करके अन्दर से सिटकिनी लगा दी।

शिवेन अपने तख्त पर चित लेटा हुआ था। दुबला-पतला-सा लम्बे चेहरेवाला शिवेन ! धोबी धुली शर्ट-पैण्ट पहने हुए, हाथ में किताब दबाये, जूते समेट बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसकी आंखें एकटक किताब पर टिकी थीं। चेहरा बिल्कुल सूखा हुआ ! सिद्धार्थ के अन्दर आने के बाद भी उसने सिर नहीं उठाया।

सिद्धार्थ उसके करीब चला आया और उसके हाथों से किताब छीनते हुए कहा, "एइ, इतनी देर हो गयी। अभी तक लेटा क्यों है ? बाहर नहीं चलेगा ?''

किताब छीन लिये जाने पर भी, शिवेन दोनों हाथ छाती से सटाये रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

सिद्धार्थ ने उसे अपने घुटनों से टहोका मारते हुए पूछा, "क्यों रे, मैं पूछता हूं बाहर नहीं चलना है ? यूं ही पड़ा-पड़ा सोता रहेगा ?''

शिवेन ने दु:खी सा चेहरा बनाकर उसकी तरफ देखते हुए कहा, 'देख, इस वक्त मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। जरा आदिनाथ की करतूत देख ! आजकल वह मेरी एक भी बात नहीं सुनता। यह कोई तुक की बात है ?''

दीवार से लगी हुई एक मेज ! कमरे में दोनों के लिए एक ही मेज है ! आदिनाथ ने उसे खींचकर बीच में कर दिया था ताकि अपने और शिवेन के बेड के बीच दीवार खड़ीकर सकें वह दुबारा अपने बेड पर चला आया और सिर झुकाकर घुटनों के बल बैठ गया। उसके होठों पर उपेक्षा-भरी हंसी थी। सिद्धार्थ आदिनाथ के बेड के सिरहाने आ खड़ा हुआ।

आदिनाथ ने अपने विस्तर पर एक अखबार बिछा रखा था और उस पर ढेर सारे सिक्के बिखरे हुए थे। पास में ही रेडक्रॉस का एक डिब्बा पड़ा हुआ था। उस डिब्बे को झकझोरते ही, उ़समें पैसे झनझना उठे। आदिनाथ ने झाड़ू के एक तिनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से उस डिब्बे को उकेरा, तो झन्न-झन्न पैसे गिरने लगे।

सिद्धार्थ ने पूछा, "यह क्या कर रहा है ?"

आदिनाथ ने कोई जवाब नहीं दिया। बस, सिर उठाकर हंस दिया। फिर धीरे से बोला, "यार, जितनी चवन्नियां हैं, सब की सब खोटी हैं। कसम से, साले लोग अपनी जेबों में इतनी सारी खोटी चवन्नियां लेकर घूमते हैं, मुझे नहीं मालूम था।"

"तू सारे पैसे निकाले ले रहा है ?"

"उहूं ! सब नहीं निकालूंगा ! थोड़े से रहने दूंगा।"

शिवेन अचानक उठकर बैठ गया और तीखी आवाज में बोला, "देख रहा है, इस आदिनाथ के बच्चे ने अब आखिरकार चोरी का धन्धा भी शुरू कर दिया है।"

आदिनाथ एकदम से चीख उठा, "चोरी का मतलब ? मैं साला खुद सारे दिन धूप में डांव-डांव घूमता रहा, तब जाकर पैसे बटोरे हैं।"

सिद्धार्थ ने सवाल किया, "इतने सारे पैसे आखिर कहां से आये ?"

"अरे, आज फ्लैग-डे था न ! आदिनाथ भी रेडक्रॉस का डिब्बा लेकर इसी धन्धे में निकला था। मैं अपना कमरा बदल लूंगा ! अब मैं उसके साथ हरगिज नहीं रह सकता।" शिवेन ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा।

"तो जा न ! तुझे किसने पकड़ रखा है ?"

"तुझे अपनी करतूत पर शर्म नहीं आती ? ऊपर से चीख रहा है ? अगर मैं सब को बता दूं तो ?"

"अबे, जिससे चाहे बता दे ! आई केयर ए डैम ! मेरी बला से। अरे, मेरे सिवा है और कोई माई का लाल जो मेरी तरह भर-भर डिब्बे पैसे जमा कर पाया हो ? हुंह....इसका आधा माल भी अगर रेडक्रॉस को मिल जायेगा, तो साले धन्य-धन्य हो जायेंगे।"

सिद्धार्थ ने फिर पूछा, "आदि, तूने क्या पहले से ही यह प्लान बना रखा था ?"

"बिल्कुल भी नहीं। यह आइडिया तो डिब्बा भरने के बाद दिमाग में आया ! देख न, इसमें से पैसे निकालना भी कितना आसान है। तू ही बता, यह रेडक्रॉस पैसा आखिर क्यों इकट्ठा कर रहा है ? लोगों की सहायता के लिए ही न ? इस वक्त मुझे खुद ही सहायता की जरूरत है। मेरी एनाटॉमी की किताब जाने किस साले ने झाड़ दी। डाक्टर सरकार रोज खोंचा मारते हैं, अगर आज वह किताब नहीं खरीदी तो...."

शिवेन चिल्लाया, "तेरी किताब किसी ने नहीं चुरायी। तू खुद ही बेच आया है।"

आदिनाथ अचानक भड़क उठा। हालांकि इतनी देर वह गुस्से में ही बोल रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, लेकिन उसकी आवाज में गम्भीरता नहीं थी। अब उसके गुस्से में थोड़े से अभिमान का भी पटु था। उसने शिवेन की तरफ स्थिर निगाहों से देखते हुए कहा, "यह बात तू मेरे लिए कह रहा है ? लेकिन कान खोलकर सुन ले, आदिनाथ घोषाल और चाहे जो करे, वह अपनी किताब हरगिज नहीं बेचेगा। वह इतना टुच्चा आदमी नहीं है! मेरी किताब किसने ली है, मुझे पता है। उसी साले वरुण ने ! इन दिनों उसका हाथ काफी तंग है। उसे मैंने अपनी आंखों से वह किताब बेचते हुए देखा था। उस साले को मैं रंगे हाथ पकड़ सकता था। लेकिन, मैं शरीफ आदमी हूं, इसलिए उसे नाहक शर्मिन्दा नहीं किया।''

"हुंह् ! शरीफ बनता है ! शरीफ आदमी कभी रेडक्रॉस का पैसा नहीं चुराता।''

'देख, यह 'चोरी' शब्द दोबारा अपनी जबान पर मत लाना। मैं पूछता हूं, अगर मैं शाम तक न घूमता, दोपहर होते ही लौट आता, तो ? इतने पैसे इकट्ठे होते ?'' रेडक्रॉस को इतने पैसे मिल सकते थे ?.... अच्छा चल, ठीक है, मैं अगर चोर हूं, तो चोर ही सही ! किसने कहा है कि तू मेरे साथ मिताई जोड़ ? उस बार पिकनिक के बाद तू खुद ही तो मुझसे बातें करने आया था।''

सिद्धार्थ उनके झगड़े से अलग-अलग निर्विकार भाव से खड़ा था। अब तक उसने इस मामले को उतनी गम्भीरता से नहीं लिया था। आदिनाथ इस बात को इतनी तीखी तरह से न कहता तो बेहतर था और शिवेन को भी इतनी बात बढ़ाने की क्या जरूरत है !

आदिनाथ को बी० एस-सी० ऑनर्स में फर्स्ट क्लास मिला था। डॉक्टरी की क्लास में भी वह तेज छात्र है। यूं वह बहुत बड़े आदमी का लड़का है। कृष्णनगर में उसके बाप और दो-दो चाचा–सब के सब डॉक्टर हैं ! आदिनाथ के सिर जब जो भूत सवार हो जाये उसे वह पूरा करके ही दम लेता है।

आदिनाथ और शिवेन के झगड़े में बीच-बचाव करते हुए सिद्धार्थ बोला, "अबे, ठीक है, ठीक है ! अब जाने भी दे। चल रे, शिबू ! बाहर नहीं चलना है ? पता है, छह बज गये।''

शिवेन ने जवाब दे दिया, "नहीं, यार ! मैं सच कह रहा हूं, आदिनाथ के साथ मैं इस कमरे में नहीं रह सकता।''

"ठीक है, मत रहना ! अभी तो चल।''

शिवेन बाथरूम की तरफ चला गया। आदिनाथ ने रेडक्रॉस वाले डिब्बे को अलमारी में रखकर ताला बन्द किया और चेंज गिनने लगा, फिर जैसे अपने से ही बुदबुदाकर कहा, "तेईस रुपये, साठ पै....! एक दिन की खासा हैवी इन्काम !''

वह भी बाहर जाने के लिए कपड़े पहनकर तैयार हो गया। सिद्धार्थ ने कहा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"चलो, आज तुम लोगों के साथ-साथ जरा मैं भी सैर करूंगा।"

रास्ते में किसी साइकिल वाले ने एक बच्ची को धक्का दे दिया था। उसे घेर कर छोटी-मोटी भीड़ भी जमा हो गयी थी। उस आदमी का चेहरा बिल्कुल हकबकाया हुआ था। उस लड़की की उम्र करीब दस-ग्यारह साल की ही होगी, लेकिन उसकी छातियों की गोलाइयां आकर लेने लगी थीं। इसी बीच जाने कब एक दौर बरसात भी हो चुकी थी। रास्तों पर दलदल और कीचड़ जमा था। उसी कीचड़ के रंग से मिलता-जुलता अंधेरा लिये हुए धीरे-धीरे शाम भी उतर रही थी।

शिवेन ने कहा, "चल न, जरा, देखें कि वहां क्या हुआ है ?"

आदिनाथ बोला, "यह आदमी तो अपना परिचित लग रहा है ! उसे अकसर इसी मुहल्ले में घूमते-फिरते देखा है। साला, जरूर मिसी मतलब से यहां...."

आदिनाथ की बात सुनकर शिवेन रुक गया। कहा, "रहने दो ! उन सब झमेलों में पड़ने की जरूरत नहीं है। चल बीनू....।"

आदिनाथ ने दुबारा जिद की, "अबे, चल न, जरा, देख आयें अगर सचमुच कोई चक्कर होगा तो जरा दो-चार हाथ हो जाय ! हाथ आजमाने का सुख मिले।"

"तेरा मन व्यथित हो रहा है तो तू जा ! हम लोग नहीं जायेंगे।"

आदिनाथ ने सिद्धार्थ की तरफ देखकर पूछा, "क्यों रे, तो तू भी नहीं चलेगा ?"

"क्या जरूरत है....?"

आदिनाथ ने भी अपना इरादा बदलते हुए कहा, "हां सच्ची रे, आखिर हम सालों की ही क्या जरूरत पड़ी है ?"

शिवेन ट्राम-लाइन तक पहुंचकर पल-भर को इस दुविधा में खड़ा रहा कि वह किस तरह जाये।

आदिनाथ ने आग्रह-भरे स्वर में कहा, "इश्श्, आज तो आमिनिया में चलकर दो प्याजा खा आयें। चल, आज मैंऽ खिलाऊंगा।"

शिवेन ने विद्रूप-भरे लहजे में कहा, "क्यों। अभी तो तू कह रहा था कि तुझे एनाटॉमी की किताब खरीदनी है ?"

"अमा, आज तो शनिवार है, वह किताब तो सोम-मंगल तक खरीदने से भी चलेगा।"

"नहीं, हम तेरे उन पैसों से नहीं खायेंगे।"

"उन पैसों का क्या मतलब है ? तू अगर नहीं जाना चाहता, तो मत जा, मैं सिद्धार्थ को ले जाऊंगा।"

"नहीं, आज बीनू और हम किसी और जगह जा रहे हैं। वहां जाना हमने पहले से ही तय कर रखा है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"किसी और जगह का मतलब ? कौन-सी जगह ?''

"है एक जगह। तू नहीं समझेगा।''

"क्यों, मैं भी तो वहां चल सकता हूं।''

शिवेन ने एक पल को कुछ सोचा फिर कहा, "तुझे वहां अच्छा नहीं लगेगा। और फिर तू वहां जाकर करेगा भी क्या ? हम और बीनू ही हो आते हैं।''

"नहीं-नहीं, मुझे अच्छा लगेगा ! मैं यहां अकेला क्या करूंगा ?''

"क्यों झमेला कर रहा है ? सीधी-सी बात यह है कि तेरा जहां मन हो, चला जा। हम और बीनू अलग जायेंगे।''

आदिनाथ आहत-सा वहीं ठिठक गया। दु:ख या अभिमान के पलों में उसका खूबसूरत गोरा चेहरा लाल हो उठता है। उसने बुदबुदाकर कहा, "मैं सब जानता हूं ! तुम दोनों अभी भवानीपुर जा रहे हो, मुझे पता है। तू बीनू को वहां ले जा सकता है और मुझे नहीं ? ठीक है, मैं साला भी परेश के हॉस्टल जा रहा हूं। वहां मुझ साले की हर कोई खातिर करता है। मैं भी किसी की बात मानकर वहां जाना क्यों बन्द करूं ?''

शिवेन ने तल्ख आवाज में कहा, "तू मुझे डर दिखा रहा है ? तू अगर परेश के हॉस्टल में जाकर जुआ खेलता रहे, तो उसमें मेरा क्या आता-जाता है ? हां, मैंने मना जरूर किया था....''

अबे, जाऽ-जा ! बड़ा आया मना करनेवाला !''

आदिनाथ ने दौड़कर सियालदह की तरफ जानेवाली ट्राम पकड़ ली।

उसके जाने के बाद सिद्धार्थ ने शिवेन से पूछा, "तू सचमुच कहीं जा रहा है ?''

"हां, छोटी मौसी के घर चलना है। उन्होंने आज बुलाया था।'

"तो आदिनाथ को भी अपने साथ क्यों नहीं ले लिया ? वह इतना कह रहा था....''

"अरे, धत्त ! वह तो बात-बात में साला-दुसाला बकता है। वहां बड़ों के सामने भी यही बकेगा तो मेरी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। उस दिन डॉक्टर सरकार के सामने भी साला कहने से बाज नहीं आया।''

आदिनाथ की बातें याद आते ही सिद्धार्थ को हंसी आने लगी। पगला लड़का ! बात-बात में नाराज हो जाता है और दूसरे ही पल मिन्नतें करने लगता है। उसकी किसी बात का भरोसा नहीं।

मनोहर पुकुर में शिवेन की मौसी का घर है। झक-झक चमकता हुआ नया मकान ! अभी साल-भर पहले ही बनवाया है। उस मकान से अभी तक सुर्खी-चूने की खुशबू आती है। दूसरे मंजिले के गोल बरामदे में बैठो तो लगता है। समूचा घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी जहाज की तरह तैरने लगेगा।

शिवेन के छोटे मौसा किसी जमाने में मिलिट्री के कर्नल थे। चीन-युद्ध के समय वह लद्दाख में भी लड़े थे। इन दिनों रिटायर होकर, डिफेन्स के कारखानों में लावारिस माल की तरह इधर-उधर भटक रहे हैं। कानपुर से तबादला होने के बाद, वह यहां के गन-ऐण्ड-शेल फैक्टरी के ज्वायण्ट-डाइरेक्टर नियुक्त किये गये हैं।

बस से उतरकर मनोहर पुकुर रोड़ पर आते ही शिवेन और सिद्धार्थ ने दूर से ही देख लिया। दो मंजिले बरामदे में कर्नल विश्वदेव सूर होठों में पाइप दबाये हुए बेहद निश्चिन्त लेकिन चुस्त मुद्रा में खड़े हैं।

शिवेन ने उनकी तरफ देखते हुए कहा, "बीनू, मौसा से तेरी नौकरी के लिए कहूं ? अगर वह चाहें तो तुझे कहीं ट्रेनिंग के लिए फिट कर देंगे।"

सिद्धार्थ ने छूटते ही कहा, "नहीं, नहीं ! उनसे कहने की जरूरत नहीं है।"

"क्यों ? तू नौकरी की खोज में है न ? कहीं मिली ?"

"मिल जायेगी, यार, कहीं-न-कहीं।"

"तुझसे इतना कहा कि डॉक्टरी में भर्ती हो जा। बेकार हो एक साल खराब किया ! इस साल एडमिशन ले ले न।"

पांच-छह साल तक पढ़ने का खर्च चलाऊं, मेरे बाप के पास ऐसी कोई जमींदारी नहीं रखी है।"

"तो फिर एम० एस-सी० में ही एडमिशन क्यों नहीं ले लिया ?"

"दरअसल उस वक्त मैंने तुमसे सच बात नहीं बतायी थी। मुझे एम० एस-सी० में एडमिशन लेने का चान्स ही नहीं मिला। लिस्ट में मेरा नाम ही नहीं आया। अरे वाह, देख-देख।" अचानक सिद्धार्थ ने अपनी कोहनी से शिवेन को टहोका मारा।

उसने पास से दो नौजवान लड़कियां गुजर रही थीं। दोनों उम्र में उनसे दो-एक साल बड़ी ही होंगी। उनके साथ ही पल-भर की खुशबू का एक हल्का-सा झोंका आया और गुजर गया।

सिद्धार्थ ने कमेण्ट किया, "साउथ कलकत्ते में काफी हसीन शक्लें हैं। तूने उनकी उभरी हुई छातिया गौर कीं ?"

शिवेन ने अनुभवी की तरह ज्ञान बघारते हुए कहा, "अबे, वह असली नहीं हैं। नकली हैं–नकली !"

"हांऽ-हां, तुझसे कह गयी हैं न ? या तूने कभी हाथ फेरकर देखा है ?"

"अमा, हाथ फेरने की जरूरत नहीं होती। एक दिन बस में एक लड़की से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टकरा गया, लोहे जैसी कोई सख्त-सी चीज।''

"अबे, भाग ! कभी-कभार मैं भी टकरा जाता हूं ! दो-एक बार तो जान-बूझकर ही....! समझा न, बस, चान्स मिलने की बात है ! लेकिन मैंने तो देखा है सब का बेहद नरम....असल मे तेरा माल ही खराब होगा।''

"अच्छा, तू जान-बूझकर धक्का देता है ? अभी उसी दिन मैं ऐसे आदमी की अच्छी दुर्गत बनते देख चुका हूं। सब लोगों ने मिलकर उसे वोऽ मार मारी....''

"जाऽ-जा ! मुझ पर हाथ उठाये, ऐसा कोई माई का लाल अभी पैदा ही नहीं हुआ।''

बाहरवाला कमरा खाली था। कर्नल मूर की मां सीढ़ियों पर ही खड़ी थीं।

उस बूढ़ी महिला ने उसकी तरफ गौर से देखकर, उन्हें पहचानने की कोशिश करते हुए कहा, "उहां के हैं ? अरे, ई तो हमार डाक साब हैं ! डाक साब इधर कितने दिनों से तुम आये ही नहीं ! इधर में गठिया के दर्द से मरी जा रही हूं।''

शिवेन ने झुककर वृद्धा के पांव छूकर प्रणाम किया। उसकी देखा-देखी सिद्धार्थ ने भी झुककर प्रणाम किया।

शिवेन ने हंसते हुए कहा, "अरे, तुम यह क्या कह रही हो, नानी ? अभी तो मैं पिछले शुक्कर को ही यहां आया था ! सिर्फ एक ही हफ्ता तो हुआ है।''

नानी ने पोपली हंसी बिखेरते हुए कहा, "तुम्हारे लिए तो सिर्फ हफ्ता-भर ही हुआ है, बेटा ! लेकिन तुम तो वादा कर गये थे कि तुम मुझसे ब्याह करोगे, फिर पूरे हफ्ते मुझे देखे बिना तुम रह कैसे पाये ? अच्छा अब मैं समझी ! मैं ठहरी गठिया की मरीज, बीमार बुढ़िया, अब तुम्हारे मन लायक नहीं रही ! लगता है अब कोई और मिलेगी ?''

"अरे नहीं नानी, इत्ती सुन्दर बहुरिया मुझे कहां मिलेगी ?''

"चलो, रहने दो ! यह सब सिर्फ कहने की बातें हैं। तुम्हारे साथ यह कउन है ? तुम्हारा दोस्त ? अरे हांऽ—अब याद आया—मैंने तो उसे पहले भी देखा है ! जाओ भइया, ऊपर चलकर बैठो।''

शिवेन अपने कर्नल मौसा से मन-ही-मन डरता भी है। जहां तक सम्भव होता है, उनके सामने पड़ने से कतराता है। अभी वह गोल बरामदे में ही बैठे होंगे, अत: शिवेन वहां जाने से रहा। सारा घर खाली-खाली लग रहा था। छोटी मौसी अगर घर पर होती, तो उनकी आवाज जरूर सुनाई पडती। शिवेन उसी कमरे में दाखिल हुआ। सिद्धार्थ बाहर ही खड़ा रहा।

शिवेन ने कमरे में घुसते ही पूछा, "अरे, टुलटुल, तू अभी तक घर में ही है ? छोटी मौसी कहां हैं ? बीनू, तू बाहर क्यों खड़ा रह गया, अन्दर आ जा न।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमरे में टुलटुल के अलावा दो लड़कियां और थीं। वह दोनों टुलटुल के कॉलेज की सहेलियां होंगी। कमरे में दो-दो अपरिचित लड़कियों को देखकर सिद्धार्थ संकोच से सिमट आया। शिवेन को कोई लाज-संकोच नहीं था। वह दोनों लड़कियां भले ही अपरिचित हों, लेकिन यह घर तो अपने घर जैसा ही परिचित है !

शिवेन ने टुलटुल से पूछा, "तुम सब अगर कोई खास बात कर रही हो, तो मैं बगलवाले कमरे में जाकर बैठता हूं। छोटी मौसी घर पर नहीं हैं न ?"

टुलटुल ने कहा, "मां तो शॉपिंग के लिए गरियाहाट गयी हैं। तुम लोग इसी कमरे में बैठो न ! आओ, अपनी दोस्तों से परिचय करा दूं, ये हैं मेरी दोस्त–"

उन दोनों लड़कियों का नाम मालविका और केया था। मालविका ने पैर से लेकर साड़ी, अंगूठी, पर्स और बिन्दी तक का मैच मिलाया था। बालों के स्टाइल से साफ जाहिर था कि वह हर दिन नये-नये ढंग से बाल बनाती है। वह अपनी खूबसूरती के बारे में भी अतिशय सजग है, अतः उसके चेहरे पर अभिमान की हल्की-सी झलक है। केया जरा उखड़ी-उखड़ी लगी। कपड़ों में भी कोई स्टाइल नहीं था। लेकिन उसका चेहरा बेहद खूबसूरत लग रहा था–बड़ी-बड़ी आंखोंवाला सरल सौन्दर्य ! लेकिन उन दोनों में से कोई टुलटुल जितनी खूबसूरत नहीं थी। टुलटुल का अंग-अंग तराशा हुआ था ! उंगलियों के पोर और कानों की झालर तक से साफ जाहिर था कि टुलटुल बेमिसाल है। लेकिन वह खुद अपनी खूबसूरती के प्रति सजग नहीं है। वैसे उसका अच्छा नाम आदिति है।

सिद्धार्थ उन तीनों लड़कियों की तरफ निगाह तक नहीं उठा पा रहा था। वह सकुचाया-सा खड़ा रहा। लेकिन उन तीनों लड़कियों को कहीं कोई झिझक नहीं थी।

शिवेन ने पूछा, "टुलटुल, तू आज घूमने नहीं गयी।"

"मैं तो बस निकलने ही वाली थी, मां ने रोक दिया और मुझे घर पर रहने को कहकर बाहर चली गयीं। लेकिन अब उनके आने का वक्त हो गया है, वह आती ही होंगी।"

"तूने अपनी सहेलियों को चाय-वाय पिलायी या नहीं ?"

"ये लोग शाम को चाय नहीं पीतीं। शायद तुम्हारे दोस्त को चाय की जरूरत है ?"

"अरे, वाह, चाय भी नहीं पिलायेगी ?"

सिद्धार्थ ने हड़बड़ाकर कहा, "नहीं, नहीं, मेरे लिए आपको चाय बनाने की जरूरत नहीं है।"

टुलटुल ने हंसते हुए कहा, "अरे, भाई, चाय मुझे नहीं बनानी होगी, हमारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बावर्ची ही बनायेगा। चाय-वाय बनाना मेरे वश की बात भी नहीं। हां, एक काम और हो सकता है। कहिए तो शर्बत बना दूं ? असल में शर्बत बनाना बहुत आसान है। गिलास-भर पानी में खट् से एक टिकिया डाल दो और बस्स....''

''नहीं–नहीं, अभी मैं शर्बत भी नहीं पीऊंगा।''

''शर्बत भी नहीं पीयेंगे ? थैंक गॉड। चलो, मेरी जिम्मेदारी तो खत्म हुई।''

टुलटुल काफी दिनों कानपुर-दिल्ली में रह चुकी है, अतः उसकी भाषा में पश्चिमी पुट है, 'तैयारी' के बदले 'तैयार', 'बन्धु' को 'बोन्धु' कहती है। सिद्धार्थ को उसकी बातें काफी दिलचस्प लगीं।

मालविका भी 'स' की जगह 'श' उच्चारण कर रही थी। अभी जरा देर पहले ही उसने कहा, ''मौशीजी कब आयेंगी रे ? मैं शोच रही हूं कि मैं चली ही जाऊं। लग रहा है बरसात आनेवाली है।''

केया की जुबान बेहद स्पष्ट और साफ थी। उसने कहा, ''अदिति, तूने मुझे कहानी की किताबें देने को कहा था ? क्या हुआ ?''

''आज तो मुश्किल है। किताबों की अलमारी की चाबी....'' केया बीच में ही हंस पड़ी।

जब वह खिलखिलाकर हंस रही थी, उसका सारा बदन हिल रहा था। सिद्धार्थ को लगा उसके भीतर ढेर सारी सदाबहार हंसी जमा है। जरा-सी छेड़ो, तो सब की सब उमड़कर झर जाना चाहती हों।

टुलटुल ने अवाक् होकर पूछा, ''क्यों, तू हंस क्यों रही है ?''

केया ने अपनी हंसी दबाने की कोशिश करते हुए कहा, ''कुछ नहीं, ऐसे ही अचानक एक बात याद आ गयी। अच्छा, तू किताबों की अलमारी में ताला-चाबी जड़कर क्यों रखती है ?''

''मैं क्या करूं ? बापी ने ही तो चाबी लगाने को कहा, वरना किताबें गुम हो जाती हैं।''

''मैंने किसी किताब में पढ़ा था कि अगर कोई कहे कि किताबों की अलमारी की चाबी खो गयी है, तो समझ लेना चाहिए कि उसका किताब देने का मन नहीं है।''

टुलटुल के सरल चेहरे पर स्वाभाविक विस्मय उभर आया। उसने केया की तरफ हैरत से देखते हुए कहा, ''हट्ट ! ऐसा कहीं होता है ? किताबें क्यों नहीं दूंगी ? किताबें आखिर पढ़ने के लिए ही तो होती हैं।''

''चाबी शायद तूने ही खो दी है।''

टुलटुल शर्म से गड़ गयी। उसने कहा, ''असल में किताबों की चाबी कहीं खोयी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नही हैं। मैं ही उसे किसी ठीक जगह पर रखकर भूल गयी हूं। चाबी कहीं मेरे सूटकेस में ही पड़ी है। लेकिन कल से उस सूटकेश की चाबी गुम है। जाने कहां रख दी, याद ही नहीं आ रहा है।'' अचानक उसने शिवेन की तरफ मुड़कर कहा, ''छोटे भइया, तुम जरा अलमारी का ताला तोड़ दोगे ?''

शिवेन ने कहा, 'बेकार ताला क्यों तोड़ रही है ? चाबी का ही पता लगा, मिल जायेगी।''

''नहीं, अब वह चाबी नहीं मिलने की। मैंने सारा घर छान मारा। मैं सुबह से वह ताला तोड़ने की कोशिश में हूं, लेकिन मुझसे तो टूटा ही नहीं ! जरा, तुम कोशिश कर देखो न।''

टुलटुल ने जिसे सूटकेस कहा था वह असल में एक विशाल ट्रंक था। उसे चमड़े का ट्रंक भी कहा जा सकता था। काले रंग का चौकोर बक्सा। उसके कोने पर लोहे की प्लेटें जड़ी हुई थीं। कोई छोटा-मोटा आदमी उस पर मजे से सो भी सकता था। उस बक्से के बीचोबीच एक बड़ा सा ताला लटक रहा था।

शिवेन ने आगे बढ़कर अनुभवी विशेषज्ञों की तरह उस ताले को हिला-डुलाकर देखा। कहा, ''लगता है, यह पक्के लोहे का ताला नहीं है। इसे तोड़ना मुश्किल नहीं होगा। लोहे का कोई रॉड-वॉड है ?''

''रॉड कहां मिलेगा ?'' टुलटुल ने कहा।

''तो फिर एक संड़सी मिल सकती है या नहीं, जरा पता कर।''

''संड़सी ? संड़सी क्या होती है ?''

टुलटुल के इस सवाल पर कमरे के लोगों ने जोर का ठहाका लगाया।

शिवेन ने अपने कन्धे उचकाते हुए कहा, अब इस लड़की को मैं कैसे समझाऊं ? तेरी हिन्दी में इसे क्या कहते हैं, मुझे नहीं मालूम। अरे जिस चीज की मदद से चूल्हे पर गर्म बर्तन रखते-उतारते हैं।''

टुलटुल सकपका गयी। उसने झेंपते हुए कहा, ''एक प्लास ला दूं ? प्लास से काम चल जायेगा ? देखूं, बापी के टूल-बॉक्स में कहीं प्लास जरूर होगा।''

शिवेन ने प्लास के सहारे ताले को कसकर पकड़ लिया और पूरा दम लगाकर घुमाया। कमरे के लोग बेहद उत्सुक निगाहों से शिवेन की तरफ देखते रहे।

टुलटुल उसके और करीब झुक आयी। शिवेन के जबड़े कस गये। उसने भौंहें सिकोड़कर पूरे दम के साथ भरपूर हाथ घुमाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ।

फिर हारकर कोशिश छोड़ दी। कहा, ''उफ् ! मुझसे नही होगा। चाबी का ही पता लगा। यहीं कहीं मिल जायेगी।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टुलटुल ने हताश भाव से कहा, "यह क्यों नहीं कहते कि तुमसे भी नहीं हो सकता।"

"हां, यह मेरे वश के बाहर की चीज है। बीनू, चल जरा तू ही कोशिश कर न ?"

टुलटुल ने सिद्धार्थ की तरफ अनुनय-भरी निगाहों से देखकर कहा, "हां, आप भी जरा देखिए ना !" उसके लहजे से लग रहा था, मानों उसे पूरा-पूरा भरोसा है कि सिद्धार्थ इस काम को जरूर कर पायेगा।

केया ने टोका, "एइ, अदिति, किताबें ऐसी कोई जरूरी नहीं हैं। आज न भी मिलें, तो काम चल जायेगा।"

"अरे, वह बात नहीं है ! चाबी तो अब मिलने से रही ! ताला तो खैर, अब तोड़ना ही पड़ेगा।"

"बाद में किसी चाबीवाले को बुलवाकर ताला खुलवा लेना।"

टुलटुल का चेहरा ऐसा मासूम हो आया मानो उसने चाबीवाले का नाम इससे पहले कभी नहीं सुना। लेकिन ये लोग कहीं फिर न मजाक उड़ाने लगें, इस संकोच से उसने यह बात जाहिर नहीं होने दी। उसने कहा, "धत्तेरे की ! अब यह सब झमेला कौन करने लायेगा ? पुराना ताला है, तोड़ ही डाला जाये तो बेहतर है। आप जरा देखिए न, बीनू दा....!"

शिवेन से सिद्धार्थ का चेहरा अधिक स्मार्ट है। उसकी मांसपेशियां भी काफी मजबूत हैं। हायर सेकेण्डरी की परीक्षा देने के बाद उसने काफी दिनों कसरत भी की थी। उसने आगे बढ़कर अपने सख्त हाथों से प्लास को कसकर दबाया और जोर का धचका दिया। ताला काफी मजबूत था। सिद्धार्थ की हथेलियों की पकड़ और सख्त हो आयी। उसके हाथ की नसें फूल उठीं, लेकिन उसे अंदाज हो गया कि वह ताला तोड़ देगा। अचानक उसे बेहद शर्म आने लगी। सब की आंखें निःशब्द उसी की तरफ लगी थीं। टुलटुल उसके इतने करीब आ खड़ी हुई कि उसकी सांसें उसके गालों से टकरा रही थीं। इशश् ! ये लोग शायद यही समझेंगे कि वह अपनी प्रचण्ड शक्ति का परिचय देना चाहता है। लेकिन उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था। इसके अलावा उसे यह सोच-सोचकर और शर्म आने लगी कि जो काम शिवेन नहीं कर पाया, उसे वह कर दिखायेगा। ये लोग कहीं यह तो नहीं सोच रहे हैं कि वह बहादुरी का तमगा पाने की कोशिश कर रहा है ? उसके मन में ऐसी कोई चाह नहीं थी। अब तो इन्कार भी नहीं किया जा सकता। अब तो वह ताला तोड़कर ही रहेगा ! टुलटुल की उसांसें ! केया की उत्सुक दृष्टि ! मालविका के मेकअप की खुशबू। वैसे शिवेन के चेहरे से भी यही भाव झलक रहा था कि वह नहीं तोड़ पाया, फिर भी वह चाह रहा है कि इन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़कियों के सामने कम से कम उसका दोस्त ही ताला तोड़ दे। उसने अपनी समूची ताकत लगाकर जोर से हाथ घुमाया और ताला खट् से दो टुकड़े हो गये।

किसी ने तालियां नहीं बजायीं, उसका अभिनन्दन नहीं किया। लेकिन सब ने मानो राहत की सांस ली। अगर वह ताला न तोड़ पाता तो शायद उन सब के लिए शर्म की बात होती। प्लास एक किनारे रखकर, सिद्धार्थ ने बक्से का ढक्कन उठा दिया। उसे दुबारा शर्म आने लगी। ताला तोड़ने के तुरन्त बाद ही उसे अलग हट जाना चाहिए था। इससे पहले उसने कभी किसी परायी लड़की का बक्सा खोलकर नहीं देखा था। टुलटुल के बक्से की चीजें बेहद अस्त-व्यस्त थीं। शायद ऐसी कोई चीज नहीं थी, जो उतने बड़े बक्से में मौजूद न हो। तरह-तरह के रंगीन रिबन, खाली सेण्ट की शीशियां, छोटा-सा एक कश्मीरी बक्सा। टूटे पैरोंवाली गुड़िया ! एक बण्डल खत ! ढेर सारी तस्वीरें ! बहुत-सी रंगीन पेन्सिलें ! फटी हुई ब्रेजियर, दो बण्डल रूई, एक सेट सलवार-शर्ट–यानी बचपन से लेकर अब तक की तमाम धरोहर टुलटुल के बक्से में जमा थी। मानो बक्से के बजाय वह कोई इतिहास की किताब हो। इतनी खूबसूरत-सी टुलटुल और उसका बक्सा इतना अस्त-व्यस्त होगा, सिद्धार्थ सोच भी नहीं सकता था। उसके लिए यह आश्चर्यजनक बात थी, इसीलिए वह उन चीजों को ध्यान से देखता रहा।

टुलटुल ने अपनी कोमल हथेलियों से उसे एक ओर धकेलते हुए कहा, "एइ....मेरा बक्सा क्यों निहार रहे हैं ? जी, नहीं, मैं अपना बक्सा किसी को भी नहीं देखने देती।"

उसी समय सीढ़ियों पर छोटी मौसी की आवाज सुनायी दी। छोटी मौसी दरवाजे पर आ खड़ी हुई, "शिबू आया है ? क्यों रे, इतने दिनों बाद तुझे आने की फुरसत मिली ? और तू अपनी मां को खत क्यों नहीं लिखता ? मंझली दीदी ने शिकायत की है कि शिबू खत-वत नहीं देता।"

शिवेन ने अवाक् होकर कहा, "मौसी, अभी पिछले ही हफ्ते में यहां आया था। मां को भी अभी इसी महीने की शुरुआत में खत लिखा था।'

"तुम सब ठहरे आज के जमाने के लड़के न ? महीने के शुरू में खत लिखा था और आज महीने की अट्ठाईस तारीख हो रही है। अरे, तेरे पास वह कौन खड़ा है ? सिद्धार्थ ? क्यों भाई, तुम्हारी क्या खबर है ? तुम तो तीन-चार महीने पहले एक बार यहां भूले से आ पड़े थे और उसके बाद हमें शायद भूल ही गये।"

छोटी मौसी को सिर्फ सवाल किये जाना ही अच्छा लगता हैं उन्हें जवाब सुनने की फुर्सत नहीं होती।

अपने दस वर्षीय बेटे डोडो के साथ शापिंग करके लौटी थीं। उनके अपने दोनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ और डोडो के हाथ सामानों से भरे हुए थे। इसके बावजूद उन्होंने कहा, "शिबू, गाड़ी में कुछेक पैकेट पड़े हैं, उन्हें उठा ला। केया, मालविका, तुम लोग जरा बैठना, बढ़िया संदेश लायी हूं। खाकर जाना। डोडो, देखना बेटे, पैकेट अच्छी तरह थामे रहना। अरे, देख, गिरा रहा है न ! एइ, टुलटुल, उसके हाथ से जरा, पैकेट थाम ले न।" छोटी मौसी ने पल-भर में सारा घर गुलजार कर दिया। कर्नल मौसा की आवाज कहीं भी सुनायी नहीं दी। वह मुंह में सिगार दबाये हुए शायद उसी तरह गोल बरामदे की रेलिंग पर झुके हुए खड़े थे।

मालविका का ड्राइवर पत्थर की मूरत की तरह अपनी सीठ पर अटल बैठा था। मालविका को यहां आये करीब-करीब दो घण्टे हो चुके थे लेकिन वह एक बार भी अपनी सीट से नीचे नहीं उतरा। मालविका को आते देखकर वह सिर झुकायें हुए नीचे उतरा और पिछला दरवाजा खोल दिया।

मालविका ने पूछा, "चलिए, आप लोगों को कहां छोड़ दूं ?"

टुलटुल उन्हें दरवाजे तक छोड़ने आयी थी, उसने कहा, "क्यों ? तू नहीं चलेगी ? चल न, जरा घूम आयें। छोटे भाइया, तुम लोग हम लोगों को एक पिक्चर दिखा दो न।"

मालविका ने कहा, "अरे, सात बज चुके। अब कौन-सी पिक्चर देखेंगे ?"

टुलटुल ने उसकी बात काटते हुए कहा, "क्यों, नाइट-शो देख लेंगे। आज तो शनिवार है। कल तो कॉलेज भी बन्द नहीं है।"

मालविका के लिए मानो यह अनहोनी बात हो। उसने केया की तरह हैरत से देखते हुए कहा, "यह टुलटुल भी अजीब खोपड़ी है। नाइट-शो पिक्चर देखेंगी ! गजब।"

केया ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके होठों पर दबी-दबी-सी हंसी उभर आयी।

आखिरकार काफी कोशिशों के बाद मालविका लेक के दो-एक चक्कर लगाने को राजी हो गयी।

पिछली सीट पर चार से अधिक लोगों के लिए जगह नहीं थी। सिद्धार्थ ने खुद ही हिसाब लगाया और वह ड्राइवर की बगल में जा बैठा। शिवेन उन लड़कियों के साथ पीछे बैठा। जब गाड़ी चल पड़ी तो जरा देर बाद ही टुलटुल ने एक अंग्रेजी गीत गुनगुनाना शुरू किया। उसकी आवाज काफी सुरीली थी।

सिद्धार्थ को अंग्रेजी गानों का एक शब्द भी समझ में नहीं आता। अंग्रेजी गीत सुनते हुए उसे लगता है जैसे कई सारी बिल्लियां म्याऊं-म्याऊं कर रही हों। अभी तक टुलटुल उसे बहुत अच्छी लगी थी। अचानक पहली बार उसे लगा, अमीरों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़कियां कहीं से भी बंगालिन नहीं रह जातीं–बिल्कुल मेम बन जाती हैं। चलो, मान लिया कि इन्होंने कुछ दिन कानपुर और दिल्ली में बिताये हैं, लेकिन इस वजह से आप खाना बनानेवाले रसोईये को 'बावर्ची' पुकारेंगी ? हुंह, क्या अंग्रेजियत है !'

मालविका का मकान करीब था–सादर्न एविन्यू में सब के सब वहीं उतर गये। मालविका गाड़ी से उतरकर अपने कमरे के अन्दर चली गयी।

शिवेन ने कहा, "चलो, हम लोग केया जी को उनके घर तक छोड़ आयें। चल रे, अपन पैदल-पैदल चलें। इन्हें जरा छोड़ आयें।"

केया ने रहस्यमयी हंसी हंसते हुए कहा, "आप लोग पैदल-पैदल मुझे छोड़ने जायेंगे ? सचमुच, आपकी बात सुनकर मजा आ गया। अच्छा, बताइए तो मेरा घर कहां है ?"

शिवेन ने कहा, "अरे, और कहां होगा ? चलो, हम अपनी ज्योतिष-विद्या से अभी पता लगाते हैं। आपका घर....या तो न्यू अलिपुर में होगा या सी०आइ०टी० रोड में यानी यहीं कहीं होना चाहिए...."

केया खिलखिलाकर हंस पड़ी। कहा, "याद रहे, अब पैदल-पैदल ही घर तक जाना होगा। तो चलिए, हमारा घर मानिकतल्ले में है।'

सिद्धार्थ आश्चर्य में पड़ गया, "मानकतल्ला ! अरे, तब तो आप मेरे घर के आस-पास ही कहीं रहती हैं। मैं विवेकानन्द रोड पर रहता हूं।"

"विवेकानन्द रोड़ ? कौन-सी जगह ?"

चारों लोग बातें करते हुए टुलटुल के घर तक पैदल ही आये। टुलटुल को छोड़कर, वह तीनों डबल-डेकर बस पर चढ़ गये। केया को लेडीज-सीट पर जगह मिल गयी। शिवेन उसकी बगल में बैठ गया। सिद्धार्थ को खड़े-खड़े जाना पड़ा। बस में काफी भीड़ थी। सिद्धार्थ के सिर पर दूसरी चिन्ता सवार हो गयी–टिकट कौन खरीदेगा ? हर आदमी का पचीस पैसे के हिसाब से किराया लगेगा। कण्डक्टर अभी नीचे ही खड़ा है, ऊपर आकर वह सब से पहले उसी से टिकटें मांगेगा। हुंह ! यह शिबू भी क्या फुर्ती से बस में सवार हो गया और क्या शान से लड़की की बगल में जमकर बैठा है। हिसाब से उसे ही किराया भी चुकाना चाहिए। सिद्धार्थ परेशान हो उठा। अचानक अगली सीठ पर जगह खाली होते ही, वह दूसरों को धकेलकर, खुद वहां जा बैठा।

शिवेन हरीसन रोड के मोड़ पर उतर गया। रास्ते पर खड़े होकर उसने केया की तरफ हाथ हिलाया। जब सब चल पड़ी तो उसने सिद्धार्थ की तरफ चिल्लाकर न जाने क्या कहा, उसे समझ नहीं आया।

केया की बगलवाली सीट खाली थी। उसने सिद्धार्थ को आवाज देकर कहा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आप यही आ जाइए न।"

अब भी वह जगह शिवेन के स्पर्श से गर्म थी। सिद्धार्थ झिझकते हुए उसकी बगल में बैठ गया। केया की बांहों से उसका कन्धा टकरा गया। वह थोड़ा सरक गया। केया की गोद में अंग्रेजी की किताबें पड़ी थीं।

सिद्धार्थ ने पूछा, "लगता है आप किताबें काफी पढ़ती हैं।"

केया ने जवाब दिया, "हां, का-फी! मुझे उपन्यास-कहानियां बहुत पसंद हैं। आपको पढ़ने का शौक नहीं है?"

"मैं ठहरा साइन्स का स्टूडेण्ट! किताबें-विताबें पढ़ने का मुझे खास शौक भी नहीं है। हां, कभी-कभार बंगला की किताबें जरूर उलट-पुलट लेता हूं। लेकिन अंग्रेजी की किताबें?....बाप रे!"

"क्यों? अंग्रेजी ने कौन-सा पाप किया है? देखिए न, यह किताब एडना-ओ-ब्राउन की लिखी है। क्या गजब का लिखा है! आप इनकी किताबें पढ़ें। कितनी स्पष्ट और सहज तरीके से अपनी बातें–"

"न्ना! मुझमें इतना धीरज ही नहीं है। मैं तो अंग्रेजी के दो-चार पन्ने पढ़ते-पढ़ते ही हांफ उठता हूं। आप लोगों ने साहबी स्कूलों में पढ़ाई-लिखाई की है। आप लोगों को अंग्रेजी पढ़ने की आदत है।"

"आपको कैसे पता कि मैं साहबी स्कूल में पढ़ती थी?"

"यह बात तो आप लोगों की सूरत से ही जाहिर होती है।"

"धत्! मेरा चेहरा देखकर क्या यही लगता है? और फिर आपने तो मुझे अच्छी तरह देखा भी कहां है।"

सिद्धार्थ बुद्धुओं की तरह केया के चेहरे की तरफ देखता रहा और सच ही उसे एक बार भर नजर देखने की कोशिश की। हां, पहले उसने इतने गौर से नहीं देखा था। इस बार साफ-साफ ही देखा। केया की ठुड्डी के ठीक बीचोबीच लम्बा-सा कटा हुआ निशान है। उसकी भौंहें भी काफी काली और घनी हैं। कहीं उसने काजल लगाकर शेप तो नहीं बनाया है? सिद्धार्थ अपनी खोज-भरी आंखों से उसे परखने की कोशिश कर रहा था।

विवेकानन्द रोड पर पैदल चलते हुए सिद्धार्थ के घर की गली पार हो गयी। सिद्धार्थ ने उस ओर इशारा करते हुए केया से कहा–"मेरा घर यहीं है। आप किसी दिन हमारे यहां आइए न! मैं आपको अपनी बहन से मिलाऊंगा। मेरी बहन सुतपा, आपकी ही हम उम्र होगी।"

"आपकी बहन कहां पढ़ती है?"

"उसने पढ़ना छोड़ दिया है, अब वह नौकरी करती है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे, अभी से नौकरी करती है ? वाह ! बहुत मजा आता होगा न ! कहां नौकरी करती है ?"

सिद्धार्थ का चेहरा गम्भीर हो आया। वह इस बारे में बात नहीं करना चाहता था। उसने बात बदलते हुए कहा, "चलिए, आपको घर तक छोड़ आऊं–"

"अरे, नहीं, नहीं ! मुझे छोड़ने जाने की जरूरत नहीं है ! बस, यहां से थोड़ी ही दूर पर तो है...."

"चलिए न, आपका घर देख आऊं। आप लोगों की कोठी तो काफी बड़ी होगी ?"

"क्यों ? मेरे चेहरे पर यह भी लिखा है ?"

"यह तो बड़ी आसान-सी बात है। अमीर घरानों की लड़कियां ही तो लॉरिटो कालेज में पढ़ने जाती हैं।"

केया ने हंसते हुए कहा, "हांऽ–हम लोग काफी बड़ी कोठी में रहते हैं। लेकिन हमारे पास उस बड़ी-सी कोठी का एक छोटा-सा फ्लैट-भर ही है। देखो, यह रही हमारी कोठी–"

केया के चले जाने के बाद सिद्धार्थ ने महसूस किया, केया उसके करीब थी, तो एक भीनी-भीनी-सी महक भी उसके साथ चल रही थी। अचानक वह खुशबू कहीं गुम हो गयी है।

2

उस दिन सिद्धार्थ काफी खुश-खुश घर लौटा। साढ़े आठ बज चुके थे। नौ बजे तक घर न लौटने पर काका बहुत नाराज होते हैं। लेकिन टूनू अभी तक नहीं लौटा था। अपने कमरे की तरफ जाते हुए उसने मां के कमरे में झांककर देखा। मां के कमरे में पलंग की पाटी पर हाथ रखे हुए एक ओर सुतपा खड़ी थी। उसका चेहरा बुझा हुआ था। मां और छोटे काका का चेहरा गम्भीर दिख रहा था। लो, आज फिर कोई बखेड़ा हुआ है ! सुतपा की नौकरी छुड़वा दी जाये तो सब ठीक हो जाये। रोज-रोज का झंझट अच्छा नहीं लगता। सिद्धार्थ उस कमरे में न जाकर, सीधे अपने कमरे में चला आया। उसे याद आया, सुबह एक महिला काका से मुलाकात करने आयी थीं। हुंह ! अहंकार के मारे चूर हुई जा रही थीं। फटीचर-सी फिएट कार पर क्या आयी थीं, दिमाग ही नहीं मिल रहा था। टुलटुल की मामी यानी शिवेन की छोटी मौसी को जरा भी अहंकार नहीं है।

यह सब सोचते हुए वह अनमना हो आया। शर्ट उतारते हुए उसकी जेब से कुछ पैसे झनझनाकर जमीन पर बिखर गये। वह पैसे बीनने के लिए झुका, तो उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निगाह खटिया के नीचे रखे हुए पोस्टरों पर पड़ी। लाल स्याही से बड़े-बड़े अक्षरों में जाने क्या-क्या लिखा हुआ था। जरूर टूनू की ही करतूत है। उसने पोस्टरों को खींचकर बाहर निकाला और पढ़ने लगा। हर पोस्टर में काफी जोशीले नारे लिखे हुए थे–'वोट का तमाशा नहीं चलेगा !' सशस्त्र विद्रोह ही एकमात्र राह है।' अमेरिकी दलालों और पूंजीपति सरकार को सबक कौन देगा–मजदूरों की बन्दूक।' 'वियेतनाम–लाल सलाम !' यानी कल रात-भर जाग-जागकर टूनू ये विज्ञापन लिखता रहा है ! टूनू की राइटिंग सच ही खूबसूरत है। लेकिन....इस बार उसका बी०एस-सी० में पास होना नामुमकिन है।

पलंग के नीचे सिद्धार्थ के सूटकेस का ढक्कन खुला हुआ था। जरूर टूनू ने ही खोला होगा। अचानक उसे गुस्सा आने लगा। यह टूनू भी अब जरूरत से ज्यादा सिर पर चढ़ गया है। जाने कितनी बार मना किया है। उसके सूटकेस में कितने सारे जरूरी कागजात पड़े हैं। उसने झट से सन्दूक खोलकर, अन्दर का निचला अखबार उलटकर देखा। तस्वीरें वगैरह अपनी जगह पर सुरक्षित थीं। कालेज के दिनों में, एक लड़के ने उसे कुछ तस्वीरें देखने को दी थीं। औरत-मर्दों की गोपन हरकतों की तस्वीरें ! उन तस्वीरों को वापस करने का मौका ही नहीं मिला। आज भी किसी-किसी दिन काफी रात गये उन तस्वीरों को देखने का मन करता है। लेकिन किसी दिन ये तस्वीरें अगर टूनू के हाथ में पड़ गयीं तो ? अब इन्हें कहीं और हटाना होगा। आदिनाथ इन्हें शौक से रख लेगा। काश, वह टूनू को ही किसी कमरे में टरका पाता ! टूनू को किसी भी शर्त पर, वह छोटे काका के कमरे में सोने को राजी नहीं कर पाया। इसके अलावा और कोई कमरा तो नहीं है !

सिद्धार्थ के बापू के मरने के बाद डेढ़ साल के भीतर ही घर का पार्टिशन हो गया। कुछ दिनों पहले तक सिद्धार्थ की मां विनता ही इस घर की कर्त्ता-धर्त्ता थीं। किसी-किसी दिन मीट बनेगा, घर के बच्चे मास्टर जी के सांथ सर्कस देखने जायें या नहीं, इन सब बातों का फैसला वही करती थीं। सिद्धार्थ के बापू शिवनाथ बेहद ठंडे मिजाज के आदमी थे। उनकी मौत के बाद विनता की देवरानी ने उनके अनुशासन में रहने से साफ इन्कार कर दिया। उसके दो-दो काका भी घर से अलग हो गये। मंझले कक्का अपना हिस्सा बेचकर टालीगंज में रहे चले गये। उनका हिस्सा बड़े कक्का ने खीद लिया था। जब बापू मरे थे, उसकी उम्र कुल सत्रह साल की थी। सुतपा सोलह साल की थी और टूनू चौदह का। मां उस मुसीबत में कैसी असहाय हो आयी थीं। छोटे कक्का ने ब्याह नहीं किया। अब तो वह अड़तालीस साल के होने को आये, अब क्या ब्याह करेंगे ? उन्होंने ही उनके परिवार की जिम्मेदारी संभाल ली। आज भी वह उनके साथ ही रहते हैं। कुल मिलाकर साढ़े तीन कमरे और सामने के गलियारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का एक हिस्सा सिद्धार्थ के हिस्से में पड़ा है। सिद्धार्थ को अपने इस दोमंजिले मकान की ओर देखते हुए सच में बहुत तकलीफ होती है। जिस कमरे की दीवारों का एक-एक निशान उसका जाना-पहचाना है, वही कमरा उससे छिन गया। अब उस कमरे में बड़े कक्का के सुपुत्र 'रूनू' दा अपने यार-दोस्तों समेत अड्डा जमाते हैं। उनके हो-हुल्लड़ से सारा घर हिलने लगता है और सिद्धार्थ के सीने में जैसे आग जल उठती है। आजकल 'रूनू' दा उससे बात तक नहीं करते।

सिद्धार्थ ने पैण्ट उतार पायजामा पहन लिया और तौलिया उठाकर बाथरूम में घुस गया। बाथरूम के आदमकद आइने के सामने खड़े होकर उसने दो-एक बार जैसे अपने-आपको ही मुंह चिढ़ाया। उसने एक बार अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखा और फिर दाहिनी बांह घुमाते हुए मांसपेशियां मजबूत करने लगा। हां, उसे कहीं कोई शरीरिक तकलीफ नहीं है। उसकी देह की रग-रग पूरी तरह स्वस्थ और निरोग है। लेकिन फिर भी उसके लिए कहीं कोई काम नहीं है। सारा-सारा दिन बीत जाता है, कहीं कुछ करने को नहीं है। न्ना....साला, अब कुछ न कुछ करना ही होगा। मार्टिन बर्न के उस बूढ़े-खूसट से मुलाकात न करने की कोई वजह नहीं है। वह मानो अपने को ही समझाता रहा, देखो, बेटा सिद्धार्थ, ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो। अरे, इन आदर्श-फादर्श में क्या धरा है ? इन्हें क्या धो-धोकर पीओगे ?....वैसे लड़की केया वाकई बढ़िया चीज है। क्या गजब का फीगर है ! कोई खास नाज-नखरेवाली भी नहीं है। एक दिन अपने घर आने की भी दावत दे गयी है। लेकिन, अगर वह सचमुच पहुंच जाये तो क्या वह सीधे मुंह बात भी करेगी ? वह ठहरी अमीर घराने की लड़की। उसके जैसे जाने कितने लोगों से उसकी जान-पहचान होगी ! धत्तेरे की ! अंग्रेजी कहानी-उपन्यास पढ़ना उसके वश की बात नहीं है। हुंह ! कोई उससे केमेस्ट्री के फार्मूले पूछे। हालांकि उसने डेढ़ साल पहले इम्तहान दिया था, लेकिन आज भी फटाफट जवाब दे सकता है। वैसे इन लड़कियों से अगर कोई पूछे–'क्यों, भाई, अपने बंगला में भी कितने अच्छे-अच्छे लेखक हैं, उनका....तो क्या हो ?' सिद्धार्थ ने आगे बढ़कर अपना गाल आइने पर रख दिया। आह ! शीशा कितना ठंडा है।

बाथरूम से निकलकर सिद्धार्थ ने मां को आवाज दी, "मां, लाओ, खाना दो। मुझे भूख लगी है। एइ, तपू, क्या कर रही है ? चल, खाना-वाना लगा दे।"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सुतपा मां के कमरे में खटिया का पाया थामे उसी तरह खड़ी थी। उसकी आंखें छलछलायी हुई थीं, लेकिन उसके चेहरे पर किसी तरह का अपराध-बोध नहीं था, मानो वह गुस्से से तप रही हो !

मां और छोटे कक्का भी उसी तरह गम्भीर मुद्रा में बैठे थे।

छोटे कक्का ने ही आवाज दी, "बीनू, जरा यहां तो आओ। टूनू अभी तक घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं लौटा न ?''

–नहीं।

–तुम जरा, यहां आओ। इधर, इस खटिया पर बैठ जाओ। तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

सिद्धार्थ ने तौलिया खूंटी की तरफ उछाल दिया और उंगलियां फिराकर अपने अस्त-व्यस्त बालों को ठीक किया। कल-परसों में ही बाल बनवाना होगा। कमरे में आकर उसने तीनों लोगों पर एक बार सरसरी निगाह डालकर परिस्थिति का अन्दाज लगाने की कोशिश की। आज फिर कौन-सा नाटक होने वाला है ? मां की आंखें भी लाल थीं। शायद थोड़ी देर पहले रोयी थीं। विधवा होने के बाद से ही उन्होंने जो रोना शुरू किया, आज साढ़े चार साल होने को आये, उनके आंसू नहीं थमे। यही मां पहले कितनी हंसमुख थीं।

छोटे कक्का ने इतनी गर्मी के बावजूद कुर्ता नहीं उतारा था। वह कभी किसी भी नौकरी-वौकरी के चक्कर में नहीं पड़े। जब इस घर की हालत उठान पर थी, वह इस घर के दुलारे छोटे बाबू थे। जब चाय का कारोबार दिनोंदिन तरक्की कर रहा था, दादाजी ने सोचा था, वह छोटे कक्का को विलायत भेजेंगे। अचानक उनकी मौत से सारी बात गड़बड़ा गयी। दादाजी का बेटा चाय का कारोबार नहीं संभाल सका। एक जमाना था, जब यही छोटे कक्का काफी शौकीन तबीयत के आदमी थे। उसे याद है, उनके हाथ में हर वक्त कीमती सिगरेट का डब्बा रहता था। इन दिनों वह आश्चर्यजनक रूप से बदल गये हैं। अब तो खद्दर के अलावा और कुछ नहीं पहनते। हर वक्त समाज-कल्याण के कामों में डूबे रहते हैं। इधर कुछ दिनों से इस मुहल्ले में नाइट-स्कूल खोलने की योजना में व्यस्त हैं। हुंह ! खायें-पियें घर का और चाकरी बजायें औरों की। आजकल सरकारी दफ्तरों में कितनी तरह के नये-नये डिपार्टमेण्ट खुले हैं। कहीं कोई नौकरी करते हुए, यह सब धन्धा करें तो भी कोई बात है। वह तो करते नहीं बना–! दादाजी की चाय कम्पनी बेच देने के बाद, रॉयल्टी के नाम पर जो थोड़ा-बहुत मिल जाता है, बस....उसी से....

छोटे कक्का ने गम्भीर आवाज में अपनी बात शुरू की, "टूनू दिन पर दिन इतना उद्दंड होता जा रहा है, उस मामले में तुम्हारी भी कोई जिम्मेदारी है, इसका कुछ ख्याल है तुम्हें ?''

सिद्धार्थ कुछ दिनों पहले तक अपने छोटे कक्का से बुरी तरह डरता था। आजकल वह बिल्कुल निडर हो गया है। हुंह ! किसी से डरने-वरने की कोई जरूरत नहीं है। उसे हर किसी की भीतरी करतूतों की खबर है। सिद्धार्थ ने जवाब दिया, "आजकल टूनू के कालेज में इलेक्शन हो रहे हैं; शायद इसीलिए इन दिनों उसे घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लौटने में देर हो जाती है।''

–इलेक्शन के नाम पर वह रात को दस-ग्याह बजे घर लौटेगा ? पढ़ने-लिखने वाले लड़कों के लिए हद से हद रात नौ बजे तक घर से बाहर रहना काफी नहीं है ? और फिर इलेक्शन जैसी खुराफातों में इतना इन्वाल्व होने की क्या जरूरत है ?

–इसका जवाब तो खैर वही दे सकता है। वैसे मेरा अपना ख्याल यह है कि कालेज की भीड़ में शामिल होने की बजाय किसी तरह की लीडरशिप लेना बेहतर है।

–यानी वह छात्र नेता बने ? इसका मतलब तो यह हुआ कि वह शहर में ट्राम-बसें जलाता फिरे ! दुनिया भर की खुराफातें करता फिरे; सिर्फ पढ़ाई-लिखाई से छुट्टी ले ले, 'क्यों ?' खैर, जो भी हो, उसे इतनी-इतनी रात गये घर लौटना मुझे कतई पसंद नहीं है। जब मैं उसकी उम्र का था, तो शाम को सात बजे के बाद घर से बाहर रहने की बात सोच भी नहीं सकता था।

–आपके और आज के वक्त में काफी फर्क आ चुका है।

–अच्छा ? काफी फर्क आ चुका है ? खैर, अब तुम बड़े हो चुके हो, इस घर के प्रति तुम्हारी भी कोई जिम्मेदारी है। इधर सुतपा ने क्या चक्कर शुरू किया है, कुछ खबर है ?

वह दोनों हमउम्र भाई-बहन हैं। लेकिन सुतपा ने उसे कभी बड़े भाई का सम्मान नहीं दिया। छुटपन में दोनों जितने गहरे दोस्त थे, बात-बात में उतनी ही मारपीट की है। सुतपा काफी सरल लेकिन जिद्दी किस्म की लड़की थी। जिस दिन उसने फ्रॉक छोड़कर साड़ी पहनी थी, दुनिया उसे विमुग्ध निगाहों से देखती रह गयी थी। ताजा गोभी जैसी, उसके उजले, कोमल चेहरे पर हर वक्त खुशी चमकती रहती थी। वह कभी धीर-गम्भीर होकर कोई काम नहीं कर सकती। इस कमरे से उस कमरे तक भी जायेगी तो दौड़कर जायेगी। किसी तरह की ग्लानि या संकोच उसके स्वभाव में ही नहीं है। लेकिन जब से उसने नौकरी की है, वह अजीब तरीके से बदल गयी है। अब वह घर में किसी से भी अधिक बात नहीं करती है। हर रोज सुबह नौ बजे तक नहा-खाकर बाहर निकल जाती है और रात आठ-साढ़े आठ बजे तक घर लौटती है। आजकल वह अपने बनाव-शृंगार की ओर भी जरूरत से ज्यादा सजग हो गयी है। उसे तैयार होने में ही कम-से-कम पैंतालीस मिनट लगते हैं। मां से भी अक्सर झगड़ा होने लगा है। इन दिनों वह सिद्धार्थ से भी अपने मन की कोई बात नहीं कहती।

इसी सुतपा को जब नौकरी करनी पड़ी थी तो रो-रोकर बेहाल हो गयी थी। उसका नौकरी करने का बिल्कुल मन नहीं था। लेकिन बित्ते भर की लड़की और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकदम से साढ़े तीन सौ रुपये की नौकरी। उन दिनों सुतपा बी०ए० में पढ़ रही थी। कालेज छोड़कर नौकरी करने का उसका कतई इरादा नहीं था। लेकिन साढ़े तीन सौ रुपये की नौकरी का लोभनीय प्रस्ताव ! उस समय मां, छोटे कक्का सबने मिलकर उसे समझाया था। उन दिनों घर की आमदनी करीब-करीब नहीं के बराबर थी। बापू के इंश्योरेंश के रुपये भी लगभग खत्म हो चुके थे। जितने शेयर थे, डूब चुके थे। आमदनी के नाम पर सिर्फ रायल्टी के एक-सौ बीस रुपये। बस ! उस साल वह बी०एस-सी० फाइनल में था।

सुतपा को लेकर हमेशा कुछ-न-कुछ हंगामा खड़ा हो जाता है। कालेज के दिनों एक नौजवान प्रोफेसर सुतपा से ब्याह करने का प्रस्ताव कर बैठा। सुतपा भी राजी थी। लेकिन मां किसी शर्त पर भी राजी नहीं हुई। वह लड़का गैर-बिरादरी था। इसके अलावा कुछ बदनाम भी ! उन दिनों तक मां अपना सामन्ती ठसका भी भुला नहीं पायी थीं। अपनी ऐसी सुन्दर-सलोनी बिटिया को दो सौ पचास रुपल्ली कमानेवाले मामूली से मास्टर से ब्याहने को राजी नहीं हुई। उससे ब्याह नहीं होगा, यह जानते हुए भी सुतपा ने उस प्रोफेसर के साथ घूमना-फिरना बन्द नहीं किया। उनका मिलना-जुलना बन्द करने में उसे काफी परेशानी उठानी पड़ी थी। उसके बाद अपने ही मुहल्ले का बदमाश गुण्डा बादल ! स्मार्ट कपड़े पहनकर, फिटफाट बाबू बनकर, गली के मोड़ पर खड़े रहना ही उसका एकमात्र कार्यक्रम था। सुतपा को देखकर कभी-कभार अश्लील-सा रिमार्क कस देता था। कुछ दिनों बाद उसके नाम मुहब्बत भरे खत भेजने लगा और धीरे-धीरे वह इतना दुस्साहसी हो उठा कि सुतपा को लेने के लिए घर तक आने लगा। जब उसकी ज्यादतियां असहनीय हो उठीं, तो सिद्धार्थ और उसके दोस्तों ने उसकी अच्छी-खासी मरम्मत की थी। लेकिन क्या फायदा हुआ ? कुछ दिन बाद ही टूनू ने खबर दी, उसने बादल और सुतपा को एकसाथ टैक्सी में घूमते हुए देखा है। सुतपा से पूछा गया, तो वह साफ मुकर गयी। लेकिन इसके कुछ दिनों बाद ही सिद्धार्थ ने अपनी आंखों से उन दोस्तों को सियालदह से निकलते हुए देखा। उस दिन टूनू भी साथ था। सिद्धार्थ के सिर पर जैसे खून सवार हो गया। उसका मन हुआ कि वह बादल का खून कर दे। ऐसा लफंगा, बदमाश उसकी बहन से दोस्ती करने की हिमाकत कर रहा है। उस दिन उसका मन हुआ था कि वह सुतपा को भी सख्त से सख्त सजा दे डाले। लेकिन टूनू ने ही रोक दिया।

टूनू ने कहा, "भइया, तू क्यों इतना गर्म हो रहा है ? बादल लिखा-पढ़ा लड़का नहीं है, लेकिन हो सकता है, उसमें और कोई खासियत हो।

सिद्धार्थ ने घुड़क दिया, "तू चुप रह, टूनू ! आज मैं भी देख लूंगा कि वह कितना बड़ा मस्तान है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ को देखते ही बादल अपनी शर्ट का कॉलर ठीक करने लगा। उन दिनों वह हाथों में लोहे का मजबूत कड़ा पहनता था। सिद्धार्थ और टूनू को देखकर वह दांत निकालकर हंस पड़ा।

सुतपा ने हिचकते हुए सफाई देनी शुरू की, "आफिस से लौटते हुए बादल जी से मुलाकात हो गयी। हम लोग साथ ही लौटे। आजकल ट्राम-बसों में इतनी भीड़ रहती है कि चढ़ना मुश्किल हो जाता है...."

इसके कुछ ही दिनों बाद बादल को गुण्डागर्दी के इल्जाम में पुलिस गिरफ्तार करके ले गयी।.... छोटे कक्का ने ही पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करायी थी।

....सिद्धार्थ ने झल्लाहट-भरे स्वर में सवाल किया, "क्यों ? अब क्या किया सुतपा ने ?"

सुतपा खिड़की की तरफ देख रही थी। मां का सिर उसी तरह झुका हुआ था।

छोटे कक्का ने दुःखी आवाज में कहा, "आज सुबह अनन्त सान्याल की बीवी मुझसे मिलने आयी थीं। उन्होंने जो-जो कहा, अपने कानों को ही विश्वास नहीं हुआ। क्या हुआ है, इसी से ही पूछो-"

"एइ, तपू ? क्या बात है ?"

सुतपा ने उसकी तरफ घूमकर तीखी आवाज में कहा, "हुआ है-मेरा सर ? हुंहः, इज्जत-आबरू का इतना ही ख्याल था, तो मुझे नौकरी करने के लिए क्यों भेजा था ?"

"उफ ! तू पहले से ही इतना दिमाग क्यों गर्म कर रही है ? पहले बता तो सही कि हुआ क्या है ?"

"हमारे मैनेजर की बीवी साहिबा ने आकर छोटे कक्का से चुगली की है कि मैं उनके पति महोदय के साथ सरेआम घूमती-फिरती हूं और इसका सारा कसूर मेरे सिर है।"

छोटे कक्का ने कोमल आवाज में कहा, "उन्होंने सिर्फ इतना ही नहीं कहा, और भी बहुत कुछ बता गयी हैं।"

"हांऽ-हां, मैं गयी थी। आज उनके साथ उनके बेहालावाले गार्डेन में गयी थी। लेकिन हमारे साथ के और चार-पांच आफिसर भी थे। वह अपना गार्डेन दिखाने ले गये थे। अब इसमें भी तुम लोगों को दोष नजर आने लगा ?"

—लेकिन ऐसा तो सिर्फ आज ही नहीं....

—येस, मैं जाती हूं। आज ही नहीं, अक्सर जाती हूं। उनकी बीवी को अगर इतना ही बुरा लगता है, तो अपने शौहर को रोक लें न। हां, ठीक है, मैं गयी थी, वेश किया था।

मां ने भी मुलायम आवाज में उसे समझाने की कोशिश की, "तपू, देख, बेटा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी आवाज जरा धीमी कर ! आखिर तू क्या सचमुच यही चाहती है कि हम लोगों की इज्जत-आबरू, बिल्कुल डूब जाए ? तेरी बड़ी चाची तो हर वक्त कान खड़ा किये रहती है और ऐसे मौके के इन्तजार में है, जब हमारी बदनामी करके खुश हो सके।''

सिद्धार्थ जानता था, सुतपा ऐसी जिद्दी लड़की है कि गुस्से में किसी की परवाह नहीं करती है। इस वक्त वह किसी को भी हरगिज सफाई नहीं देगी और अपने सिर आए हुए सारे इल्जाम महज जिद्दवश स्वीकार कर लेगी। हर बात के जवाब में यही दोहराएगी....: "वेश किया ! अच्छा किया !....''

असल में बापू ने ही इतना लाड़-प्यार देकर, उसका दिमाग खराब कर दिया। इसके अलावा छोटे कक्का ने भी उसे कम सिर चढ़ाया है ?

सिद्धार्थ ने नरम लहजे में कहा, "तपू, तू जरा बैठ जा ! देख, तुझे कोई बुरा नहीं कह रहा है। तू यह बता कि यह बुड्ढा अनन्त सान्याल क्या तुझ पर किसी तरह का जोर-जुल्म करता है ? तू मुझे बता, मैं उसका नाक न तोड़ आऊं तो कहना। आजकल हर आफिस में यूनियन बन गयी है। नौकरी से बरखास्त करना आसान बात नहीं है। वह क्या तुझसे किसी तरह की जबरदस्ती करता है ?''

सतुपा ने तमककर अपनी लम्बी चोटी आगे कर ली और उसका किनारा अपनी उंगलियों से लपेटते हुए खामोश खड़ी रही। उसकी नाजुक-छरहरी देह उसी तरह तनी हुई थी। वह सिद्धार्थ के कहने पर भी नहीं बैठी। उसने उसी तरह जिद्दी आवाज में जवाब दिया, "जबरदस्ती क्यों करेंगे ? कह तो दिया मैं अपनी मर्जी से जाती हूं। मुझे उनके साथ जाना अच्छा लगता है और मैंने कहा न, तुझे तेजी दिखाने की जरूरत नहीं है।''

सिद्धार्थ नाराज नहीं हुआ। उसी तरह शान्त बना रहा।

मां सिद्धार्थ की तरफ एकटक देखती रही। शायद वह अपने बेटे की शान्त मुद्रा पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। सिद्धार्थ हंस दिया। वह अच्छी तरह समझ रहा था कि सुतपा की आंखों में आंसू आ रहे हैं और वह अपना होंठ कसकर दबाए हुए मन-ही-मन गुस्से से उबल रही है।

सिद्धार्थ ने अपेक्षाकृत शान्त लहजे में सवाल किया, 'तू कुछ बता तो सही। हम तो बस, यही चाहते हैं कि जितना कुछ सच है, तू अपनी जुबान से बता दे। बता, वह क्या तुझे जबरदस्ती ले जाता है ?'

'कह तो रही हूं वह जबर्दस्ती क्यों करेगा ? वह तो हर रोज अनुनय-विनय करता है। इतना रईस आदमी है। मुझे हर रोज सुनाता है, छुट्टी के बाद उसका घर जाने को मन नहीं करता। वह मेरे साथ घूमना चाहता है। इसके अलावा शाम को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गंगा किनारे ताजी हवा में घूमने-फिरने से मेरी सेहत भी ठीक रहती है। आफिस के बाद हम गाड़ी लेकर उधर ही निकल जाते हैं। कोई रोज-रोज मिन्नतें करता रहे, तो उसे मना किया जा सकता है ? और फिर अगर मैं उसके साथ चली भी गयी तो ऐसा कौन-सा गुनाह हो गया ?''

–तेरे दफ्तर में और भी तो लड़कियां हैं ? वह और किसी लड़की से चलने को कहता है ?''

–उनमें से किसी को भी अगर वह चलने को कहे, तो वह कूदकर साथ हो लें। लड़कियां तो मुंह बाए बैठी हैं।''

–वह और किसी से चलने को नहीं कहता, सिर्फ तुझे ही ले जाता है ? अच्छा, तुझे क्या खुद समझ नहीं आता कि वह तुझे निहायत बच्चा समझकर....''

–देख, अब मैं हरगिज बच्ची नहीं रही। मैंने कह तो दिया कि उसके साथ घूमते हुए आजकल मुझे बुरा नहीं लगता।''

"सच ? तुझे बुरा भी नहीं लगता ?''

"नहीं ! मुझे भला ही लगता है। उम्र से बुढ़ा जाने की वजह से ही क्या कोई बुरा आदमी हो जाता है ? आफिस की छुट्टी के बाद ट्राम-बसों की भीड़ में सफर करने में कितनी तकलीफ होती है, तू क्या समझेगा। तुझे तो नौकरी करनी नहीं पड़ती न ! ऐसी हालत में कोई भला आदमी मुझे गाड़ी में लिफ्ट देता है तो मैं क्यों मना करूं ? वैसे वह बातचीत में भी बहुत स्वीट है ! काफी अनुभवी भी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मुझे वह अच्छा लगने लगा है।

सिद्धार्थ ने अपने बेकार होने के इशारे को नजरअन्दाज कर दिया। अचानक उसी पल ख्याल आया कि उसे बहुत जोर की भूख लगी है। दोपहर के बाद से उसने कुछ नहीं खाया है। आदिनाथ ने उसे कबाब खाने की दावत दी थी, लेकिन....भूख के मारे अंतड़ियां जल रही थीं और अब वह जलन उसके दिमाग पर चढ़ गयी। अचानक वह गुस्से से फट पड़ा, "तपू ऽ....देख रहा हूं तेरे लम्बे-चौड़े हाथ-पैर निकल आए हैं। वह बूढ़ा, खूसट तुझे अच्छा लगता है ? आफिस में नौकरी करने लगी है, इसके माने यह तो नहीं कि सारी इज्जत-आबरू लुटा दे। धींग की तरह हो गयी, लेकिन घर का एक भी काम....आखिर, तूने समझ क्या रखा है ?''

मां जैसे इसी पल की प्रतीक्षा में थी। वह हड़बड़ाकर उठी और सिद्धार्थ की बांह पकड़कर खींचते हुए परेशान आवाज में कहा...."बीनू ! बीनू ! जरा, धीरे बोल ! बेटा, तू तो समझदार है न–''

सिद्धार्थ का गुस्सा शान्त नहीं हुआ। वह उसी तरह चीखता रहा, "बस, मैं कहे देता हूं, कल से उसे नौकरी पर जाने की जरूरत नहीं है। अब वह घर से बाहर एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कदम भी नहीं निकालेगी।''

सुतपा ने दर्द से ऐंठकर कहा, "हुंह, तेरे कहने से ही नौकरी करने की जरूरत नहीं है न ? ओवरटाइम मिलाकर पूरे पांच सौ पच्चीस रुपये मिलते हैं--पहले तू इतने रुपये कमा कर दिखा न।''

--देख तपू, जुबान सम्हालकर बात कर--

--क्यों ? मेरा तू क्या कर लेगा ? जब समय आया था तो तूने भी अपना कालेज नहीं छोड़ा, स्वार्थी की तरह मुझे ही नौकरी करने को भेज दिया था।

--मैंने तुझे नौकरी करने को कभी नहीं कहा था--

--फिर किसने कहा था ?

छोटे कक्का असहाय भाव से सिर झुकाए बैठे थे। उन्होंने करुण स्वर में कहा--"तुम लोग जरा मेरी एक बात सुनोगे ? एक छोटी-सी बात ?''--

सुतपा ने जलती हुई निगाहों से छोटे कक्का की तरफ देखकर कहा, "जी नहीं। मुझे आपकी कोई बात नहीं सुननी है ! मेरे जो मन में आएगा, करूंगी।''

छोटे कक्का ने सिद्धार्थ की तरफ देखा, "ऐ खान ! आजकल के जमाने में नौकरी तो बहुत-सी लड़कियां करती हैं। लेकिन आज करुणा देवी जो बात कह गयी है, वह काफी गम्भीर है। वह कह गयी है, सुतपा उसकी दुनिया उजाड़ने पर तुल गयी है। अनन्त सान्याल घर-गृहस्थी से बिल्कुल लापरवाह होते जा रहे हैं और सुतपा के पीछे बिल्कुल दीवाने हो गये हैं। ऐसी स्थिति में अगर तपू अपना भला-बुरा नहीं सोचेगी तो--''

--मैंने कहा तो, मैं अपना भला-बुरा अच्छी तरह समझ सकती हूं। मुझे किसी की सलाह की जरूरत नहीं है।

सिद्धार्थ ने छोटे कक्का से कहा, "अनन्त सान्याल तो आपके दोस्त हैं। आप खुद ही जाकर उन्हें क्यों नहीं समझाते ?

--मैं जाकर उनसे क्या कहूंगा ? अगर हम अपने ही घर की लड़की को नहीं सम्हाल पाते तो....वैसे, अनन्त बुरा आदमी नहीं था। लेकिन जब लड़कियां खुद ही....

सिद्धार्थ का मन हुआ वह कक्का को जवाब दे कि अनन्त कितना शरीफ आदमी है, यह उसे अच्छी तरह मालूम है। पहली मुलाकात में ही जब उस आदमी ने तपू को नौकरी देने का प्रस्ताव रखा था तब उन्हें कहीं कुछ अस्वाभाविक नहीं लगा था ? विलायती कम्पनी हो या और....। किसी ने कभी सुना है कि सिर्फ हायर सेकेण्डरी पास, अठारह वर्ष की एक अनाड़ी लड़की को एकदम से साढ़े तीन सौ रुपये की नौकरी दे दी जाए ? लेकिन सिद्धार्थ ने यह सब कुछ नहीं कहा। यह जानता है, मां को उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बातों से चोट पहुंचेगी। उस समय तो शायद मां भी यह बात नहीं समझ सकी थीं।

सिद्धार्थ ने मां की तरफ मुड़कर कहा, "मां, मैं तुमसे कितनी बार कह चुका हूं कि अपना हिस्सा बेंच दो। बड़के कक्का नौ हजार रुपये देने को राजी है ! न हो हम लोग कोई फ्लैट किराए पर ले लेंगे। कुछ महीनों में मैं अपने लिए किसी-न-किसी नौकरी का इन्तजाम जरूर कर लूंगा, फिर तपू को नौकरी पर जाने की कोई जरूरत नहीं होगी।"

मां ने झल्लाकर कहा, "तू तो सिर्फ यही एक राग अलापता है–घर बेच दो–घर बेच दो। नहीं, मैं यह घर कभी नहीं छोड़ूंगी। मैं मर जाऊंगी लेकिन किराए के मकान में रहने नहीं जाऊंगी।"

"तुम भी क्या बात करती हो, मां ! अब तो सैकड़ों शरीफ लोग किराए के मकान में रहने लगे हैं। तुम क्यों नहीं रह सकोगी ?"

मां ने मुंह फेर लिया और बेहद शान्त भाव से अपना फैसला सुनाया, 'देख, मैं अब बहुत दिनों नहीं जीऊंगी। मेरे मर जाने पर तुम लोग किराए के मकान में चले जाना। अपने जीते-जी मैं इस घर से बाहर कदम नहीं रखूंगी।" मां का चेहरा जर्द पड़ गया और होंठ बुदबुदाते रहे। अचानक उनका सारा चेहरा कांपने लगा और आंखें भर आयीं। उन्होंने आर्द्र स्वर में कहा, हम लोग इस बित्ते-भर की छोकरी को नहीं सम्हाल पाएंगे ? उसके लिए अपना घर-द्वार बेचना होगा ? वह किसी का कहना क्यों नहीं मानेगी ? क्यों ? क्यों ? आखिर क्यों ?"

छोटे कक्का और सिद्धार्थ की आंखें सुतपा की तरफ घूम गयीं। सुतपा की तीखी निगाहों में उपेक्षा का भाव था।

सिद्धार्थ ने उसे उंगली के इशारे से बरजते हुए, सख्त आवाज में कहा, "कान खोलकर सुन ले, तपू, आज के बाद अगर कभी मैंने सुना कि तू किसी आदमी के साथ घूमती है तो...."

इस बार सुतपा के धीरज का बांध टूट गया। उसकी तनी हुई कठोर भाव-मुद्रा कहीं से पिघले, इसके पहले ही, सुतपा बिस्तर पर लोट गयी और हाथ-पैर पटकने लगी। अचानक वह पागलों की तरह तकिए में मुंह रगड़ते हुए रो पड़ी, "मुझे तुम लोग मार डालो ! मार डालो !! मुझसे अब नहीं सहा जाता। गली-चौराहा, आफिस–हर जगह लोग मेरी हंसी उड़ाएंगे। इस घर में सब मिलकर सिर्फ मुझे ही जलाते हैं। मैं सच कहती हूं, मुझसे अब नहीं होगा। तुम लोग मुझे जान से ही क्यों नहीं मार डालते ? हर बात में मेरा ही कसूर है न ! मुझे अब्भी....इसी दम मार डालो। मुझे मारकर ही तुम लोगों को चैन मिलेगा। मैं...."

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ जानता है, अब कम-से-कम आधा घण्टा तक यह कार्यक्रम चलता रहेगा। सुतपा के क्रोध की तरह ही उसका रोना भी भयंकर है। वह जैसे गुस्से में किसी की परवाह नहीं करती है, रोते हुए भी उसे अपना होश नहीं रहता। जब समय मां अगर धर-पकड़ न करें तो वह खून-खराबा कर डाले। आज रात तो उसे खाना खिलाना भी असम्भव है।

छोटे कक्का ने प्यार से उसकी पीठ सहलाते हुए कुछ कहने को मुंह खोला ही था कि सुतपा ने झटका देकर, उनका हाथ हटा दिया।

सिद्धार्थ को छोटे कक्का पर गुस्सा और प्यार एक साथ उमड़ आया। छोटे कक्का ही उनकी गृहस्थी सम्हाले हुए हैं।

यू मुहल्लेवाले उनका काफी सम्मान करते हैं। उनका लोक-कल्याण का चक्कर भी महज ढोंगबाजी नहीं है। नाइट-स्कूल खोलने के मामले में वह सचमुच जी-जान से जुटे हुए हैं। अभी तक ऐसी कोई घटना नहीं हुई, जो उन्हें मतलबी साबित करे। लेकिन....यही छोटे कक्का कभी सुतपा को जरूरत से ज्यादा लाड़-दुलार करते थे। दिन-रात उसे मां-मणि–बिटिया रानी कह-कहकर सिर पर चढ़ा लिया। तपू जब छोटी थी, और छोटे कक्का के हाथों में पैसा था, तो हर रोज उसके लिए कोई न कोई चीज जरूर लाते थे। घर में घुसते ही वह आवाज लगाते, "मां-मणि, मेरी बिटिया रानी ! तू कहां है ?" तपू दौड़ती हुई आकर उनसे लिपट जाती थी, "क्या लाए हो ? आज मेरे लिए क्या लाए हो। लाओ, दो।" छोटे कक्का उसे गोद में उठाए-उठाए घर-भर में घूम आते थे। जब वह बड़ी हो गयी तब भी उनके लाड़-प्यार में कोई कमी नहीं आयी। इस बीहड़-चंचल तपू को जाने कितनी बार हंसी-हंसी में अपने सीने से लगाया है। अभी तो उसी दिन उन्होंने साड़ी में लिपटी हुई तपू को अपने सीने से लगा लिया था। अनजाने में शायद उन्होंने ही तपू के मन में सोये हुए किसी नाजुक तार को छूकर जगा दिया। इन दिनों उसमें हर वक्त प्यार पाने की अजब-सी भूख जाग उठी है। बहुत दिनों पहले वह नियमित रूप से तपू को लेकर घूमने निकलते थे। कई बार उसे अपने दोस्त अनन्त सान्याल के घर भी ले गये हैं। तपू छोटे कक्का से जरा भी नहीं दबती। इन दिनों उन्हीं की उम्र के एक पराए मर्द के साथ घूमने-फिरने लगी है और ढीठ बनकर कहती है–उस आदमी के साथ घूमना-फिरना अच्छा लगता है। हुंह ! इसके लिए क्या सिर्फ वही दोषी है ? छोटे कक्का को भी क्या अपनी गलती का अहसास नहीं हो रहा है ? क्या इसी अपराध-बोध की वजह से उनका चेहरा इतना बुझा हुआ लग रहा है ?

सिद्धार्थ अपने कमरे में आया ही था कि सुव्रत अन्दर दाखिल हुआ। अचानक सिद्धार्थ अपनी उम्र से अधिक गम्भीर हो आया, "टूनू, यह तेरा घर लौटने का वक्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है ?''

सुब्रत के समूचे चेहरे पर वर्षा की पहली फुहार में लहलहाती हुई ताजी घास की तरह मुलायम दाढ़ी उग आयी है। काफी दिनों से उसने बाल भी नहीं कटवाए। सुर्ख लाल-काले रंग का चेकवाला कुर्ता, संकरी मोहरीवाली काले रंग की पेंट। कमर में बेल्ट और पांवों में चप्पल। उसके हाथों में कागजों का मोटा-सा पुलिन्दा था। उसने सिद्धार्थ के प्रश्न की उपेक्षा करते हुए दूसरी बात छेड़ दी, "जानता है दद्दा, वह दलाल पार्टी आज गुण्डे लेकर आयी थी। आज तो जमकर मुकाबला होता, लेकिन....''

सिद्धार्थ ने पूछा, "तो आज फिर तू मार-पीट करने गया था ? अभी पिछले साल इसी दंगे में तेरा हाथ टूटा था न....?''

सुव्रत ने अपने चेहरे पर लापरवाही का भाव लाते हुए कहा, "अरे, मैं तो अपने हाथ टूटने का तीन-डबल बदला ले लेता ! आज तो हम सब बिल्कुल तैयार बैठे थे....लेकिन उस गुण्डापार्टी का एक आदमी हमारे दीपंकर का दोस्त निकला, सो उनसे सीधे-सीधे आंखें मिलाने में संकोच हो रहा था। हम लोगों ने भी उस बांग....माने... .उसकी बातों ही बातों में समझा दिया कि बेटा, फूट लो यहां से....इस वक्त हम लोगों के पास एक दर्जन पेटो रेडी माल है।

—यह पेटो क्या चीज है ?

—अरे, तूने पेटो का नाम नहीं सुना ?

सुब्रत ने क्रिकेट के खिलाड़ी की तरह बाउलिंग की मुद्रा में हाथ घुमाते हुए कहा, "दुम-घड़ाम ! समझा, दद्दा, पेटो हथगोले का पेट नाम है। हैरत है, तूने पहले कभी यह नाम नहीं सुना।''

सिद्धार्थ छोटे भाई के उपेक्षापूर्ण लहजे से आहत हो उठा। कहा, 'जाऽ—जा, तू उनको हैण्ड-बम कहता है ? अरे, वह तो मामूली-सा पटाखा है ! बस, एक आवाज-भर होती है और फुर्र ! ऐसे पटाखे तो मैं बहुत बना चुका हूं—''

सुव्रत ने उसके कानों में फुसफुसाकर कहा, 'एई, दादा, कल तुझे दस का एक नोट देना ही होगा।''

"मेरे पास दस रुपये कहां से आएंगे ?''

"क्यों ? तू अपनी घड़ी बेच दे न ! एक पार्टी बिल्कुल तैयार है—अच्छा दाम भी मिल जाएगा ! मैं कहता हूं, घड़ी रखकर क्या करेगा ?''

"हुंह, तेरे लिए मैं घड़ी बेचूंगा। चल, भाग !''

"कोई बात नहीं। नहीं देना चाहता, तो मत दे। मैं दिदिया को कैश करूंगा।''

अचानक उसकी निगाह मां के कमरे की तरफ़ गयी। सुतपा उसी तरह हाथ-पैर पटकती हुई रो रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी तरफ देखते हुए उसने उपेक्षा-भरी हंसी हंसकर कहा, "आज फिर रोना-धोना ? कमाल है ! ये लड़कियां जब जी में आता है, बेवजह ही रोने-बिलखने का चरित्र शुरू कर देती हैं। हर वक्त यही ड्रामा चलता रहता है–हुंह ! मां–खाना दो ! बहुत जोर की भूख लगी है। फटाफट खाना लगा दो–"

उसने कमरे में घुसते ही चप्पल उतारकर जाने किस कोने में फेंका, किताब-कागजों का बंडल मेज पर पटक दिया और अपनी कमर की बेल्ट खोलकर उसे चाबुक की तरह हवा में घुमाने लगा–शट् ! शट् !! शपांग !!!

3

मैं आपको पहचान नहीं पाया....।

–मैं सुतपा का बड़ा भाई हूं।

अनन्त सान्याल ने अपना चश्मा ठीक किया और उसकी तरफ स्थिर निगाहों से देखा। उनकी आंखों में विस्मय झलक आया। कहा, "हां–हां, चेहरा भी मिलता है। लगता है तुम्हें पहले भी कहीं देखा है। तुम मेरे इस मकान में एक बार पहले भी आ चुके हो न ?"

–नहीं, इससे पहले मैं यहां कभी नहीं आया !

–हूं ?....तो बात क्या है ? सुतपा ने कुछ कहलाया है ?

सिद्धार्थ के मन में हिचकिचाहट होने लगी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अपनी बात कैसे शुरू करे। थोड़ी देर पहले तक उसके सीने में मरने-मारने जैसी भयंकर जिद भड़क उठी थी, अब उसकी जगह एक अनपेक्षित हीन-भाव और आतंक से त्रस्त हो उठा। मेज के नीचे उसकी दोनों टांगें कांपने लगीं। अपनी कमजोरी का अहसास होते ही उसे सबसे अधिक अपने पर ही गुस्सा आने लगा।

....सुबह से ही एक निरर्थक दुःख का अहसास उसे मथे जा रहा था। उस वक्त घर रहना भी अच्छा नहीं लगा, यार-दोस्तों से मिलने की भी तबीयत नहीं हो रही थी। वह गली की नुक्कड़ वाली चाय की दुकान पर आकर बैठ गया। रविवार की सुबह ! चाय की दुकान पर यूं भी खासी भीड़ थी, लेकिन वहां किसी से भी दोस्ती नहीं है। मुहल्ले के साथ वह स्कूल में था, वह सब भी अब काफी बदल गये थे।

....उसकी टेबल से कुछ ही दूर पर रतन बैठा था। यह रतन जब स्कूल में था तो कितना शर्माता था। क्लास में हमेशा चुप रहता था और अपनी कापी पर जाने कैसी उल्टी-सीधी तस्वीरें बनाया करता था। उसके हाथ में हुनर भी था। वह आदमी के चेहरे की हूबहू नकल कर सकता था। सिद्धार्थ रतन को खूब सताता था, लेकिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन-ही-मन उस शान्त-विनम्र लड़के को प्यार भी करता था। वही रतन बड़ा होकर बिल्कुल बदल गया है। बहुबाजार में उसके बापू की जेवरों की दुकान है। रतन वहां कैश-काउण्टर पर बैठने लगा है। धोती के ऊपर बुशर्ट पहनता है और बेहद भद्दे ढंग से धोती की चुन्नट जेब में खोंसे रहता है। उसके गले की आवाज भी कर्कश हो गयी है। वह उंगलियों में चाबी का रिंग घुमाते हुए धाराप्रवाह रूप से बकबक किए जाता है। बीच-बीच में वह अपनी सीट से उठकर दुकान के सदर दरवाजे तक जाता था और विचित्र ढंग से आवाज करता हुआ अपने दांतों की फांक से पच्च से थूकता है और लौट आता है। आज उसकी जेब में शायद बहुत से खुदरा पैसे पड़े थे, जो आते-जाते घुंघरू की तरह झन्न-झन्न बज उठते थे।

सिद्धार्थ ने रतन की तरफ हिकारत से देखा। रतन उसे देखते ही लपककर उसके पास चला गया और थोड़ा झुककर उसके कानों में फुसफुसाते हुए कहा, "क्यों बे, क्या बढ़िया माल जुटाया है अपने लिए। कल रास्ते से गुजरते अचानक निगाह पड़ गयी ! हूं ?....मुझसे चाहे कितना छिपा, मेरी निगाहें स--ब देख लेती हैं, बउआ।"

सिद्धार्थ को पूरी बात सुनाई नहीं दी। उसने भौंहें चढ़ाकर पूछा, "क्या कहा ?"

–उस छोकरी का नाम केया सरकार है न ? अभी नयी-नयी आयी है। मानिकतल्ला के मोड़ पर रहती है। कुछ दिन अपने सुधीर ने भी उसके पीछे काफी चक्कर लगाया, लेकिन लिफ्ट ही नहीं मिली। उसका बाप काफी सख्त और जब्बर है। तूने उसे कैसे पटा लिया ?

सिद्धार्थ को जैसे अपने पर ही हैरत हुई कि रतन की इस फूहड़ बातों के जवाब में उसकी नाक पर घूंसा जमाने की तबीयत क्यों नहीं हुई ! सभी जानते हैं, वह काफी गुस्सैल स्वभाव का है। हो सकता है....सुबह से घुमड़ते हुए निरर्थक दुःख का अहसास ही उसे इतना जड़ कर गया है। उसने रतन की तरफ उपेक्षा भरी निगाहों से देखा और मक्खी उड़ाने की मुद्रा में हाथ हिलाकर कहा, "जा-जा फूट ! अपनी टेबल पर जा !"

रतन भी उसका पीछा छोड़ने वाला नहीं था। उसके कन्धे पर हाथ रखकर दबी-दबी-सी मुस्कान बिखेरते हुए कहा, "चलाए जाओ, गुरू ! चलाए जाओ ! हां, अगर कभी किसी मदद-वदद की जरूरत हो तो अपने इस यार को याद कर लेना।"

सिद्धार्थ ने रतन का हाथ कसकर उमेठ दिया। एक झटके में उसकी सारी उंगलियां तोड़ डालने की तीखी चाह पल भर को उसके भीतर भभक कर अचानक बुझ गयी। उसकी भाव-मुद्रा बदल गयी। उसने रतन की तरफ पलट कर देखा, "एऽ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रतन, पांच रुपये उधार दे दे।''

रतन ने अपना हाथ छुड़ाकर कहा, "आज फिर पांच रुपये मांग रहा है ? अभी पिछले महीने ही तूने मुझसे डेढ़ रुपये लिए थे, अभी तक नहीं लौटाया। इस बार एकदम से पांच रुपये ? साले, मैं तेरा बोऽ–लगता हूं ?''

–नहीं, भाई, तू मेरी मदद करना चाहता था न ?''

–रुपये देकर क्या होगा ? यह सब तो रुपयों का चक्कर नहीं है।

सिद्धार्थ ने रतन का हाथ दुबारा धर दबाया और दृढ़ आवाज में कहा, 'दे। देता है या नहीं ? चल, रुपये निकाल ! मैं और कोई बात नहीं सुनना चाहता।''

सिद्धार्थ के चेहरे पर शरारती हंसी झलक उठी। उसने रतन का हाथ कसकर उमेठ दिया। रतन का चेहरा दर्द से विकृत हो आया। वह चीखने ही वाला था। उसने कराहते हुए कहा, "पांच रुपये नहीं हैं ! कसम से नहीं हैं।''

–तो जितने हैं निकाल।

अपनी जेब से धोती का चुन्नट हटाकर उसने आधी मुट्ठी रेजगारी निकाली। उसे मेज पर बिखेरते हुए कहा, "ले, अब तो हाथ छोड़। तुझसे बात करने का मतलब है कुछ-न-कुछ गच्चा लगेगा ही !''

–अगर तुझे यह बात मालूम है तो–

चाय की दुकान पर और भी एक-दो परिचितों से मुलाकात हो गयी। उसके मन की सारी जड़ता हवा हो गयी और उसने अगले काम में मन लगाया। चाय की चुस्किया लेते हुए उसे अजब-सी बेचैनी ने घेर लिया। मानो वह किसी जरूरी काम से निकला था, लेकिन इस वक्त उसे याद नहीं आ रहा है। सिद्धार्थ ने अनुभव किया वह अभी....इसी वक्त कुछ कर गुजरना चाहता है। लेकिन क्या करे, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा है। वैसे वह यह भी जानता है कि इस वक्त अगर कोई उसे कुछ करने को कहे भी, तो वह फौरन मना कर देगा। उस दिन भी यही हुआ था....।

उसी समय अचानक नरेश दत्त दुकान में दाखिल हुए। उन्होंने सिद्धार्थ की बगलवाली कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, "बीनू, एक प्याली चाय और हो जाए ? देख रहा हूं तुम्हारे हाथ में बहुत-सा चेंज है। चलो, आज चाय तुम्हारी तरफ से, सही।''

सिद्धार्थ ने सहर्ष चाय का आर्डर दे डाला। उसे लगा रतन से पैसा लेना सार्थक हो गया। नरेश दादा सिद्धार्थ से दस-बारह साल बड़े हैं। उनकी आवाज भी बेहद मधुर है। आजकल ऐसे आदमी बहुत कम दिखाई पड़ते हैं, जिनकी आवाज उसे अच्छी लगती हो। नरेश दा जब बोलते हैं, तो शान्त लहजे में एक-एक शब्द निहायत साफ-साफ और स्पष्ट भाव से व्यक्त करते हैं। गर्मागर्म बहस के पलों में भी उसने नरेश दा को कभी तेज आवाज में बोलते नहीं सुना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नरेश दा ने उसकी तरफ सिगरेट का पैकेट बढ़ाते हुए कहा, "लो, पियो !"

यूं सिद्धार्थ अपने मुहल्ले के अहाते में सिगरेट नहीं पीता है। बस, कभी-कभार यार-दोस्तों की संगति में दो-एक कश ले लेता है। उम्र में बड़ा होते हुए भी जब नरेश दा ने उसे बेहिचक सिगरेट आफर किया, तो वह मानो कृतज्ञ हो आया। उसने सिगरेट जला ली।

नरेश दा ने पूछा, "और क्या हाल-चाल है ? क्या कर रहे हो आज कल ?"

सिद्धार्थ ने झेंपते हुए कहा, "जी कुछ नहीं !"

"क्यों ? नौकरी-वौकरी अभी तक नहीं मिली ?"

–कोशिश तो कर रहा हूं, लेकिन मिल ही नहीं रही !

–भई, तुम बी०एस-सी० पास कर चुके न ? और तुम्हारी तो सेहत भी अच्छी-खासी है। मेरी तो सलाह है, किसी कारखाने-वारखाने में घुस जाओ। नौकरी चाहे जितनी भी छोटी क्यों न हो। मेहनतकश मजदूर होने मे कोई नुकसान नहीं ! मैं तो कहता हूं, यही नौकरी बेहतर है। बिल्कुल शुरू से सारा काम सीख सकोगे। इसके अलावा सैकड़ों मजदूरों से मिलने-जुलने और प्रेम बढ़ाने का भी मौका मिलेगा–यह भी एक बहुत बड़ा काम है।

सिद्धार्थ ने उनकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया। वह उसी तरह चुप रहा।

अचानक नरेश दा ने हंसते हुए कहा, "मेरी बात अच्छी नहीं लग रही है न ? तुम सोचते होगे, मैं मुफ्त में लेक्चर झाड़ रहा हूं। खैर, छोड़ो यह बात। यह बताओ चेहरा इतना बुझा-बुझा-सा क्यों है ? तुम्हें क्या हुआ है ?"

–नहीं, कुछ नहीं हुआ है।

–भई, तुम्हारी ही उम्र के लड़कों से मेरा अधिक मेल-मिलाप है। अतः तुम लोगों के चेहरों से ही मन की बात जान लेता हूं। इस वक्त तुम निश्चित रूप से किसी समस्या में उलझे हुए हो और बुरी तरह परेशान हो।

–पता नहीं नरेश दा ! मैं क्या सोच रहा हूं, मुझे खुद नहीं मालूम, अभी तो मैं यूं ही बैठा हुआ था।

–तुम्हारी उम्र वाले लोगों का यह भी एक ड्रा-बैक है। तुम लोग अपने दुःख की कोई वजह नहीं समझ पाते। कभी-कभी तो तुम्हारे दुःख की सचमुच कोई वजह भी नहीं होती फिर भी एक मनगढ़न्त दुःख में अपने को परेशान करना और बेकार समय गुजारना अच्छा लगता है। इसीलिए कहता हूं कि किसी काम में उलझे रहने से–

–हर वक्त काम भी कहां मिलता है, नरेश दा ?

–बहुत सारे काम हैं। न हो, तुम हमारी पार्टी में ही शामिल हो जाओ। जितने दिनों तक तुम्हें कोई नौकरी नहीं मिलती, तुम हमारे साथ ही रहकर कुछ काम-धाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करो। तुम जैसे लड़के हमारी पार्टी को बहुत मदद कर सकते हैं।

—इन सब में मन नहीं लगता, नरेश दा। घर पर भी इतने सारे झंझट हैं।

—कैसे झंझट ?

सिद्धार्थ मन-ही-मन नरेश दा के प्रति श्रद्धा से भर उठा। कैसे झंझट ? यह सवाल करते हुए उन्होंने सिद्धार्थ की तरफ ऐसी संवेदना से देखा कि वह अचानक भावुक हो आया। वह नरेश दा को अपने पारिवारिक संकट की बात बताता रहा। उनके सामने उसने सारी बातें खोलकर रख दीं, कहीं कुछ भी नहीं छुपाया। पिछली रात सुतपा को लेकर घर में जो मीटिंग बैठी थी, वह भी बता दिया। उसके मन में छोटे कक्का के प्रति जितना आक्रोश पल रहा था, यद्यपि उसे पूरी तरह व्यक्त नहीं किया, लेकिन पैत्रिक मकान के सम्बन्ध में मां की इस बेवजह की भावुकता का जिक्र करते हुए वह तीखा हो उठा।

उसकी बातें सुनकर नरेश दा ने उदास हंसी बिखेरते हुए कहा, सच ही तुम बड़ी परेशानी में हो। अच्छा, तुम इक्कीस साल के हो चुके न ? यानी तुम अब बुजुर्गों की दुनिया में कदम रख रहे हो। सचमुच बुजुर्गों की ये दुनिया बेहद बदसूरत है। यहां हम न चाहते हुए भी बहुत सारी गन्दगी से जुड़ जाने को विवश हैं। लगता है, हम सब, जब छोटे थे, स्कूल में पढ़ते थे, तब बेहद हल्का-फुल्का जीवन था। काश, हमारी सारी जिन्दगी ऐसे ही बीत जाती।

सिद्धार्थ ने अपने भीतर अजब-सी उत्तेजना महसूस की, "नरेश दा, मैं एक और सिगरेट पिऊंगा।"

नरेश दा ने कहा, "बीनू तुम मेरे घर की हालत सुनोगे ?"

सिद्धार्थ ने उनकी तरफ उत्सुक निगाहों से देखा। वह उनके घर-परिवार के बारे में विशेष कुछ नहीं जानता था। नरेश दा उसके मौसेरे भाई रूनू दा के दोस्त थे। पार्टीशन होने के पहले, नरेश दा जब रूनू दा से मिलने घर पर आया करते थे, वहीं सिद्धार्थ से भी जान-पहचान हुई थी।

नरेश दा ने कहा, "अच्छा, छोड़ो यार ! अब उन बातों से कोई फायदा नहीं है। घर में होने वाली तमाम घटनाएं, वहां से रहने वाले लोग बिल्कुल अलग और अनोखे हैं। लेकिन जानते हो, सबकी समस्या घुमा फिराकर एक ही है। खैर, ऐसी हालत में तुमने क्या करने का फैसला किया ?"

"अभी तो कोई फैसला नहीं कर पाया, नरेश दा !"

"सुनो, मैं कहता हूं, तुम अकेले कुछ भी नहीं कर सकते। हम सबकी समस्याएं एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। दरअसल इस गन्दी और सड़ी हुई समाज-व्यवस्था को बदल कर, एक वर्गहीन समाज की स्थापना करनी होगी। और इसे बदलने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिवोल्यूशन यानी विप्लव ही एकमात्र राह है। हम सबको मिलकर क्रांति की अलग राह गढ़नी होगी। इसीलिए मैंने तुमसे अपनी पार्टी में शामिल होने को कहा था, ताकि तुम पार्टी के लिए कुछ काम करो। कम-से-कम अपने जिन्दा रहने की सार्थकता तो महसूस कर पाओगे। इस तरह मनहूस बनकर बैठे रहने के बजाय--''

सिद्धार्थ ने विस्मित आंखों से नरेश दा की तरफ देखा। नरेश दा क्या उसे बिल्कुल बच्चा समझते हैं ? यह सब बातें क्या उसे नहीं मालूम हैं ? सिर्फ दो साल पहले वह भी कालेज में पढ़ता था। उस बार यूनियन के चुनाव में अपनी पार्टी की जीत के लिए उसने भी जी-जान लड़ा कर मेहनत नहीं की थी ? लोगों के सामने उसने भी क्या यही सब बातें, कुछ अधिक बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कही थी ? उसे लगा नरेश दा यह बातें दुहराकर उसे अपमानित करना चाहते हैं। वह मन-ही-मन आहत हो उठा और अभिमान भरी निगाहों से उनकी तरफ देखता रहा।

सामने कोने वाली मेज पर दो-तीन अन्य लोग बैठे थे। वह लोग काफी देर से नरेश दा को बुला रहे थे। नरेश दा ने ठंडे लहजे में इशारा करते हुए सिद्धार्थ से कहा, "बुलाने दो। इस वक्त मेरा तुमसे बातें करना ज्यादा जरूरी है। तुम आज शाम को हमारी पार्टी के दफ्तर में मिलो न।''

सिद्धार्थ का अभिमान अचानक क्रोध में बदल गया। उसने रुक्ष आवाज में जवाब दिया, 'देखिए, मैं अपनी बहन की कमाई पर दोनों जून पेट भरता हूं। मेरी बहन की नजर में मेरी कोई इज्जत नहीं है। मेरी मां की आंखों में हर वक्त आंसू रहते हैं। मेरे काका घर वालों की कमाई पर जिन्दा है। फिर भी उन्हें लोक कल्याण से फुरसत नहीं है। ऐसे में मुझे उपदेश देने की कोशिश बेकार है।''

–तुम क्या सोचते हो कि नौकरी मिल जाने से ही सारी समस्या खत्म हो जाएगी ?

–कौन-सी समस्या, कैसे खत्म होगी, यह मैं नहीं जानता। लेकिन बेकार की मीटिंग करके और पोस्टर लिख-लिखकर समय गुजारने का धीरज मुझ में नहीं है।

–भाई, काम तो सैंकड़ों हैं ! तुम किसी भी काम की जिम्मेदारी अपने जिम्मे ले सकते हो। तुम्हें कम-से-कम यह सन्तोष तो जरूर होगा कि यह सिर्फ तुम्हारी ही नहीं, तुम्हें तरह के बहुत-से लोगों की समस्या है, जिसे दूर करने के लिए–

–नरेश दा, अब मैं चलूं–

नरेश दा पहले की तरह ही उदार भाव से हंस पड़े। कहा, "आज तुम्हारा दिमाग बहुत गरम हो रहा है। खैर, छोड़ो, अब तुमसे काम-वाम की बातें नहीं करूंगा। तुम यूं ही कभी-कभार मिल लिया करो।....ठीक है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ ने मेज पर पड़े हुए खुदरा पैसों को समेट लिया और कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

नरेश दा ने उसकी तरफ देखते हुए बिल्कुल बदले हुए लहजे में कहा, "सुतपा बहुत भली लड़की है। दरअसल उसकी कोई गलती नहीं, है ! तुम उस पर खामखाह ही जरूरत से ज्यादा नाराज हो रहे हो।"

सिद्धार्थ कोई जवाब दिए बगैर आगे बढ़ गया। वह मन-ही-मन सोचता रहा--जब, जिसे मौका मिलता है, वह फालतू लेक्चर झाड़ देता है। मैं कारखाने में भर्ती होकर कुली-मजूर बनूं और ये साहब चाय की दुकान पर बैठकर सिगरेट का कश खींचते-खींचते मुझे रिवोल्यूशन करना सिखाएंगे ! हुंह ! सारी दुनिया ही ऐसी है....

चाय की दुकान से निकलते हुए अचानक उसकी सारी कड़वाहट धुल गयी। उसे लगा नरेश दा ठीक ही कह रहे थे। किसी काम में लगना बेहद जरूरी है। इसी वजह से तो वह इतना बेचैन है। इस वक्त अगर कोई उसे किसी बड़ी-सी जगह में आग लगाकर, सब तहस-नहस कर आने को कहे, तो वह फौरन राजी हो जाएगा।

चाय की दुकान से बाहर आते हुए उसकी निगाह बादल पर पड़ी। इधर बहुत दिनों से बादल इस मुहल्ले में नहीं दिखाई पड़ा था। वह जेल से कब रिहा हो गया कौन जाने ! अब तो वह सूरत-शक्ल से भी गुण्डा लगने लगा है। होंठों के कोरों और गालों पर अजब-सा क्रूर भाव ! हर वक्त चौकन्नी आंखें ! सुतपा के मामले में इस बादल के बच्चे ने काफी परेशान किया था। अब वह नशा उतर चुका होगा। अब शायद किसी नए नशे का इन्तजाम कर लिया होगा। बादल ने भी एक बार सिद्धार्थ की तरफ तिरछी निगाहों से देखा, लेकिन उससे बात करने की कोशिश नहीं की। वह सीधे चाय की दुकान के अन्दर चला गया।

उस दिन बादल को देखकर सिद्धार्थ को गुस्सा नहीं आया। अनायास ही उसके प्रति ममता उमड़ आयी। जब उसे स्यालदह में सुतपा के साथ देखा था, उस दिन भी बादल ने भरसक कोशिश की थी कि वह चेहरे-मोहरे से अतिशय विनीत और शरीफ दिखे। उसने मानो यह साबित करना चाहा था कि उसमें सुतपा जैसी लड़की का दोस्त बनने की पूरी-पूरी योग्यता है। मुमकिन था कि सुतपा से अधिक हिल-मिल जाने पर किसी दिन वह सचमुच ही उसके काबिल बन जाता। लेकिन अब उस पर किसी तरह की जिम्मेदारी नहीं है। अब वह जितना चाहे, अपने चेहरे को रूक्ष बना सकता है। बादल का कुटिल चेहरा देखते हुए उसे सुतपा के बारे में चिन्ता हो आयी। सुतपा के बारे में सोचते हुए उसकी आंखों के आगे केया का चेहरा उभर आया--हंसी से हिलकता हुआ बदन ! तिरछी नजरों से देर तक देखते रहने की अदा ! केया को याद करते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए वह दुबारा सुतपा के पास लौट आया। अचानक उसके दिमाग में एक ख्याल कौंध गया। बादल के मन में सुतपा को लेकर अब भी कोई कमजोरी तो नहीं है ? अच्छा, बादल को उस अनन्त सान्याल के पीछे लगा दिया जाए तो कैसा हो ? बादल ठहरा गुण्डा आदमी ! उसे तो अपनी जान का भी कोई माया-मोह नहीं है, अगर एक बार भड़क गया तो उस बुड्ढे ढोल को उचित सबक सिखाकर ही दम लेगा।

सिद्धार्थ के दिमाग में ऐसे ही बहुत से ख्याल आते-जाते रहे। इस काम में बादल की मदद लेने के ख्याल से वह अपने पर ही नाराज हो उठा। अन्त में उसे बादल जैसे इन्सान की मदद लेनी होगी ? क्यों ? बादल क्या ऐसा-वैसा आदमी है ? वह गुण्डा है तो क्या हुआ ? ऐसे-ऐसे बहुत से गुण्डों की गुण्डागर्दी वह देख चुका है। बादल ने अगर फिर इस मुहल्ले में किसी तरह की लोफरबाजी की तो वह उसकी हड्डी-पसली धचका देगा। जैसे-जैसे उसका गुस्सा बढ़ रहा था, वह अपने भीतर जबर्दस्त ताकत महसूस कर रहा था। उसी पल उसने अपना अगला काम निश्चित कर लिया। वह अकेले ही अनन्त सान्याल से मुलाकात करेगा। वह उसे मुंह-दर-मुंह चैलेंज करेगा। साले, बुड्ढे ने अगर ज्यादा तिन्न-भिन्न की, तो वह अकेले ही दिखा देगा कि उन जैसे आदमियों की कैसे खबर ली जाती है। यह सब सोचते हुए, आक्रमण करनेवाले सिंह की तरह; उसके शरीर के रोम-रोम खड़े हो गए। वह अपने को हमले के लिए तैयार करने लगा। अचानक वह दांत पीसते हुए उठ खड़ा हुआ। उस की देह की नसें तन गयीं और सांस तेज हो उठी। उसका चेहरा दोपहर के तपते हुए सूरज की तरह लाल हो उठा। उसने फैसला किया कि वह दुनिया की तमाम समस्याएं अपनी शारीरिक ताकत के भरोसे हल कर देगा। उसे लगा उसकी कमर में तलवार लटक रही है और उसने बाएं हाथ से सरपट दौड़ते हुए घोड़े की लगाम पकड़ रखी है। नरेश दा ने कहा, 'तुम अकेले कुछ भी नहीं कर पाओगे।' हुंह, सिद्धार्थ दिखा देगा कि वह अकेले लड़ सकता है या नहीं।

अनन्त सान्याल के मकान के करीब पहुंचते ही उसने अपने को जरा संयत किया। वह जैसे अपने को ही समझाने लगा कि किसी तरह का हंगामा न करके, पहले पूरे मामले की अच्छी तरह तहकीकात करनी होगी। हो सकता है, सारी कहानी ही मनगढ़न्त हो। अनन्त सान्याल का मकान न्यू सी०आई० रोड पर है, एक दफा एयरपोर्ट जाते हुए सुतपा ने ही उनका मकान दिखाया था। मकान के सामने लोहे का मजबूत गेट—फिर छोटा-सा लॉन ! लॉन पार करते ही सिद्धार्थ ने कॉलिंग-बेल दबाया।

किसी नौकर ने दरवाजा खोला था। उसने उसे बाहर के कमरे में बिठाकर कहा, "आप बैठिए ! बाबू ऊपर हैं। खबर किए देता हूं। आप का शुभनाम ?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ ने अपना नाम बता दिया। उसके बाद इन्तजार करने लगा। उनको खबर भिजवाने के करीब आधा घण्टे बाद अनन्त सान्याल नीचे उतरे। इतनी देर तक कमरे में अकेले बैठे-बैठे सिद्धार्थ ऊबने लगा था। कमरे की बेजान सजावट। कोने में बड़ी-सी मेज। मेज के चारों तरफ कुछ कुर्सियां ! लम्बा-सा सोफा। सामने की दीवार पर एक जोड़ी बूढ़े-बूढ़ों की तस्वीर ! बगल में लकड़ी की अलमारी ! उस अलमारी में क्या है, दिखाई नहीं दे रहा था। अलमारी के ऊपर एक टेबल घड़ी पड़ी थी ! कुल मिलाकर यही वह युद्ध-क्षेत्र था, जहां उसे लड़ना था।

लेकिन....प्रतीक्षा करते-करते सिद्धार्थ थक गया। पहले वह कुर्सी पर बैठा था। बाद में उठकर सोफे पर ठेस लगाकर बैठ गया। बीच में एक बार वह उठकर दरवाजे तक भी आया था और अन्दर झांककर दुबारा आवाज दे या न दे, वह सोच ही रहा था कि नौकर दुबारा कमरे में आया और कह गया, "आप बैठिए,बाबू अभी आ रहे हैं।"

इसके बाद दस-पन्द्रह मिनट और बीत गए। समूचे मकान में गहरी निस्तब्धता थी। जाहिर था कि उस मकान में बच्चे नहीं थे। घड़ी की वही नीरस टिकटिक ! उसकी ओर देखते हुए वह और बोर हो गया।

अनन्त सान्याल पांवों में हिरण के चमड़े की चप्पल चटकाते हुए कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने देर से आने की कोई कैफियत नहीं दी। वह मेज की दूसरी तरफ स्प्रिंगवाली कुर्सी पर बैठ गए। इन दिनों सिद्धार्थ चेहरे-मोहरे से अपनी उम्र से अधिक मैच्योर लगने लगा है। गली-मुहल्ले के लोग उससे 'आप' कहकर बातें करते हैं। लेकिन अनन्त सान्याल ने सीधे-सीधे उससे 'तुम' कहकर बात शुरू की।

सिद्धार्थ उन्हें देखकर मन-ही-मन विस्मित हो उठा। उसे ऐसी शुरुआत की उम्मीद नहीं थी। उसने सोचा था, वहां किसी भयंकर कुचक्री और कुटिल चेहरेवाले बूढ़े से उनकी मुलाकात होगी। लेकिन अनन्त सान्याल प्रशान्त चेहरेवाले प्रौढ़ व्यक्ति थे ! पचास की उम्र पार करने के बावजूद उनका एक भी बाल सफेद नहीं हुआ था। बदन में झुर्रियां तक नहीं थीं। गोरी देह ! आंखों पर काली फ्रेमवाला चश्मा ! गहरी आवाज ! ऐसे रोबीले व्यक्ति को देखकर पहली ही नजर में गुस्सा असम्भव जान पड़ा। उसे गुस्से के बजाय अपने ही पर शर्म आने लगी। वह थोड़ा आतंकित भी हो उठा।

अनन्त सान्याल ने निःसंकोच लहजे में पूछा, "सुतपा ने तुम्हारे हाथ कोई सूचना भिजवाई है ? आज शाम को तो वह मुझ से मिल ही रही है।"

सिद्धार्थ ने कहा, "नहीं ? मुझे सुतपा ने नहीं भेजा ? मैं अपने ही किसी जरूरी काम से आया हूं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अपने काम से ? और मेरे पास ? क्यों, क्या बात है ?''

सिद्धार्थ गड़बड़ा गया ! वह क्या कहे, कैसे अपनी बात शुरू करे, कुछ भी समझ में नहीं आया। थोड़ी देर पहले तक उसने मन-ही-मन तय कर लिया था कि सुतपा के बड़े भाई और गार्जियन की हैसियत से वह किन लाइनों पर जिरह करेगा। लेकिन इतनी देर से खाली कमरे में प्रतीक्षा करते हुए सारी बातें गड़मड़ हो गयीं।

जो बात उसने सोची भी नहीं थी, हठात बिजली की तरह उसके मन में कौंध गयी। हां, यही सबसे बढ़िया उपाय है। उसे यही तरीका हर तरफ से युक्तिसंगत लगा। उसने चैन की सांस ली। उसकी टांगों की कंपकंपाहट भी थम गयी। उसने सिर उठाकर लेकिन झेंपते हुए कहा, "असल में मैं आपके पास नौकरी के लिए आया था। बी०एस-सी० पास करने के बाद....''

अनन्त सान्याल ने एक गहरी सांस लेकर कहा, "नौकरी ? मेरे पास तो इस वक्त कोई नौकरी नहीं है, भाई''

—आपने सुतपा को नौकरी दी है, तो....

—भई, अभी से तुम नौकरी क्यों करना चाहते हो ? तुम्हारी अभी उम्र ही कितनी है ? बी०एस-सी० पास कर लिया है, तो किसी टेकनिकल लाइन में एडमिशन ले लो। इन्जीनियरिंग पढ़ना शुरू कर दो—

—बी०एस-सी० में मेरा सब्जेक्ट वायलॉजिकल साइन्स था। मेरी डाक्टरी पढ़ने की इच्छा थी—

—तो फिर पढ़ते क्यों नहीं ?

—पढ़ाई का खर्च चलाने लायक हमारी स्थिति नहीं है। मेरे बापू भी नहीं रहे—

—हां, वह मैं जानता हूं। तुम्हारे छोटे कक्का कालेज में मेरे क्लास-फेलो रह चुके हैं।

—मैं कह रहा था, आप अपने आफिस में ही अगर कोई....

—देखो, मेरे पास कोई जगह खाली होती, तो तुम्हारे दुबारा कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती। हम लोगों की ही विलायती कम्पनी है। कलकत्ते में तो छोटी-सी ब्रांच भर है। वहां से साहब लोगों ने कड़ा आर्डर भेजा है, स्टाफ बढ़ाने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। बेहतर हो, कि स्टाफ में से और दो-चार लोगों की छंटनी कर दी जाए ! जानते हो, मैं मैनेजर हूं, लेकिन मेरे हाथ में कोई पावर नहीं है। उस पर से इस कलकत्ते शहर में स्ट्राइक-फिस्ट्राइक तो लगा ही रहता है। कोई खुश नहीं है। ऐसे में....

—मेरी मां ने भी आपके नाम संदेशा भेजा है—सुतपा ने पार्ट-टू तक परीक्षा दी थी, लेकिन बी०ए० पास नहीं कर पाई। इन दिनों सुतपा का भी नौकरी से जी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उखड़ गया है। उसका मन है कि वह दुबारा कालेज में एडमिशन ले ले। अगर आप उसकी जगह मुझे--

--अच्छा ! सुतपा ने खुद कहा है कि उसकी नौकरी करने का मन नहीं है ?

अनन्त सान्याल ने जोर का ठहाका लगाया। उन्होंने चश्मा उतारकर हाथ में रख लिया और उसी तरह हंसते हुए पूछा, "तुम अभी बच्चे हो ! भला जिसकी जगह है, उसकी जगह किसी और को नौकरी दी जा सकती है ? सुतपा ने शार्ट-हैण्ड और टाइपिंग सीख लिया है, काम-काज भी अच्छी तरह समझ चुकी है। मेरी पी॰ए॰ है–मेरे कॉनफिडेंशियल कागज-पत्रों की भी देख-भाल करती है। अब उसकी जगह और किसी को लेना नामुमकिन है। अच्छा, सुतपा ने क्या खुद कहा है कि उसका नौकरी में मन नहीं लगता है ?

–हां–

–बचपना है ! बीच-बीच में अक्सर हम सभी ऐसा महसूस करते हैं। हम लोगों को ही क्या रोज-रोज नौकरी की ड्यूटी बजानी अच्छी लगती है ? अच्छा, घर में तो किसी से झगड़ा नहीं हुआ ?

–नहीं, झगड़े की क्या बात है ? आजकल वह किसी की बात नहीं सुनती। मां कह रही थी कम उम्र में नौकरी करने की वजह से लड़कियां धृष्ट हो जाती हैं। अक्सर काफी देर-देर से घर लौटती है। अतः अब उनकी भी इच्छा नहीं है कि सुतपा नौकरी करे।

–सुतपा को मैं स्नेह करता हूं। अपने काम-काज में भी काफी मंज गयी है। उसे अब मैं छुट्टी नहीं दे सकता।

सिद्धार्थ को लगा अनन्त सान्याल ने उसके मुंह पर ही उसे चैलेंज दे डाला है। वह उनकी ओर विस्मित निगाहों से देखता रहा। उसके गले में कहीं कुछ अटक रहा था। इसके जवाब में वह क्या कहे, यह तय नहीं कर पाया। इससे पहले उसने अपने को कभी इतना असहाय और कमजोर महसूस नहीं किया था।

अनन्त सान्याल मुस्कराते हुए उसकी तरफ देखते रहे। सिद्धार्थ के कुछ कहने के पहले उन्होंने आश्वासन के लहजे में कहा, "सारे दिन आफिस की कड़ी मेहनत के बाद शाम को घर में कैद होना किसी को अच्छा लगता है ? अपनी मां से कहना, परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। वह कहीं और नहीं जाती–मेरे ही साथ रहती है। मैं ही उसे कभी-कभी अपने साथ घुमाने-फिराने ले जाता हूं।"

अनन्त सान्याल कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए। सिद्धार्थ खामोश आंखों से उनकी तरफ देखता रहा। मेज की दूसरी तरफ आते हुए अचानक उन्हें जैसे कुछ याद आ गया हो। कहा, "तुम क्या बाहर जाने को राजी हो ?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ जैसे कुछ समझ न पा रहा हो।

–तुम बाहर जाकर नौकरी करने को तैयार हो ?

वह सुतपा का सारा प्रसंग ही मानो भूल गया। उसने आगा-पीछा सोचे बिना ही जवाब दिया, "जी हां ! मैं कहीं भी जाने को...."

–वैसे बहुत दूर भी नहीं है। रानाघाट से तीन मील दूर–। मेरे एक दोस्त ने एक नया स्कूल खोला है–इसी साल ! उसके नाम मैं अगर एक चिट्ठी लिख दूं–

सिद्धार्थ ने मायूस आवाज में कहा, "स्कू-ली", उसने बुझी हुई हंसी बिखेरते हुए कहा, "नहीं मुझे स्कूल की नौकरी नहीं चाहिए।"

अनन्त सान्याल ने गार्जियन की तरह जरा गर्म स्वर में कहा, "क्यों स्कूल की नौकरी क्यों नहीं करोगे ? इसमें तुम्हें क्या ऐतराज है रहने के लिए बढ़िया जगह है ! खाना-पीना भी सस्ता है ! हफ्ते में एकाध दिन कलकत्ते भी आ सकोगे !"

–नहीं, स्कूल में मुझे नहीं जाना है।

–भई, मैं तुम्हें जिन्दगी भर स्कूल की नौकरी करने को नहीं कह रहा हूं। जितने दिन ठीक-ठिकाने की नौकरी नहीं मिलती, उतने दिनों, जो भी काम हाथ लगे, कर लेना बेहतर है।

–नहीं, स्कूल में अगर मैं एक बार घुस गया तो दूसरी जगह जाना मुश्किल है।

–क्यों ? जा क्यों नहीं सकते ? कोशिश करते रहोगे तो बेहतर नौकरी भी जरूरी मिलेगी। मुझे देखो, लड़ाई के वक्त मैं भी गांव में मास्टरी करता था।

अनन्त सान्याल की तीखी दृष्टि सिद्धार्थ के चेहरे को टटोलती रही। उनके प्रखर व्यक्तित्व के आगे सिद्धार्थ अपने को क्रमशः छोटा महसूस करने लगा था। उसके मुंह से जैसे कोई बोल ही नहीं फूटा।

अनन्त सान्याल ने पहले की तरह ही हल्की-सी धमकी देते हुए कहा, "खाली बेकार बैठे रहने में कोई तुक नहीं है। मैं अपने दोस्त के नाम खत लिखे देता हूं।–तुम उसे लेकर कल-परसों ही रानाघाट चले जाओ। ठहरो, लिखे देता हूं। जरा, उसका पता खोज लूं–"

उन्होंने मेज की दराज खोलकर अपने दोस्त का पता ढूंढ़ना शुरू किया। अल्मारी खोलकर सेफ का पल्ला खींचा। उसमें ताला बन्द था। कहा, "बैठो, मैं ऊपर से चाबी लेकर आता हूं।"

सिद्धार्थ चुपचाप बैठा रहा। किसी गांवनुमा सबर्ब में जाकर स्कूल की टीचरी करने का उसका बिल्कुल इरादा नहीं है। हालांकि यह आदमी जोर-जबर्दस्ती उसके सिर पर यह नौकरी मढ़ रहा है। वह ठीक-ठीक प्रतिवाद भी नहीं कर पा रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने एक बार सोचा कि वह भाग जाए। लेकिन उसके पैर जवाब दे गये। वह उसी तरह चुपचाप बैठा रहा। उसे लगा हर मिनट खिंच-खिंचकर बेहद लम्बा होता जा रहा है। ऐसे ही करीब दस-पन्द्रह मिनट बीत गए। सिद्धार्थ बदहवास की तरह सोफे से उठकर खड़ा हो गया। वह क्या करे, यह तय नहीं कर पाया। प्रतीक्षा की ये घड़ियां असहनीय लग रही थीं। एक बार तो उसने बिल्कुल सोच लिया कि वह चला ही जाए। अचानक सीढ़ियों पर किसी के गदमों की आहट सुनकर, वह चोरों की तरह सहमकर दुबारा सोफे में दुबक गया।

जो आहट सीढ़ियों से उतरी थी, वह कमरे में नहीं आयी। वह बरामदा पार करके आगे बढ़ गयी। समय फिर अपनी रफ्तार से बीतने लगा। एक मिनट ! दो मिनट !! सिद्धार्थ दुबारा उठ खड़ा हुआ। घड़ी की टिक्-टिक् सुनते हुए उसे झल्लाहट हो रही थी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे अल्मारी पर से घड़ी उठा ली। उसका तीखा आक्रोश पुन: लौट आया। एक अजब-सा विद्वेष-भाव जाग उठा। उसका चेहरा विकृत हो आया। वह मन ही मन सुलग उठा। इस हरामी के बच्चे अनन्त सान्याल से बदला लेना ही होगा। वह सूअर का बच्चा, उसे जोर-जबर्दस्ती कलकत्ते से बाहर भेजने की फिराक में है। साले के बाप का राज है ? उसने झट से वह घड़ी अपनी जेब के हवाले की। उसकी पेंट की जेब भद्दे ढंग से झूल आयी। अगले ही क्षण उसे होश आया। न्ना। शिमला पाढ़ा के चौधरी घराने का लड़का कभी चोर नहीं हो सकता। अपनी जेब से घड़ी निकाल ली और दीवार की तरफ जोर से दे मारी। घड़ी का शीशा टूट-फूट कर जमीन पर बिखर गया। दोनों सुइयां छिटककर दूर जा गिरीं और वह घड़ी पिचककर एक ओर लुढ़क गयी। उसने एक ठोकर और लगायी और उस घड़ी को अल्मारी के नीचे ढकेल दिया। मेज पर अन्नत सान्याल के नाम का एक पैड, लाल-नीली पेंसिल और एक फाउन्टेन पेन सजी हुई थी। उसने पैड् अपने आगे खींच लिया और पेंसिल से कुछ लिखना चाहा लेकिन उसने देखा पेंसिल की नोंक मोथरी थी। उसने पेंसिल एक ओर उछाल दिया और कलम खोलकर लिखना शुरू किया। पहले उसने 'श्रद्धेय....' से खत शुरू किया, लेकिन जब उसे दुबारा पढ़ा तो खट से वह पेज फाड़ डाला और अगले पृष्ठ पर लिखिना शुरू किया– 'डीयर सर....और' उसके नीचे जल्दीबाजी में कुछ और वाक्य घसीट दिए.... 'मास्टरी करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। मैं इस दुनिया में इसलिए नहीं पैदा हुआ हूं कि सबर्ब में मास्टरीगिरी करते हुए सड़-गल कर नष्ट हो जाऊं। आपके ऑफर के लिए शुक्रिया....इति, सिद्धार्थ चौधरी।'

सिद्धार्थ ने खत समाप्त करके उसे दुबारा पढ़ा। पुराने जमाने में मृत्युदंड का फैसला सुनाने के बाद जो रस्म निबाही जाती है, सिद्धार्थ ने भी उसी अदा से कलम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को मुट्ठी में कसकर घचांग से मेज पर दे मारा निब का मुंह वंशी की हुक की तरह टेढ़ा हो गया। सिद्धार्थ ने बेहद नफरत से उसे भी जमीन पर दे मारा।

इतना सब करने के बावजूद उसका गुस्सा शान्त नहीं हुआ। तोड़-फोड़ करने लायक चीजों की खोज में उसने इधर-उधर निगाहें दौड़ायीं। जब और कुछ नहीं मिला तो वह जूते समेत सोफे पर चढ़ गया और उस पर कीचड़ सने जूते रगड़-रगड़ कर गन्दे निशान बना दिए। इतनी सारी खुराफातों के बाद उसने एक झटके से दरवाजा खोला और दौड़ता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

गेट के बाहर ही एक सन्तरे वाला अपनी टोकरी लिए हुए बैठा था। करुणादेवी उस सन्तरे वाले से मोल-तोल कर रही थीं। सिद्धार्थ ने कल इसी महिला को अपने यहां देखा था।

करुणादेवी ने विस्मित निगाहों से सिद्धार्थ की तरफ देखा। शायद उसे पहचानने की कोशिश कर रही थीं और बाद में पहचान भी गयीं। उन्होंने उसे रोककर छोटा-सा प्रश्न किया, "वह क्या नीचे उतर आए हैं ?"

करुणादेवी को देखकर सिद्धार्थ सकपका गया। उसने अपने मनो-भावों को यथासम्भव स्वाभाविक बनाते हुए कहा, "मेरे लिए इससे ज्यादा देर बैठे रहना सम्भव नहीं था–उनसे कह दीजिएगा।"

–ना, ना, जरा देर और बैठो न ! मैं अभी नौकर से खबर भिजवाती हूं।

–नहीं, अब मैं और नहीं बैठना चाहता।

वह उनकी बगल से कतराकर गेट के बाहर निकल आयी। करुणादेवी काफी देर तक हैरत भरी निगाहों से उसे जाते हुए देखती रहीं।

4

सिद्धार्थ का ख्याल था, अनन्त सान्याल दो-एक दिन के बाद ही उसकी कीर्ति-गाथा सात-काण्डों में गढ़कर सुतपा को सुनाएंगे। सुतपा उस बात को लेकर घर में चीख-पुकार मचाएगी। लेकिन सुतपा का व्यवहार देखकर वह अवाक् रह गया। वह एकदम चुप हो गयी है। इन दिनों वह घर में किसी से बात भी नहीं करती है। कोई उससे कुछ पूछता है, तो बेहद कटे-छंटे, संक्षिप्त वाक्यों में जवाब दे देती है।

सुतपा का यह रवैया बिल्कुल नया था। स्वभाव से बेहद जिद्दी और अभिमानी सुतपा, अधिकतर बेलौस हंसी-ठहाकों से छलकती रहती है। जब हंसना शुरू करती है तो-उसे आसानी से रोका नहीं जा सकता। जब नाराज होती है, तो मन ही मन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुस्से से तमतमाती रहेगी; जरा देर बाद ही भभककर फट पड़ेगी। रोना-धोना मचाकर सारा घर सिर पर उठा लेगी। उसी लड़की को दिनों-दिन इस तरह चुप होते देखकर घर भर को हैरानी थी। ऐसी जिन्दादिल, खुशमिजाज लड़की हर वक्त जुबान पर ताले जड़े बैठी रहती है, यह बात सचमुच अद्‌भुत लग रही थी। अब तो उसकी चुप्पी घर भर की निगाहों में पड़ने लगी थी।

लेकिन इस बारे में कुछ किया भी तो नहीं जा सकता। मां ने सुतपा से जवाब-सवाल करने की कोशिश की। काका प्यार दिखाने गये। सुतपा ने किसी को कोई जवाब नहीं दिया।

उसने झुंझलाकर सिर्फ इतना ही कहा, "होगा क्या ? कुछ भी तो नहीं हुआ।"

सिद्धार्थ ने भी अपनी तरफ से उससे कुछ नहीं पूछा। वह भी उससे कन्नी काटता रहा और टूनू तो इन दिनों भयंकर व्यस्त है। घर के इन सब मामलों की तरफ ध्यान देने की उसे फुरसत नहीं थी।

इधर दो-एक दिन से सुतपा जल्दी घर लौट आती है। शाम को आफिस से लौटने के बाद वह चुपचाप अपने बिस्तर पर लेटी रहती है। सोमवार को मां का एकादशी का व्रत रहता है। उसे इसका भी ध्यान था और उस दिन आफिस से लौटते हुए थोड़े से फल और एक डिब्बा मिठाई खरीदकर लौटी। लेकिन उसने फल-मिठाइयां बाहर वाले बरामदे में रख दीं, मां से खाने को आग्रह नहीं किया। पार्ट-टाइम वाली नौकरानी मानदा को बुलाकर संक्षेप में सिर्फ इतना ही कहा, 'ये फल बगैरह काटकर मां को खिला देना।"

मां ने तिरछी निगाहों से बेटी की तरफ देखते हुए, नौकरानी से कहा, "नहीं, यह सब मैं नहीं खाऊंगी। मेरा पेट ठीक नहीं है।"

मां की रुंधती हुई आवाज में दबी हुई रुलाई का आभास पाकर सिद्धार्थ के सीने में भी कहीं कुछ कचोट उठा। उसे मां का चेहरा बेहद असहाय लगा। असहाय तो खैर, वह हो ही गयी थीं। कहीं कुछ भी उनके वश में नहीं था। उनकी अपनी बेटी ही अगर कहना न माने, उनकी बातों का जवाब न दे, तो इतनी बड़ी लड़की को मारा-पीटा तो नहीं जा सकता न !

शाम को सिद्धार्थ गली के मोड़ से निकलकर बड़े रास्ते की दाहिनी तरफ मुड़ने ही वाला था कि दूर से आती हुई सुतपा पर उसकी निगाह पड़ी।

शाम से लेकर अब तक तीन-तीन दौर पानी बरस चुका ! सड़कों पर पानी छप्-छप् भरा हुआ था। सुतपा एक हाथ से अपनी सीढ़ी उठाए, सम्हल-सम्हल कर पैर रख रही थी। उस दिन उसने मोरपंखी रंग की छापेदार साड़ी पहन रखी थी। उसके हाथ में एक सफेद पर्स भी था। सिद्धार्थ ने अचानक ही महसूस किया कि उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहन सुतपा, जिसका ख्याल आते ही अक्सर फ्राक पहने हुए किसी नन्हीं बच्ची की शक्ल उभरती है, अब पूरी-पूरी जवान औरत बन चुकी है। अपनी असली उम्र से भी कहीं अधिक बड़ी लगने लगी है। कौन कहेगा कि इस लड़की की उम्र सिर्फ बीस साल है ? न चाहते हुए भी सिद्धार्थ की निगाह उसके अंग-प्रत्यंग पर फिसलती रही। उसकी भरी-भरी गोलाकार छातियां। चलने की अदा में थोड़ी-सी लचक ! गोरे चेहरे पर एक अजब-सी चमक !

रास्ते के दूसरी तरफ से दो मनचले छोकरे सुतपा की बगल से गुजर गये। सिद्धार्थ ने साफ-साफ देखा, उन्होंने जान-बूझकर उसे हल्का-सा धक्का दिया। अब वह दोनों सिद्धार्थ के बिल्कुल करीब आ गए थे, फिर भी मुड़-मुड़कर सुतपा की ओर ही देखे जा रहे थे। उनमें से एक ने आशिकाना अन्दाज में आवाज कसी, ''मां कसम, क्या जब्बर चीज है।''

सिद्धार्थ के मन में दप से आग जल उठी। उसकी तबीयत हुई कि वह उन छोकरों को कॉलर से पकड़कर दना-दन उनकी खोपड़ी बजा दे। उन्हें जमीन पर पटक कर सालों को ट्यूब-वेल का पानी पिला दे। हुंह ! जाने किस मोहल्ले के लड़के हैं, उसके मुहल्ले में आकर उसकी बहन से बरजोरी करने का दुस्साहस कर बैठे। लगता है उनके सिर में तेल जरा ज्यादा हो गया है ! लेकिन....कहीं कोई नाटकीय दृश्य नहीं घटा। सिद्धार्थ उनकी तरफ सिर्फ जलती हुई निगाहों से घूरता हुआ खड़ा रहा। वह दोनों लड़के सिद्धार्थ को छोड़कर आगे निकल गये। उसकी तरफ उसका ध्यान ही नहीं गया। उन दोनों ने पीछे मुड़ कर, सुतपा की तरफ देखा और फिर आपस में हंसी-दिल्लगी करते हुए ओझल हो गए।

सुतपा का ध्यान भी उस तरफ नहीं था। वह उसी पुराने पोज में साड़ी को जरा ऊंची करके कीचड़-कादा बचाती हुई, अपने में ही डूबी-डूबी-सी आगे बढ़ गयी। वह दोनों लड़के, उसे धक्का देकर आगे निकल गए, लेकिन उसने पलटकर भी नहीं देखा, मानो उसने समझ लिया है कि रास्ते की धूल-धक्कड़, कीचड़ की तरह सीटियों की आवाजें, गन्दे रिमार्क और धक्का खाना भी अनिवार्य है। कम-से-कम इस वक्त वह इस तरफ ध्यान देने के बजाय, रास्ते की कीचड़ से अपनी साड़ी बचाने में अधिक सजग थी। सिद्धार्थ रास्ते के बीचों-बीच खड़ा हो गया। उसके पास से गुजरते हुए सुतपा ठिठक गयी। उसने पल भर को नजरें उठाकर भाई की तरफ देखा, फिर अपनी राह चलने लगी, मानो दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल अपरिचित हों।

सिद्धार्थ ने ही आवाज दी, ''एई, तपू सुन !''

सुतपा ठिठक गयी। सिद्धार्थ की तरफ लापरवाही से देखते हुए उसका चेहरा तन आया। उसने ठंडी आवाज में कहा, ''क्या है ?'' उसकी भौंहें सिकुड़ गयीं और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने बेहद दृढ़ता से अपने को सख्त कर लिया मानो वह किसी हमले के मुकाबले के लिए अपने को तैयार कर रही हो।

"तुझे क्या हुआ है ?"

"कुछ भी तो नहीं....।"

सुतपा ने चाहा वह सिद्धार्थ की उपेक्षा करके आगे बढ़ जाए, मानो वह यह दिखाना चाह रही है कि उसमें इतना भी धीरज नहीं है कि वह ये सब फालतू बातें सुने या जवाब दे। सिद्धार्थ ने अपने को बेहद अपमानित महसूस किया। इधर दो-तीन सालों से उसने सुतपा पर कभी हाथ नहीं उठाया, लेकिन आज इस वक्त अचानक उसका मन हुआ कि आम-रास्ते में ही उसके गाल पर कसकर एक तमाचा जड़ दे। आखिर उसने अपने को समझ क्या रखा है ? उसने क्या यह सोच लिया है कि वह मनमानी करेगी और....?

सिद्धार्थ ने निरर्थक आवेश से झुंझलाकर आदेशपूर्ण लहजे में कहा, "एई, मैं कहता हूं ठहर जा ! मैंने तुझसे कुछ पूछा था, सुनाई नहीं दिया ?"

सुतपा ने उसी तैश में सवाल किया, "क्या है ?"

"तेरा मैनेजर मेरे बारे में कुछ कह रहा था ?"

"क्यों, वह क्या कहेगा ?"

दोनों ने एक-दूसरे की तरफ परखती हुई निगाहों से देखा। सिद्धार्थ के चेहरे पर दबे हुए आक्रोश की तमतमाहट थी। सुतपा के चेहरे पर भय का कोई चिन्ह भी नहीं था। उसने मानो सब कुछ अस्वीकार कर दिया था। कई मिनट तक दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे। सिद्धार्थ समझ गया, अब उसके वश में कुछ भी नहीं है। सुतपा जैसे चाहे, उसका अपमान कर सकती है, लेकिन अब वह उसके कान नहीं पकड़ सकता, उसकी चोटी भी नहीं खींच सकता। सिद्धार्थ ने उसांस भर कर कहा, "अच्छा-जा !"

दोनों परस्पर विपरीत राहों पर चल पड़े। कार्नवालिस स्ट्रीट के मोड़ पर आकर सिद्धार्थ ने एक सिगरेट सुलगाकर अपने को संयत करने की कोशिश की। गुस्से में उसकी समूची देह खुजलाने लगती है। मुट्ठियां कसने लगती हैं और सारे रोंए जैसे खड़े हो जाते है। इतना सारा आक्रोश उसकी शक्तिशाली देह में जैसे घुल-मिल गया हो। लेकिन जब अपनी ही शारीरिक शक्ति बदला लेने में कमजोर साबित होती है तो उसे बेचैनी होने लगती है। सिद्धार्थ अब समझ चुका है कि सुतपा अपनी जिन्दगी का हर दायित्व अपने हाथों में ले लेना चाहती है। हालांकि अभी थोड़े दिन पहले तक वह अपने बाल तक सुलझाने के लिए मां के आगे जा बैठती थी, रेडियो स्टेशन दिखाने के लिए कक्का को तंग करती थी। उसे अपनी तमाम सखी-सहेलियों के किस्से सुनाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी। अब तो जैसे किसी से कोई बात ही नहीं करना चाहती। सब कुछ अपने भीतर ही पी जाना चाहती है। सुतपा को यूं बदलते देखकर वह दिशाहारा हो उठा है। इस वक्त उसके मन में सुतपा के लिए तीखे आक्रोश के साथ-साथ कहीं तीखा-दर्द भी उभर आया।

सुतपा पर उमड़ता हुआ आक्रोश अचानक अनन्त सान्याल पर जा पड़ा। यद्यपि उस आदमी के खिलाफ वह कोई संगीन अभियोग नहीं खोज पाया था; लेकिन इन तमाम खुराफातों के लिए वह इसी आदमी को कुसूरवार समझ रहा था। वह मन-ही-मन बुदबुदा उठा, "हुंह, देख लूंगा ! मैं देख लूंगा उस साले को। आखिर वह अपने को समझता क्या है ? अगर मैंने उस साले का घर न फूंक दिया तो–"

सिद्धार्थ कुछ तय करके नहीं चला था, लेकिन अपने ख्यालों में खोया हुआ मानिक तल्ला के मोड़ तक पहुंच गया। उसने सामने खड़े विशाल महल की दूसरी मंजिल पर निगाह डाली। केया ने उसे अपने यहां आने का आमंत्रण दिया था। लेकिन उसके यहां उसे इतनी जल्दी दो-एक दिन के अन्दर पहुंच जाने से, केया कहीं उसे दीन-हीन न समझ ले, इस ख्याल से वह सकुचा रहा था। यहां तक तो वह कल भी आया था। उसके मकान के सामने वाले फुटपाथ पर खड़ा-खड़ा कुछ सोच ही रहा था कि उसने देखा केया किसी प्रौढ़ सज्जन के साथ बाहर जा रही थी। शायद वह उसके डैडी रहे होंगे। केया उसे नहीं देख पायी। वह लोग किसी टैक्सी में बैठने जा रहे थे। सिद्धार्थ को अफसोस के बजाय खुशी हुई। चलो, एक दिन और गुजर गया। अब अगर इतने दिनों बाद वह उससे मिला तो निश्चय ही....।

सिद्धार्थ ने देखा केया के फ्लैट में अंधेरा है। यानी आज भी वह लोग घर पर नहीं थे। वह उदास हो आया। शाम के वक्त कहीं जाने लायक और कोई जगह भी तो नहीं है। सिद्धार्थ सड़क पार करके मकान के गेट तक चला आया। केया घर पर नहीं है, अत: निश्चिन्त होकर कुछ देर उसके घर के आस-पास टहला जा सकता है। अलग-अलग फ्लैट ! कहीं कोई बातचीत करने वाला भी नहीं है। गेट से अन्दर घुसते ही लेटर-बाक्सों की कतारें। वह केया का लेटर-बाक्स नहीं खोज सका, क्योंकि उसे केया के डैडी का नाम नहीं मालूम था। अच्छा, अगर वह दरवाजे के दरार से केया के नाम एक खत डाल दे तो क्या अशोभन लगेगा ? लेकिन खत में वह लिखेगा क्या ? अचानक उसे ख्याल आया कि इस बारे में सोचना बेकार है, क्योंकि जेब में कलम होते हुए भी, कागज का टुकड़ा नदारद है। क्यों न सिगरेट का पाकेट फाड़ कर....? नहीं, नहीं, केया से उसका कोई अन्तरंग परिचय भी तो नहीं है। सिर्फ एक दिन का परिचय ! वह तो केया ने ही उसे घर आने के लिए कहा था....इसी-लिए....।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसी समय सीढ़ियों से धड़धड़ाती हुई केया नीचे उतरी। सिद्धार्थ को हल्के से डांटते हुए पूछा, "आप कुछ बहरे हैं, क्या ? मैंने खिड़की से इतनी-इतनी आवाजें दीं, आपने सुनी नहीं ?''

सिद्धार्थ बुरी तरह चौंक उठा। अचानक केया को सामने देखकर उसके दिल की धड़कनें क्यों तेज हो उठी ? इसकी कोई खास वजह उसकी समझ में नहीं आयी। उसकी सारी देह कांप रही थी। उसने हड़बड़ाहट में लड़कियाना आवाज में कहा, "नहीं तो, मुझे बिल्कुल सुनाई नहीं दिया। आपने क्या आवाज दी थी ? आपके फ्लैट में तो अंधेरा था।''

–अरे इसीलिए तो आपको आवाज दे रही थी। आप फ्यूज का तार लगाना जानते हैं ?

–फ्यूज-तार ?

–नहीं जानते ? बात यह है कि हीटर का प्लग लगाते हुए अचानक हमारी बत्ती चली गयी।

–हां-हां, मुझे आता है, लाइए, मैं अभी ठीक किए देता हूं।

सिद्धार्थ काम की बात सुनकर उत्साहित हो उठा। वह केया का कोई काम कर पाएगा, इतने बड़े सौभाग्य की उसे उम्मीद ही नहीं थी। फ्यूज का तार तो कुछ भी नहीं है–उसने बहुत बार ठीक किया है।

सिद्धार्थ ने इससे पहले ऐसा कोई मकान नहीं देखा था, जहां दूसरे मंजिल पर भी मीटर और मेन-स्विच हो। इस मकान का बिल्कुल अलग सिस्टम है। अलग-अलग फ्लैटों के भीतर ही मेन-स्विच। वह केया के साथ धड़धड़ाते हुए ऊपर चला आया। दरवाजे के सामने ही एक प्रौढ़ महिला का हाथ थामे हुए केया का छोटा भाई खड़ा था। केया के डैडी उस वक्त घर पर नहीं थे। सिद्धार्थ उस अंधेरे में स्टूल पर खड़ा हो गया। कहा, "एक मोमबत्ती ले आइए। नहीं है ? तो एक दियासलाई ही सही।''केया उस अंधेरे में खिलखिला उठी, "अरे, आपके पास दियासलाई भी नहीं है ? आप सिगरेट नहीं पीते ?''

सिद्धार्थ इतना नर्वस पहले कभी नहीं हुआ था। उसने बुद्धुओं की तरह जवाब दिया, "अरे, हां दियासलाई तो मेरी जेब में ही पड़ी है। आप स्टूल को जरा सख्ती से पकड़े रहिएगा–लेकिन देखिए, मुझे हाथ न लगाइएगा।''

फ्यूज का तार ही तो जला था ! मामूली-सी बात थी ! सिद्धार्थ ने पूछा, "फ्यूज तार है घर में ?''

–हां, शायद था तो सही ! लेकिन अंधेरे में कहां खोजूं ? अच्छा, रुकिए ! देखती हूं अगर मेज के ड्रॉज में–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–रहने दीजिए, मैं ले आता हूं !

वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतर गया और मुहल्ले की दुकान से एक टुकड़ा फ्यूज-तार खरीदकर दौड़ता-हांफता लौट आया। शुक्र है, आज उसकी जेब में एक रुपया पड़ा था। अगर कहीं केया से पैसे मांगने पड़ते तो....इधर कुछ दिनों से सिद्धार्थ ने इतनी उत्साह से कोई काम नहीं किया था। भाग-दौड़ की वजह से उसकी सांस फूल आयी। उसने केया से कहा, ''आप, जरा, एक तीली जलाए रखिए।''

केया अनाड़ी हाथों से माचिस की तीली जलाकर सिद्धार्थ के करीब झुक आयी।

सिद्धार्थ को केया के बदन से फिर वही मीठी महक आने लगी। केया बालों में जरूर कोई बढ़िया तेल लगाती है। अतिशय उत्तेजना के कारण, सिद्धार्थ का हाथ बार-बार फिसल जाता था।

केया ने कहा, ''जल्दी कीजिए न ! मेरा हाथ जल रहा है।''

इस वक्त केया को निहारते हुए सिद्धार्थ को बहुत अच्छा लग रहा था। तीली बुझते ही समूचे फ्लैट में घुप्प अंधेरा ! उस वक्त सिर्फ केया के बदन की भीनी-भीनी महक ! फिर दूसरी तीली जलाते ही, मानो किस स्वप्नमयी-सी केया उसके और....और करीब आती जा रही थी।

स्विंच पहले से ही आन था। अचानक सारी बत्तियां जल उठीं। सिद्धार्थ ने टूल पर खड़े-खड़े ही केया की तरफ गर्व से देखा। इतने मामूली से काम के लिए इतनी अधिक खुशी, उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी।

केया ने कहा, ''शुक्रियां, मिस्त्री जी....चलिए, अब नीचे उतर आइए।''

फ्लैट में अंधेरा होने के कारण सिद्धार्थ को फ्लैट की चीजें दिखाई नहीं दे रही थीं। रोशनी में फ्लैट की सजावट देखकर वह दंग रह गया। मेन-स्विच दीवाल के कोने में इस तरीके से फिट की गयी थी कि दरवाजा खोलते वक्त वह छुप जाती थी। समूचे कमरे की सहावट बेहद खूबसूरत थी। इससे पहले उसने ऐसा झक-झक चमकता हुआ घर कभी नहीं देखा था। समूचे कमरे में कहीं बूंद-भर भी धूल या गन्दगी नहीं थी। कमरे के एक ओर सोफासेट लगा था। लग रहा था उसका रेक्सीन-कवर आज ही लगाया गया है। पास ही किताबों की लम्बी आल्मारी ! उसमें ठूंसी हुई किताबें ! किसी भी किताब की जिल्द फटी हुई नहीं थी। आल्मारी की पॉलिश तक चमक रही थी। जयपुरी मीनाकारीवाला पीतल का चमकता हुआ फूलदान ! ऐसा चमचमाता हुआ कि उसमें अपनी शक्ल तक देखी जा सकती थी। रजनीगन्धा के फूल इतने ताजे मानो अभी-अभी पेड़ से तोड़कर लगाए गए हों। दीवारों पर कहीं कोई धब्बा तक नहीं था। कमरे में खास कीमती चीजें नहीं थीं, लेकिन उनकी सजावट और सफाई देखकर सिद्धार्थ की तबीयत खुश हो गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ्यूज-तार के प्रसंग के बाद, सिद्धार्थ जरा खुल गया। उसे बात का सिलसिला जारी रखने में कोई असुविधा नहीं हुई। केया के व्यवहार में भी कहीं कोई हिचकिचाहट या संकोच नहीं था।

केया ने पूछा, "इतने करीब रहते हुए भी, आप पहले क्यों नहीं आए ? मैं हर रोज सोचती थी, आज आप जरूरी-जरूर आएंगे।"

वह कल भी आया था, सिद्धार्थ यह बात दबा गया। कहा, "हां, मैं आने की सोच ही रहा था।"

"लगता है आप काफी व्यस्त रहते हैं ? अगर ऐसी बात है तब तो मैं जोर नहीं दूंगी–"

"नहीं, नहीं, यह बात वजह नहीं थी। सब, यूं ही...।"

"यूं ही क्या मतलब ? मैंने आने को कहा था, आप आ जाते, बस्स !"

सिद्धार्थ को केया की बातें बेहद भली लग रही थी। इससे पहले किसी भी लड़की ने उससे इतनी सहजता से बातें नहीं की थी, यूं आने को भी आमन्त्रित नहीं किया था। जहां तक उसका अनुभव है, लड़कों ने अगर कहीं लड़कियों से बातें करने की कोशिश की, तो लड़कियां अहंकारी हो उठती हैं। लिफ्ट ही नहीं देना चाहतीं। दो-एक बातों का जवाब देती भी हैं तो यह जाहिर करती हैं, मानो वह उन पर अहसान कर रही हैं। शुक्र है केया को ऐसा कोई मर्ज नहीं है। उसने अपनी तरफ से ही कई बार आमन्त्रित किया। सिद्धार्थ का मन हो रहा था, वह रुके नहीं, यूं ही बोलती रहे।

केया ने कहा, "मेरी कालेज की ज्यादातर सहेलियां साऊथ कलकत्ते में रहती हैं, लेकिन रोज-रोज उस एरिया की तरफ जाना नहीं होता। इस तरफ किसी से खास जान-पहचान भी नहीं है। यहां हम नये-नये आए हैं न !"

"अच्छा ? आप लोग नए-नए आए हैं ?"

"हांऽ–हमें यहां आए हुए कुल साढ़े चार महीने ही तो हुए हैं।"

"इससे पैहले आप कौन से मुहल्ले में रहती थीं।"

"हम दिल्ली में थे–राजेन्द्र नगर में। बापी यहां साल-भर के लिए ट्रांसफर होकर आए हैं।"

सिद्धार्थ मन-ही-मन सोचता रहा....ओऽ....तभी....दिल्ली की लड़की है, इसी-लिए....। कलकत्ते की लड़की होती तो इस तरह घर आने का आमंत्रण हरगिज नहीं देती। उसके मां-बाप ही एलाउ नहीं करते। बाहर के लड़के-लड़कियों के उच्चारण में एक तरह की तुतलाहट होती है, लेकिन केया का उच्चारण बेहद साफ है ! प्रौढ़ा महिला और केया के छोटे भाई को लेकर बगलवाले कमरे में चली गयी। सिद्धार्थ ने पहले इस ओर ध्यान नहीं दिया था। जब वह नाश्ता लेकर कमरे में दाखिल हुई तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने गौर किया, वह बंगालिन नहीं है, शायद कोई पहाड़िन है। क्या यह केया की मां है ?

ट्रे में करीने से सजे हुए टोस्ट और फ्राइड अंडे और केतली में चाय।

सिद्धार्थ ने कहा, "अरे यह सब क्यों ?"

–जी नहीं, आपके लिए खासतौर से नहीं बनाया गया है, असल में हम सबके लिए ही बनाया जा रहा था, बीच में फट ! अंधेरा हो गया। लीजिए, खाइए।"

सिद्धार्थ ने हाथ में नाश्ते की प्लेट लेकर खाना शुरू ही किया था कि केया ने टोका, "अरे, आप बिना हाथ धोये ही खाने लगे ? कैसे आदमी हैं, बाबा ? तार-फार छूने के बाद....जाइए, वह रहा बाथरूम।"

सिद्धार्थ बुरी तरह झेंप गया। वह हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ। उसे जाने क्या हो रहा था, केया के सामने वह अपने को स्मार्ट नहीं रख पा रहा था। वह झटपट बाथरूम में घुस गया। बाथरून भी इतना साफ-सुथरा कि वहां लेटा जा सकता था। संगमरमर की तरह चमकते हुए सफेद टाइल्स ! मानिकतल्ला की तरफ भी कहीं इतने खूबसूरत फ्लैट हैं, वह नहीं जानता था। कमरे से लगा हुआ बाथरूम उसे इतना पसंद है....लेकिन क्या वह भी किसी दिन ऐसे मकान में रहने के काबिल हो सकेगा ? उसका मकान तो अस्सी-नब्बे साल पुराना है–दीवारों तक में सीलन भर गयी है। अच्छा, केया इसी बाथरूम में नहाती है ? इसी आइने में अपना रूप निहारती है ? सिद्धार्थ आईने के सामने अपने ख्यालों में डूबा रहा। केया के उजले-धुले चेहरे की कल्पना करके अचानक उसे रोमांच हो आया। दो-तीन सेंकंड इस सुखद कल्पना में डूबे रहने के बाद अचानक अपने को वह थोड़ा-सा अपराधी भी महसूस करने लगा।

केया का भाई करीब छः साल का होगा। खूबसूरत चेहरा ! शरारती आंखें, लेकिन इतनी देर से वह बिल्कुल चुपचाप बैठा था। उसकी अलसायी आंखों से लग रहा था कि उसे बुरी तरह नींद आ रही है। केया ने उस महिला से हिन्दी में जाने क्या कहा, वह बच्चे को लेकर वहां से चली गयी।

सिद्धार्थ ने कहा, "आप तो गजब की हिन्दी बोलती हैं ? दिल्ली में कितने दिनों रही हैं ?"

–जब मैं सिर्फ छः साल की थी ? हम कुछ दिनों अहमदाबाद में भी रह चुके हैं। आप कलकत्ते में कब से हैं ?

–प्रायः तीन पुश्तों से, लेकिन आपने इतनी अच्छी बंगला कहां से सीखी ?

–मेरी मां शान्तिनिकेतन की स्टुडेण्ट थी। बंगला मैंने अपनी मां से सीखी थी। मुझे किताबों का भी बेहद शौक है। मैंने बंगला की ढेरों किताबें पढ़ी हैं।

–यहां तो सिर्फ अंग्रेजी की किताबें दिखाई दे रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–जी, नहीं, हमारे यहां बंगला की भी बहुत सारी किताबें है। देखिएगा ? आइए, दिखाऊं।

बगलवाले कमरे का दरवाजा उढ़काया हुआ था। केया ने उसे धक्का देकर खोल दिया। इस कमरे की सजावट भी कुछ कम नहीं थी। पास-पास ही दोनों भाई-बहनों का बेड़ लगा हुआ था। उस कमरे में अलमारी और एक स्टैण्ड भी था। इसके अलावा उस कमरे में किताबें ही किताबें ? सिर्फ किताबें ? सिद्धार्थ ने अवाक् होकर कहा, "इतनी सारी किताबें आप पढ़ चुकी हैं ?"

"इसके अलावा और करूं भी क्या ? यहां तो घूमने-फिरने या खेलने की कोई खास जगह भी तो नहीं है। हुंह, आप लोगों का यह शहर बहुत बोरिंग है....मैं सिर्फ किताबें पढ़ती हूं और खत लिखती हूं।"

–खत ? किसे ?

–क्यों ? अपनी दिल्ली वाली सहेलियों को। आठ महीने बाद तो हम वहीं लौट जाएंगे। सारी दोस्त वहीं हैं।

सिद्धार्थ ने फौरन सोच लिया–केया दिल्ली लौटकर उसे भी खत लिखेगी। काफी मोटा-सा लिफाफा ? रात को जब वह घर पहुंचेगा, मां उसकी तरफ आश्चर्य से देखती हुई खत पकड़ाएगीं। वह उसके हाथों से खत ले लेगा और....

सिद्धार्थ अल्मारी में लगी हुई किताबें देखता रहा। केया उसके करीब ही, अल्मारी से ठुड्ढी टिकाए खड़ी थी।

अचानक उसने सिद्धार्थ को चौंकाते हुए कहा, "सुनिए, आप चाहे तो मुझे 'तुम' कहकर पुकार सकते हैं। हम तमाम दोस्त आपस में एक-दूसरे को 'तुम' ही कहती हैं।"

सिद्धार्थ को स्मार्ट दिखने का जरा-सा मौका मिलते ही, उसने छूटते ही कहा, "मैं भी आपसे यही बात कहने वाला था। अलबत्ता, मैं दिल्ली के तौर-तरीके नहीं जानता। मेरे कालेज के लड़के लड़कियां भी परिचय के पहले दिन से ही एक-दूसरे को तुम कहते थे, मैं भी जान-पहचान की लड़कियों को 'तुम' ही कहता था।'

"आप किस कालेज में पढ़ते थे ?"

सिद्धार्थ ने हल्के से गर्व के साथ कहा–प्रेसिडेन्सी।

–बी०एस-सी० पास करने के बाद आपने पढ़ाई जारी क्यूं नहीं रखी ?

सिद्धार्थ सकपका गया। इससे पहले उसे अपनी गरीबी पर कभी शर्म नहीं आई थी। लेकिन आज केया के सामने अपनी गरीबी की मजबूरी को चाहकर भी स्वीकार नहीं कर पाया। उसने सोचा, वह कंधे झटककर उपेक्षा से कहे, "क्या होगा पढ़-लिखकर ? आजकल इन चीजों की कोई कीमत नहीं है।" लेकिन झूठमूठ का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहाना गढ़ने के बजाय उसने कहा, "मैं डाक्टरी में एडमिशन लेना चाहता था। सब ठीक-ठाक भी हो गया था। अचानक एक नौकरी का ऑफर मिल गया।''

केया खिलखिलाकर हंस पड़ी, "इत्ती-सी उम्र में....नौकरी ?''

—इत्ती-सी उम्र....मतलब ?

—आप कौन-सी नौकरी करते हैं ?

—नहीं, मैंने उस नौकरी के लिए मना कर दिया। उन लोगों ने ट्रेनिंग के लिए मद्रास भेजना चाहा था। मेरी मां राजी नहीं हुई।

—वाह ! वाकई आप बंगाल के योग्य सुपुत्र हैं।

सिद्धार्थ केया के चेहरे की तरफ देखता रहा। सीढ़ी पर केया से मुलाकात होते ही जैसे वह नर्वस हो गया था, इत्ता सारा झूठ बोलते हुए उसका दिल फिर धक्-धक् करने लगा। लेकिन अब बीच राह से वापस जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता। सिद्धार्थ ने अपनी तरफ से फिर कहा, "सोच रहा हूं, अगले सेशन में डाक्टरी में एडमिशन ले लूंगा।

उस कमरे से निकलकर वह लोग दुबारा ड्राइंग-रूम में आ गए।

केया ने पूछा, "गाना सुनेंगे ? और उसके उत्तर की अपेक्षा किए बिना, उसने प्लेयर पर सितार का एक रिकार्ड लगा दिया। सारा कमरा सितार की मधुर झन-झनाहट से भर गया। केया ने सोफे पर बैठते हुए कहा, "किसका सितार है, बताइए तो ! नहीं पहचान सके ना ? क्यों, आपको गाने-बजाने का शौक नहीं है ? ये रविशंकर हैं ! हम जब दिल्ली में थे, रविशंकरजी एक बार हमारे घर भी आए थे। आपको पता है, वह अद्भुत आदमी हैं। उनके साथ दो अमेरिकन लड़कियां भी आई थीं—शक्ल-सूरत से बेहद स्वीट....''

केया अनर्गल भाव से दिल्ली के किस्से सुनाती रही। सिद्धार्थ ने एक बार अपनी घड़ी पर निगाह डाली। सवा आठ बज रहे थे। कितने बजे उठना उचित होगा ? केया तो अपनी तरफ से कुछ नहीं केगी। उसे ही कहना चाहिए, "अच्छा, अब चलूं।'' लेकिन ठीक कितने बजे उठे ? बातचीत के बीच में क्या चलने की बात कही जा सकती है ? यूं उसका भी वहां से उठने का बिल्कुल मन नहीं हो रहा है। जितनी देर तक उसका बैठे रहना अशोभन न लगे, वह बैठना चाहता है। हां, यहां उसे सब कुछ अ—सम्भव रूप से अच्छा लग रहा है। केया सामनेवाले सोफे पर बैठी थी। उसका हाथ सोफे की बांह पर था। वह पांव पर पांव रखे, जरा तिरछी होकर बैठी थी। हल्की धानी रंग की साड़ी में उसकी छरहरी देह पंख फैलाकर उड़ती हुई तितली-सी जान पड़ती थी। उसके हाव-भाव में कहीं कोई आलस्य या जड़ता नहीं थी। ऐसा सुन्दर, सजा हुआ फ्लैट ! संगीत की मद्धिम झंकार ! सिद्धार्थ को लग रहा था मानो कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हौले-हौले हाथों से उसके सीने पर हाथ फेर कर, उसके दिल की जलन को ठण्डक दे रही हो। किस्मत से उस दिन वह आदिनाथ के साथ खाने के चक्कर में नहीं पड़ा, शिवेन के साथ छोटी मौसी के यहां चला गया। तभी तो केया से मुलाकात हो गयी। अब तो केया उसके बेहद करीब आ गयी है।

केया के प्रोफाइल चेहरे को देखते हुए, सिद्धार्थ बुरी तरह चौंक पड़ा। बहुत देर से उसे केया का चेहरा बेहद परिचित लग रहा था। जिस बात का वह इतनी देर से ठीक-ठीक अन्दाज नहीं लगा पा रहा था, अचानक ही स्पष्ट हो गया। सुतपा और केया के चेहरे में कहीं कोई अद्‌भुत मेल है।

मैं अलग-अलग देखो तो उसके नाक-नक्श बिल्कुल अलग-अलग हैं, लेकिन सब मिलाकर दोनों के चेहरों में कहीं कोई समानता जरूर है। अचानक बिना किसी पूर्व-सूचना के उस की आंखें कड़ुवा आयीं, मानो अभी ही आंसू छलछला आए हों। उसके गले में थोड़ी-सी उमस जमा हो गयी। सुतपा भी क्या ऐसी नहीं हो सकती थी ? अभी कुछ दिनों पहले तक वह भी बेहद सहज और सुन्दर थी, लिखने-पढ़ने में भी तेज थी। वह भी तो इसी तरह किसी सजे-सजाये कमरे में बैठकर ऐसे ही सरल भाव से किसी से बातें कर सकती थी ? इसके बजाय वह क्रोध, अभिमान, लांछना, लोभ और गन्दगी में सांस लेती हुई समय से पहले ही मैच्योर होती जा रही है। इन दिनों हर वक्त उसका चेहरा उदास और भारी रहता है। नहीं, अब से वह तपू से बेहद प्यार से पेश-आएगा। हां, वह कोशिश करेगा कि वह तपू को भी ऐसी ही खूबसूरत और सहज जिन्दगी लौटा सके।

केया अपनी धुन में बोले जा रही थी, "मेरे बापी इन्कम-टैक्स आफिसर हैं। अधिकतर दिल्ली में रहते हैं। कभी-कभार दो-एक साल के लिए कहीं ट्रांसफर भी हुए तो फैमिली नहीं ले गये। इस बार कलकत्ता किसी खास वजह से आए हैं। इसीलिए मुझे भी यहां के कालेज में अपना ट्रांसफर कराना पड़ा। जानते हैं, मैं हमेशा मिशनरी स्कूल-कालेजों में पढ़ती आयी हूं। यहां भी लौरेटों में एडमिशन लिया है। लेकिन यहां का माहौल मुझे कतई पसंद नहीं आया। यहां की बंगाली लड़कियां तक बंगाल के बारे में कुछ नहीं जानती....जानने को उत्सुक भी नहीं हैं। सब अपने साज-शृंगार और पहनावे में व्यस्त रहती हैं।....हां, आदिति भली लड़की है ? और क्या बला की खूबसूरत है। कह सकते हैं, आदिति जैसी खूबसूरत लड़कियां आसानी से नहीं दिखतीं। आप ही बताइए, ऐसी खूबसूरती कहीं दिखाई पड़ती है ?"

सिद्धार्थ का भी यही ख्याल था। आदिति सचमुच बेहद खूबसूरत है। लेकिन उसके मुंह से कोई और ही बात निकल गयी, "आप भी कोई कम सुन्दर हैं ? मेरी निगाहों में तो आप ही ज्यादा खूबसूरत....मेरे कहने का मतलब है....आप ही स्वीट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगती हैं।''

यह कहते हुए सिद्धार्थ ने झेंपकर नजरें झुका लीं।

केया ने निश्छल विस्मय से कहा, "धत्! आपकी आंखें नहीं हैं, क्या ? आप आदिति से मेरी तुलना कर रहे हैं ? उसका फिगर क्या बढ़िया है....कैसा ग्रेसफुल चेहरा है। वह तो बिना बनाव-शृंगार के ही–''

केया ने बच्चों की तरह उसे जोर देकर, यह समझाने की कोशिश की कि टुलटुल उससे अधिक सुन्दर है। सिद्धार्थ को यह देखकर और भी भद्दा लगा कि अपने बारे में केया को जरा भी अहंकार नहीं है। लेकिन जाने क्यों, उसे यह भी लग रहा है कि उसकी बातों में कहीं कुछ छूट गया है।

इस बात का ख्याल आते ही उसने केया से पूछा, "आपकी मां कहां हैं ?''

केया पल भर को चुप हो रही। उसके चेहरे पर एक हल्की-सी उदासी तैर गयी। फिर धीरे से कहा, 'मेरी मां इस दुनिया में नहीं है।....यह अम्मा है न! वह हमारे यहां बहुत सालों से काम कर रही है। वही इस समूचे घर की देख-भाल भी करती है।''

सिद्धार्थ को जैसे एक धक्का लगा। केया इतनी भली लड़की है....उसे ऐसी मनहूस किस्मत नहीं मिलनी चाहिए थी। अगर उसकी मां जिन्दा होती, तो सब कुछ भरा-पूरा लगता। केया की मां नहीं है, यह सुनकर उसने महसूस किया वह सचमुच बेहद अकेली है।

केया अचानक फिर खुशी से झिलमिला उठी, "लेकिन....आपको पता है, जल्दी ही मेरी नयी मां आनेवाली है। बापी अपर्णा आण्टी से ब्याह कर रहे हैं। ....अहा, क्या मजा आएगा! जिसे पहले अपर्णा आण्टी कहकर पुकारती थी, अब 'मां' कहकर बुलाया करूंगी। जानते हैं वह मुझसे सिर्फ दस साल बड़ी हैं–मां–मां जैसे बिल्कुल भी नहीं, लगती।''

सिद्धार्थ के लिए ये सारी बातें बिल्कुल नयी थीं। बाप ब्याह कर रहा है, बेटी इस बात को खुशी-खुशी सुनाती फिर रही है–ये सब सिद्धार्थ की दुनिया से बाहर की बातें थीं। मौसी को मां कहकर पुकारने के ख्याल से ही उसकी सारी देह में झुरझुरी फैल जाती है। उसके बापू भी तो नहीं रहे।

अगर कहीं उसे भी छोटे कक्का को 'बापू' कहकर पुकारना पड़े तो ? धत्! बेकार की बातें हैं। इन लोगों की बात अलग है।

अचानक सिद्धार्थ को लगा आज केया के बापी से उसकी मुलाकात न हो, तो बेहतर है। वह फौरन उठ खड़ा हुआ "अच्छा, आज चलूं! कभी आप भी हमारे यहां आएं न!''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जरूर चलूंगी ! बताइए, कब ले ज़ाएंगे ? आपने कहा था कि अपनी बहन से दोस्ती करवा देंगे। आपकी बहन का क्या नाम है ?''

सुतपा का प्रसंग छिड़ते ही सिद्धार्थ फिर अनमना हो उठा। उसने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप दरवाजे की तरफ बढ़ गया। केया भी उसके साथ दरवाजे तक आयी।

केया की तरफ देखते हुए सिद्धार्थ ने मुस्करा कर कहा, "अभी थोड़ी देर पहले हम दोनों ने यह तय किया था कि हम एक-दूसरे को 'तुम' कहेंगे। लेकिन 'तुम' तक बात ही नहीं पहुंची–''

–हां....अगली बार मुलाकात हो तो तुम्हें 'तुम' ही कहूंगा।

–अब कब आएंगे ? कल ? अच्छा, नहीं ! कल शाम को तो हम लोग घर पर नहीं रहेंगे। परसों पक्का रहा।

सीढ़ियां उतरते हुए सिद्धार्थ को कोई अप्रिय-सा ख्याल परेशान कर गया। वह चाहकर भी अपने को मुक्त नहीं कर पाया। केया के बापी इतने बड़े इन्कम-टैक्स आफिसर हैं। वह भी क्या ऐसे ही होंगे ? नहीं....नहीं ! ऐसा नही हो सकता। इतनी सुन्दर दुनिया ! यहां की हर चीज में जाने कैसा एक पवित्र-पवित्र भाव है, वहां केया के बापी अगर घूसखोर और बदमाश अदमी निकले तो वह हरगिज बर्दाश्त नहीं करेगा।.... लेकिन अगर सचमुच ही वह ऐसे ही निकले, तो वह क्या करेगा ? नरेश दा जैसा बता रहे थे.... अगर सचमुच ही वैसी कोई क्रान्ति छिड़ गयी, तो क्या केया के बापी को भी ?–

अन्तिम सीढ़ी पर कदम रखते हुए, सिद्धार्थ की आंखें इस कल्पना में डूबी रहीं–कलकत्ते की सड़कों पर भयंकर हलचल मची हुई है। चारों तरफ काफी उत्तेजना फैल गयी है। लोग बेतहाशा भाग रहे हैं। उनका पीछा करती हुई खट्-खट् बूटों की आवाजें ! जाने कौन उस भागती हुई भीड़ का पीछा कर रहा है ? धांय-धांय करती हुई आग की भयंकर लपटें ! तेज चीत्कार और जली हुई लकड़ी की गन्ध।....

....सिद्धार्थ भी एक नीले रंग का कोट पहनकर दौड़ रहा है। उसके हाथ में बन्दूक है....उसकी आंखों से शोले बरस रहे हैं। वह अकेले ही सबसे बदला लेगा। उसने कल्पना की दुनिया-भर के काले-बाजारियों और घूसखोरों को उसने एक लाइन में खड़ा कर दिया है और उन्हें शूट कर देने के लिए अपनी बन्दूक उठा ली है। लेकिन इन्हीं लोगों में अगर केया का बाप भी मुंह पर चूना पोते, लाइन में खड़ा हो, तब वह क्या करेगा ?....सिद्धार्थ ने दांत पीसते हुए, अपने कंधे झटक दिए। उसने सोचा....चाहे केया का बाप ही क्यों न हो, उस वक्त वह किसी से भी रियायत नहीं करेगा। सीधे गोली से उड़ा देगा।....लेकिन केया का बाप अगर मिन्नतें करे ? अगर कहीं केया ही उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ पकड़ ले और कातर आवाज में आग्रह करे, "सिद्धार्थ दा....तुम मेरे बापी को....' तब ? अरे, धत् ! जिस क्रान्ति का अभी कोई नामोनिशान नहीं....उस बारे में वह बेकार ही परेशान हो रहा है।

....सिद्धार्थ के दिमाग से वह दृश्य हटाए नहीं हट रहा था। उसने अपनी कल्पना में ही कोई मामूली-सा करिश्मा कर दिखाया और केया के बापू को हटाकर उसकी जगह अनन्त सान्याल की तस्वीर फिट कर दी, और बन्दूक से गोली छूटी–दुम ! दुडुम !!

5

उन दिनों बापू जिन्दा थे। पूजा की छुट्टियों में सिद्धार्थ घरवालों के साथ देवघर घूमने गया था। उन लोगों ने बम्पास टाउन में डेढ़ महीने के लिए पूरा एक मकान ही किराए पर ले लिया था। पिछले साल की ही तो बात है, इसी बीच लगता है जिन्दगी कितनी बदल गयी। उस वक्त टूनू बिल्कुल बच्चा था। काफी डरपोक भी था। रास्ते में कहीं कोई सांड़ देखते ही वह अपने बड़े भइया से लिपट जाता था। किसी गहरे कुएं में झांकने तक की हिम्मत नहीं थी, उसका सिर चकराने लगता था। टूनू का चेहरा भी कितना भोला-भाला और प्यारा था। उसके यहां आनेवाला कोई भी नया आदमी, टूनू को देखते ही तारीफ करता था, 'वाह ! बेहद प्यारा बच्चा है ! एक बार राह चलते हुए कई फिल्मवालों की नजर टूनू पर पड़ गयी। उसे देखकर वह इस कदर मुग्ध हो गये कि वह लोग घर पर भी मिलने आए थे और उसे फिल्म में लेने का प्रस्ताव किया था। खैर, बापू ने तो टूनू एकदम से 'ना' करके, उसका प्रस्ताव रद्द कर दिया था।....वही अब हैण्ड-बम बनाता है....

सुतपा उन दिनों फ्रॉक पहनती थी। कितनी बीहड़-शरारती और नटखट थी ! अदम्य उत्साही !! पल-भर के लिए भी चुपचाप नहीं बैठती थी। देवघर में भी उसका वही हाल था..भरी दोपहरी में शरीफे के पेड़ पर चढ़ गयी। अचानक बन्दर पर नजर पड़ी तो डर के मारे पेड़ की डाल समेत धड़ाम से नीचे आ गिरी और पांव तोड़ लिया था।....उसके पांवों का दर्द जब किसी तरह भी कम नहीं हुआ तो उन्हें फौरन कलकत्ता लौटना पड़ा था। उन दिनों सुतपा शरीर से भी दुबली-पतली मरगिल्ली-सी थी ! सिर पर झउआ भर बाल ! हिरन की तरह कुलांचें भरा करती थी। बापू कहा करते थे, मेरी बेटी असल में लड़का था, ऐन मौके पर गलती से लड़की बनकर पैदा हो गयी। घर में जब मुर्गी काटी जाती थी, टूनू वहां से खिसक जाता था और किसी ओने-कोने में मुर्गी के दुःख में बिसूरता रहता था, लेकिन सुतपा मुर्गी काटने तक वहीं डटी रहती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी।....एक बार जब एक मुर्गी अपने दरबे से निकलकर भाग गयी, उसने और सुतपा ने उसे पकड़ने के लिए कितनी दौड़-धूप की थी....

....उन दिनों मां का चेहरा भी कुछ और था। अब तो उनको पहचानना मुश्किल है। उन दिनों माथे पर सिन्दूर की खूब बड़ी-सी बिन्दी लगाती थीं ! चौड़े किनारे वाली मूंगिया साड़ी का आंचल कमर में खोंसकर, देवघर में वह अकेले ही बाजार चल देती थीं और जरूरी सामान खरीद लाती थीं। बापू जरा ठण्डे स्वभाव के आदमी थे। मां का ख्याल था दुनिया-भर के लोग बापू को ठगने के लिए उधार खाए बैठे हैं। अगर बापू कभी कोई चीज खरीद लाते तो मां झांव-झांव करती थीं, "तुम फिर सरदारी करने गए थे ? महंगी चीज खरीद लाए ? कित्ता दाम दे आए चदरे का ? सत्ताईस रुपए ? हुंह ! दुकानदार ने एकदम से गला काट लिया। भला काटेगा क्यों नहीं ? कोई इत्ता मोटा-ताजा गला जो मिला था।''....वैसे जब वह खुद खरीदारी करतीं और बाद में यह लगता था कि उन्हें ठग लिया गया है, तब कुछ नहीं बोलती थीं.... बस, मन्द-मन्द मुस्करा देती थीं।

....वह तपू और टूनू को लेकर हर रोज नन्दन पहाड़ की सैर करने निकल जाता था। हल्के-हल्के जाड़े की मधुर बयार ! हर ओर सब कुछ इतना तरोताजा दिखता था कि लगता था धरती पर बहती हुई हवा में धूल-धक्कड़ का नामोनिशान तक नहीं है। हर सांस के साथ बिल्कुल शुद्ध-स्वच्छ हवा सीने के अन्दर तक उतर जाती थी और सब कुछ धो-पोंछकर निर्मल कर देती थी। पेड़ की पत्तियों से टपकती हुई शिशिर-बूंदें ! पांव तले ऊब-डूब करती हुई घास ! उन पर चलते हुए एक अजीब-सा नशा आता था।....

....उन दिनों को याद करते हुए सिद्धार्थ को लगा छः साल पहले देवघर के घास-फूस और पेड़-पौधों का हरा रंग कुछ अधिक चटख था। सुबह के वक्त गहरा-पीला आकाश ! लाल पत्थरों से गढ़ी हुई सड़कें बेहद उजली और साफ नजर आती थीं। इतनी साफ कि उस पर सोया जा सके। कहीं इत्ती-सी भी धूल नजर नहीं आती थी।

हर सुबह जब वह दौड़ने जाते थे, कहीं से एक काला कुत्ता भी उनके साथ हो लेता था। उस कुत्ते तक में कहीं कोई ऐब नहीं था। जब भी देवघर की याद आती है, तो उसे लगता था वैसे चटख हरे पेड़-पौधे और नीला आकाश, कम-से-कम इस जिन्दगी में नसीब नहीं होगा।

...उन दिनों उसकी उम्र कुल मिलाकर सोलह साल थी ! हायर सेकेण्डरी की परीक्षा पास करके उसने कालेज में नया-नया एडमिशन लिया था ! उन दिनों वह शरीर से भी काफी हट्टा-कट्टा और चुस्त-दुरुस्त लगता था और अपने को टूनू और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तपू से काफी बड़ा समझने लगा था। यूं वह बचपन से ही जरा गंवार किस्म का है, कहीं बाहर जाने से पहले मां बार-बार आगाह करती थी, देख, किसी से मार-पीट मत कर बैठना ! सुन लिया न ? याद रहेगा न ?'

सिद्धार्थ यूं काफी लजीला है लेकिन जब वह गुस्से में होता है या अपने को कहीं से अपमानित महसूस करता है तो वह होश खो बैठता है। अपने हम-उम्र लड़कों से उसने सैकड़ों बार मार-पीट की है, एक बार तो उसने गजब कर दिया। किसी विशालकाय पंजाबी टैक्सी ड्राइवर ने बापू से बदतमीजी से बातें कीं। सिद्धार्थ को तैश आ गया और उसने उसकी दाढ़ी पकड़ ली थी। वह पंजाबी ड्राइवर शक्ल सूरत में भी उससे डबल था। उसके हाथों में लोहे के कड़े थे और कमरे में कृपाण भी लटक रही थी। इसके बावजूद जब उसने उसकी दाढ़ी पकड़ ली, तो बापू हतबुद्धि से खड़े रह गए। उस ड्राइवर के सिर पर भी जैसे खून सवार हो गया। उसने सिद्धार्थ की गर्दन पकड़ ली। इसी बीच रास्ते में अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। बस, इस वजह से किसी तरह से उसकी जान बच गयी। बाबू ने अपने बेटे की हिम्मत पर खुश होने के बजाय और बुरी तरह डांट पिलायी थी।

....देवघर में अलसुबह वह तपू और टूनू को लेकर नन्दन पहाड़ तक टहलाने निकल जाता था। न्ना, देवघर में कभी किसी से मार-पीट या झगड़ा नहीं हुआ। सचमुच उन दिनों जिन्दगी कितनी सहज और सरल थी। नन्दन पहाड़ तक पहुंचने के लिए सीढ़ी-दर-सीढ़ी निशान बने हुए थे, लेकिन वह तीनों सीढ़ियों से न जाकर पत्थर की चट्टानों पर से होकर ऊपर चढ़ते थे। तीनों एक सांस में दौड़ लगाते थे। नुकीले पत्थरों पर कूदते-फांदते कौन सबसे पहले ऊपर पहुंच सकता है, इस बात का कम्पिटीशन लगाकर दौड़ते थे।

पहाड़ की चोटी पर से नीचे झांककर देखो तो नीली-पीली चौकोर धारियों में बंटे हुए धान के खेत ! पुल के नीचे मन्थर गति से बहती हुई नदी का उथला जल। खिलौने-जैसी रेल लाइनें ! पिछली तरफ घने काले बादलों की तरह फैला हुआ डिगरिया पहाड़ और सामने विशाल त्रिकूट पर्वत का विस्तार ! उन दिनों जीवन कितना हल्का-फुल्का लगता था। पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर, समूची धरती को अपने पैरों तले महसूस करने का सुख।

....उसी नन्दन पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर उसने पहली बार सिगरेट पी थी। इससे पहले कालेज के संगी-साथियों के बीच दो-एक कश लगा चुका था, लेकिन भाई-बहन के सामने उसने पहली बार सिगरेट पी थी। उन दिनों टूनू हाफ पैण्ट पहनता था और सुतपा फ्रॉक ! जब वह कालेज में भर्ती हुआ था, तो एक जोड़ी ट्राउजर मिले थे। उस दिन उसने वही पैण्ट पहनी थी। पैर फैलाकर पहाड़ की चोटी पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़ा हो गया था और एक-हाथ अपनी पैण्ट की जेब में डाले हुए और दूसरे हाथ में सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए उसके चेहरे पर अजब-सा सुख भाव तैर गया था, मानो वह इससे धरती का एकमात्र आजाद व्यक्ति है।

सुतपा चिल्ला उठी थी, "दद्दा, फौरन सिगरेट फेंक दो ! फौ-रन ! बापू आ रहे हैं।"

सिद्धार्थ ने हड़बड़ाकर सिगरेट फेंक दी थी। सुतपा हंसते-हंसते बेदम हो गयी थी, "क्यों ? कैसा चरका दिया ? मजा आया ? दद्दा, बापू का नाम सुनते ही तेरा तो चेहरा ही सूख गया था।'

सिद्धार्थ उसके माथे पर गद्दा जमाने के लिए उसके पीछे दौड़ गया था।

...उसे देवघर की तमाम बातें एक-एक करके याद आ रही थीं। अब तो उसे अपना शरीर भी पहले जैसा हल्का-फुल्का नहीं लगता। वह अपने कंधों पर हर वक्त एक बजनी बोझ महसूस करता है। जब वह अकेला होता है, उसका चेहरा विकृत हो उठता है। मां, सुतपा, टूनू, छोटे कक्का–इन लोगों की कोई समस्या उनके मन को परेशान किए रहती है, मानो इन्हें हल करने की पूरी जिम्मेदारी सिर्फ उसी के सिर पर हो। लेकिन वह किसी के लिए चाह कर भी कुछ भी नहीं कर पाता। उसके पास तो कोई नौकरी भी नहीं है। कहीं से एक पैसे की आमदनी की भी गुंजाइश नहीं है। उसका तो अपना हाथ-खर्च चलाना भी मुश्किल है। हाथ खर्च के लिए मां के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। उसे मालूम है कि बापू की रॉयल्टी के पैसों के बावजूद गृहस्थी का असली खर्च सुतपा ही चला रही है। सिद्धार्थ निकम्मा और बेकार होने के अलावा और कुछ नहीं है। लेकिन फिर भी वह अपने कंधों पर इतनी सारी जिम्मेदारियों का बोझ क्यों महसूस करता है ?

अभी थोड़ी देर पहले, सुबह-सुबह ही टूनू और सुतपा में एक दौर झगड़ा हो चुका है। सोनारपुर में टूनू की पार्टी का कोई कांफ्रेंस हो रहा है, टूनू भी वहां जाना चाहता था। ट्रेन के किराए और खाने-पीने के खर्च के लिए उसे बीस रुपयों की जरूरत थी। उसने मां से रुपये मांगे तो उन्होंने साफ जवाब दे दिया कि उनके पास रुपये नहीं हैं। वह छोटे कक्का से कभी रुपये नहीं मांगता, चाहे उसकी जिन्दगी का ही सवाल क्यों न हो ! उसका ख्याल है छोटे कक्का, अमीरों के पक्के दलाल हैं। सिद्धार्थ की हालत उसे मालूम है। कई बार वह खुद ही सिद्धार्थ के सन्दूक का सामान उलट-पुलटकर खानातलाशी ले चुका है। सुतपा से पैसे मांगने गया, उसने संक्षेप में 'ना' कहकर लौटा दिया।

टूनू भी दबनेवाला लड़का नहीं है ! उसने भी सुतपा की साड़ी, लिपिस्टिक और सेण्ट की शीशियों की बात उठायी और उसे कोंचते हुए कहा, "इन सब बेकार की चीजों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में पैसे बर्बाद कर सकती है और मुझे एक जरूरी काम के लिए....''

सुतपा ने तल्ख आवाज में जवाब दिया, "तेरे जरूरी काम से मुझे क्या मतलब ?''

बस्स, तुन्न-मुन्न शुरू हो गया !

उस वक्त सिद्धार्थ बगल वाले कमरे में बैठा-बैठा निर्विकार भाव से उनकी बातें सुनता रहा। आज उन्हें रोकने का भी मन नहीं हुआ। काश, इस वक्त वह टूनू के सामने बीस रुपये फेंक सकता या सुतपा को ही एक जोर की डांट पिलाने लायक नैतिक साहस जुटा पाता।

टूनू और तपू कैसी गन्दी जुबान में झगड़ रहे थे.....सिद्धार्थ को लगा, इसके लिए भी वही जिम्मेदार है। उसके ही किसी दोष की वजह से इस घर का माहौल विषाक्त हो गया है।

अच्छा, क्या सचमुच वही अपराधी है ? असल में बापू ने ही उसे इस मुसीबत में झोंक दिया। जितने दिन वह जिन्दा रहे, सिद्धार्थ को इस बात का ख्याल भी नहीं आया कि कभी उसे उस घर की चिन्ता-फिक्र करनी होगी। जैसे हर रोज सूरज उगता है, धरती घूमती है, वह मां-बापू के बारे में इतना निश्चिन्त था कि उनके जीने-मरने की सम्भावना को लेकर कभी परेशान नहीं हुआ। उसने सोचा था, बेहद स्वाभाविक तरीके से वह भी किसी दिन डाक्टर बन जाएगा, विलायत से डिग्री लेकर लौटेगा। वैसे विलायत में बस जाने की बात उसके मन में कभी नहीं आयी। उसने सोच लिया था, वह कहीं एक जगह टिक कर नहीं रहेगा, समूचा हिन्दुस्तान घूमेगा और बीमारों की सेवा करेगा ! वह जब जिस शहर में कदम रखेगा, लोगों में हलचल मच जाएगी—डॉ० सिद्धार्थ राय चौधरी आए हैं। वह गरीबों का मुफ्त इलाज करेगा, लेकिन अमीरों और दौलतमन्दों के मामलों में एक पैसे की रियायत नहीं करेगा। बल्कि डबल-डबल फीस वसूल करेगा। तपू या टूनू क्या करेंगे या बापू-मां कहां रहेंगे, इस बारे में उसने कुछ नहीं सोचा था। उसे लगा था, हर इंसान की जिन्दगी बिल्कुल अलग-अलग होती है। वह भी अपनी जिन्दगी की कोई अलग राह खोज लेगा।....पहाड़ की ऊंची चोटी पर बसा हुआ सफेद दीवारोंवाला उजला धुला अस्पताल ! लोहे का विशाल गेट, जरूरतमन्दों के लिए—हर वक्त खुला हुआ, पहाड़ी औरत-मर्द कतारों में चले आ रहे हैं....सिद्धार्थ खुद ही हर मरीज की परीक्षा कर रहा है। अपने हाथों से किसी के जख्मी पांव पर पट्टी बांध रहा है....सिद्धार्थ को ये कल्पनाएं बेहद प्रिय थीं। अक्सर वह उन दिनों के सपने देखता था, जब वह प्रौढ़ हो चुका होगा ! सिर पर अधपके बाल, आंखों पर काले रंग का मोटे फ्रेमवाला चश्मा ! उसकी इस कल्पना के संसार में उसके अलावा और कोई नहीं था। टूनू, तपू, बापू-मां—कोई नहीं ! मानो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन लोगों को वह जानता-पहचानता भी नहीं ! उस दुनिया में वह अकेला होता है—इतना अकेला कि.... । न्ना ! उसने लड़कियों के बारे में कभी नहीं सोचा ! वह कभी ब्याह करेगा या नहीं या उसकी बीवी कैसी होगी, इस बारे में भी उसने कभी कोई तस्वीर नहीं बनायी । हां, उसके हम-उम्र दोस्तों ने जब लड़कियों के बारे में चटखारे ले-लेकर बातें कीं, उसने भी साथ दिया है । अपनी कल्पना में भी उसने साथ दिया है । अपनी कल्पना में उसने भी लड़कियों को न्यूड देखा है । कभी-कभी तो किसी लड़की को छूने की तीखी चाह जाग उठी है—लेकिन, उसने किसी पर अपना अधिकार नहीं चाहा । किसी को अपनी जिन्दगी से जोड़ लेने का ख्याल उसे कभी नहीं आया ।

....लेकिन केया से परिचय होने के बाद उसके मन में एक नया अहसास जगा है । जब वह केया से मिलता है, उसके साथ होता है, वह जैसे बिल्कुल बदल जाता है ! देवघर में बिताए गए हल्के-फुल्के दिनों की तरह उसका तन-मन भी बेहद हल्का हो आता है, मानो उसकी जिन्दगी उनसे बिल्कुल अलग है ! वह बिल्कुल आजाद है, उसके मन पर कहीं, किसी तरह का बोझ नहीं है । वह जो चाहे कर सकता है । केया के पास रहकर उसने एक और नयी बात महसूस की है, मानो वह केया के काबिल नहीं है । हालांकि केया के व्यवहार में बेहद सरलता और अपनापन है, लेकिन सिद्धार्थ को कहीं इस बात का भी हल्का-सा आभास है कि वह जो उससे बात करती है, पास बैठने का हक देती है, उसकी बात-बात पर खिलखिलाकर हंसती है—इन सब के पीछे कहीं दया का भाव निहित है । ऐसा लगता है मानो वह उस पर दया कर रही है । अगर कभी कोई उसे डांट दे, 'तुम यहां क्यों आते हो ? किस हक से इतनी-इतनी देर बैठे रहते हो । चलो, फूटो यहां से ।' तो ?....

उससे कोई जवाब देते नहीं बनेगा । वह अपना कोई हक साबित नहीं कर पाएगा । उसे सिर झुकाए हुए वापस लौट आना होगा । यूं वह दुनिया में किसी से नहीं डरता, किसी भी ताकत के खिलाफ वह तन कर खड़ा हो सकता है, लापरवाही से कह सकता है, 'अरे, जाओ ! जाओ !! तुम जैसे बहुत देखे हैं ।' लेकिन वही सिद्धार्थ केया के सामने अपने को बिल्कुल नाकाबिल और असहाय महसूस करता है । ऐसे क्यूं होता है ? इन सब बातों का वह कोई जवाब नहीं खोज पाता है ।

...देवघर में रात के वक्त आसमान में कित्ते सारे तारे चमकते थे । मेघहीन, साफ, नीला आकाश ! हजारों-करोड़ों सितारे एक-दूसरे में गुंथे हुए। कलकत्ते के आकाश में एक साथ इतने सारे सितारे उसने कभी नहीं देखे । अचानक उसके मन में एक सवाल उठ खड़ा हुआ, देवघर में उसने आकाश का जो गहरा नीला और उजला भूरा रंग देखा था, वहां क्या अब भी वैसा ही आकाश होगा या सिर्फ सोलह साल की उम्र में ही वह सब रंग दिखाते हैं ? उसके बाद जिन्दगी आहिस्ते-आहिस्ते घूमिल बदरंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ जाती है ? अपने इन सवालों का उसे कभी कोई जवाब नहीं मिला। अचानक उसने अपने को झटक दिया—धत्तेरे की ! सब बेकार की बकवास है।

6

सिद्धार्थ के नाम बदामी रंग का एक लिफाफा आया है। चार महीने पहले उसने जिओलॉजिकल सर्वे विभाग में फील्ड-एसिस्टैण्ट की पोस्ट के लिए एप्लाई किया था। उसी के जवाब में कल इण्टरव्यू-लेटर आया है। कल ही खत मिला और उसके अगले के अगले दिन इण्टरव्यू है। यह खत पहुंचने में अगर एक दिन और देर हो जाती ? .... यह ख्याल आते ही उसने अपने को बर्फ की तरह जमता हुआ महसूस किया।

उसका स्वभाव ही ऐसा है। कहीं से भी इण्टरव्यू-लेटर मिलते ही वह इस कल्पना में डूब जाता है कि नौकरी उसे मिल ही गयी। दार्जिलिंग के बोटानिकल गार्डेन के सहकारी-सुपरिन्टेन्डेण्ट की जगह के लिए दरख्वास्त भेजने के साथ-साथ ही उसने यहां तक सोच लिया कि उसका क्वार्टर कैसा होगा ? जब वहां से इण्टरव्यू के लिए बुलावा आया था, वह गर्म कपड़ों के इन्तजाम के लिए परेशान हो उठा ! उस बार तो उसे इण्टरव्यू भी नहीं देना पड़ा। अगले दिन उन लोगों का एक खत मिला था, जिसमें किसी अज्ञात कारणवश इण्टरव्यू रद्द होने की सूचना थी। इसी तरह सिद्धार्थ अपनी कल्पना में, कभी पुरुलिया जाकर आफिसर बन गया है कभी बैरेकपुर, डलहौजी या न्यू अलिपुर में आफिस खोल चुका है....लेकिन आज तक कहीं से भी उसे नियुक्ति-पत्र नहीं मिला। हालांकि, उसमें किस बात की कमी है, यह किसी ने भी नहीं बताया। उसके पास अच्छी-भली सेहत है, हायर सेकेण्डरी की परीक्षा में गणित में लेटर मिला था। बी॰एस-सी॰ में हाई सेकेण्ड-क्लास आनर्स मिला था, लेकिन किसी ने भी उसकी इन डिग्रियों का ख्याल नहीं किया। इण्टरव्यू में भी एक-दो साधारण बातों के अलावा कोई सवाल नहीं किया।

इस बार भी खत मिलते ही उसको दृढ़ विश्वास हो गया कि उसे यह नौकरी मिल ही जाएगी। उसे बहुत दिनों तक इंतजार करना पड़ा है—लगभग डेढ़ वर्ष ! इतने दिनों बाद भी नौकरी न मिलने की कोई वजह नहीं है। खैर, नौकरी मिलते ही सारी मुसीबतें खत्म हो जाएंगी और यह नौकरी तो बिल्कुल पक्की है, मिल ही जाएगी। सिद्धार्थ की आंखें स्पष्ट देख रही थीं....वह बरसाती ओढ़े हुए और पैरों में गम-बूट पहने हुए कीचड़-मिट्टी की रपटीली राहों से होकर बंगाल प्रान्त के मैदानों में चक्कर लगा रहा है। दो सौ दस रुपये की शुरुआत है ! खैर !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इण्टरव्यू साढ़े नौ बजे से शुरू होगा। घर से साढ़े आठ पौने नौ बजे चल देना होगा। भात खाकर जाने का वक्त निकल चुका, मां ने उसके लिए पूड़ियां उतार दीं। सिद्धार्थ के पास कोई धुली हुई शर्ट भी नहीं थी, टूनू से उधार लेनी पड़ी। टूनू को कपड़े-लत्तों के बारे में कोई शान नहीं है। लाल-काली चौकोर धारियोंवाली शर्ट में वह सात-सात दिन निकाल देता है। उजली धुली हुई, सफेद शर्ट तो वह पहनना ही नहीं चाहता !

उसकी धुली हुई सफेद शर्ट काफी दिनों से उसके पास यूं ही पड़ी थी।

टूनू ने हल्के-से मजाक के लहजे में कहा, "क्यों, भाई, आज तू बेहद खुशश-खुशश नजर आ रहा है। ऐसे थर्ड रेट और बेकार किस्म की नौकरी पर...."

–अबे, जा-जा ! यह भी आजकल किसे नसीब होती है ?

–तेरी जगह मैं होता, तो ऐसी सरकार के अण्डर में हरगिज नौकरी नहीं करता।

–तो क्या करता ? खाने-पहनने का खर्च आखिर कहां से जुटाएगा ?

–हुंह, खाने-पहनने का खर्च नहीं भी चला पाया, तो भी कोई परवाह नहीं।

–ठीक है। इस बार तू पास हो जा, फिर देखूंगा।

–मैं अगर पास हो भी गया तो तेरी तरह आंटे का लोंदा नहीं बनूंगा।

–टूनू ! देख रहा हूं, आजकल तेरी हिम्मत बहुत बढ़ गयी है। अभी एक ऐसा थप्पड़ रसीद करूंगा कि....

टूनू सहम जाने के बजाय जोर से हंस पड़ा। उसने हंसते हुए कहा, "अरे, दद्दा, तू इत्ता बिगड़ क्यों रहा है ? मेरे कालेज के यार-दोस्त जो कहते हैं, वह मैंने तेरे सामने बक दिया। उन लोगों का कहना है, तेरा भाई किसी जमाने में पार्टी के लिए काफी काम करता था, अब सब छोड़-छाड़कर, बिल्कुल कन्नी काट गया।"

–अच्छा किया। बहुत ठीक किया। हुंह, अपनी पढ़ाई तक का खर्च चलाने की औकात नहीं है, ऊपर से बड़ी-बड़ी बातें बनाता है। घर की जो हालत है, उस बारे में कोई चिन्ता नहीं–

–अरे, रे, रे। सुबह तू इतना गुस्सा करेगा, तो तेरा इण्टरव्यू खराब हो जाएगा, भाई ! देख, साढ़े-आठ बज गये, तू अब फौरन चल दे–

घर से निकलते हुए मां ने ठाकुर जी को चढ़ाए हुए कुछेक सूखे फूल और बेलपत्र जबर्दस्ती ही उसकी जेब में ठूंस दिए। सिद्धार्थ इन सब बातों पर विश्वास नहीं करता, लेकिन मां से बहस करने का न अभी वक्त है, न फायदा; ठीक है, उसे रास्ते में फेंक देगा। मां को खुश करने के लिए उसने झुक कर उनके पांव छू लिए। छोटे कक्का दरवाजे पर खड़े-खड़े किसी से बातें कर रहे थे, अतः किसी अजनबी के सामने उन्हें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झुककर प्रणाम करने का मन नहीं हुआ।

जब वह इण्टरव्यू देने पहुंचा तो साढ़े नौ बजने में दस मिनट बाकी थे। उसने देखा दफ्तर के आगे लोगों की बेशुमार भीड़ इकट्ठी है। कम-से-कम पौने तीन सौ अप-टु-डेट नौजवान लड़के फिटफाट कपड़ों में इधर-उधर टहल रहे थे। आफिस के सामने लम्बी-सी गैलरी थी। वहीं तीन बेंचें पड़ी हुई थीं। उन पर करीब अठारह-उन्नीस लड़के ठसाठस भरे हुए थे, बाकी सब खड़े थे। बहुत लड़के लॉन में गप्प लगा रहे थे। रात बारिश हुई थी। लौन में इधर-उधर पानी जम गया था। अत: वहां भी बैठने की कोई जगह नहीं थी। ये तमाम लोग नौकरी के लिए आए हैं, लेकिन किसी के चेहरे पर किसी तरह की घबड़ाहट नहीं थी। सब हंसी-मजाक में मशगूल थे, मानो वह सज-धजकर किसी दावत में शरीक होने आए हों !

ठीक साढ़े दस बजे एक क्लर्कनुमा आदमी बाहर निकला और उसने लड़कों का नाम पुकारना शुरू किया ताकि यह अन्दाज लगाया जा सके कि कितने लड़के इण्टरव्यू के लिए मौजूद हैं। दो सौ इक्यानवे में से सिर्फ सत्तर लड़के गैरहाजिर थे। सिद्धार्थ की बदकिस्मती कि उसका नम्बर एक-सौ तिहत्तर था, यानी उसे काफी देर इंतजार करना होगा।

कई लड़कों ने समवेत स्वर में उस क्लर्क को आवाज देकर दरियाफ्त किया, "भाई साहब, एक बात तो बताइए, सिर्फ चार आदमी ही लिए जाएंगे न ? फिर आप लोगों ने इतने लड़कों को क्यों बुला लिया ?"

क्लर्क ने एक गाल हंसकर कहा, "यह बात आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं, जनाब ? हम लोग तो चूने की बोरी हैं। जो हुक्म हुआ–"

दूसरे लड़के ने पूछा, "भाई साहब जरा, अन्दरूनी खबर छोड़िए न ! आदमियों का चुनाव पहले ही हो चुका न ? अगर, सच-सच बता दें, तो हम लोग बेकार अपना वक्त खराब न करें ! यहां से फूट लें।"

वह क्लर्क उनकी तरफ क्रुद्ध आंखों से देखते हुए, जाने क्या सोचता रहा, फिर फुसफुसाकर कहा, 'देखिए, जहां तक मुझे पता है, चुनाव नहीं हुआ ! समझे ! हमारे बड़े साहब बड़े सत्रत किस्म के आदमी हैं। मेरा अपना एक कैंडिडेट भी था, लेकिन सिफारिश की हिम्मत नहीं पड़ी।"

भीड़ के शोरगुल को चीरते हुए किसी ने ठहाका लगाकर पूछा, "मां कसम, यह सब ड्रामे बहुत देख चुका हूं। अब अपना ड्रामा शुरू करने में क्या हर्ज है ?"

धीरे-धीरे दफ्तर के अन्य कर्मचारी भी आ पहुंचे। उन्होंने नौकरी के लिए आए हुए प्रत्याशियों की तरफ करुणा-भरी नजर से देखा और फिर आपस में रहस्यमय इशारे करते हुए अन्दर चले गये। कुछेक महिलाएं भी आयीं और सिर झुकाएं हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्दर चली गयीं। इण्टरव्यू ठीक ग्यारह बजे शुरू हुआ।

सुबह-सुबह ही सूरज अतिशय निर्मम हो उठा है। नौ बजे से ही आग बरसाने लगता है। बहुत से लड़कों के हाथों में अखबार था। उन्होंने उसे छतरी की तरह अपने माथे पर ओढ़ लिया। सिद्धार्थ खाली हाथ आया था। उसे गर्मी की परवाह नहीं थी, लेकिन पसीने की वजह से उसकी शर्ट का कॉलर, कंधे भीग रहे थे, अतः उसे यह भय हो आया कि वह इण्टरव्यू के वक्त स्मार्ट नहीं दिखेगा। यह नौकरी उसे जैसे-तैसे लेनी ही होगी। काफी देर से खड़े-खड़े उसके पांव दर्द करने लगे, अतः पोजीशन बदलने के लिए वह कभी एक-पैर पर खड़ा होता, कभी दूसरे पर।

इण्टरव्यू में हर आदमी को तीन-चार मिनट का समय दिया जा रहा था। सिद्धार्थ की समझ में नहीं आया कि दफ्तर वाले इतने सारे लोगों का इण्टरव्यू एक ही दिन में कैसे निपटाएंगे। उसे यह बात भी उलझन में डाल गयी कि इतने सारे लोगों में से कुल चार आदमियों का चुनाव आखिर किस आधार पर किया जाएगा। सब के पास बी०एस-सी० की डिग्री थी। सब के सब तन्दुरुस्त और स्मार्ट दिख रहे थे। टुकड़ों-टुकड़ों में जो बातें सुनाई दे रही थीं, उनके अनुसार उनमें से कुछेक के पास एम०एस-सी० की डिग्री भी थी। सिद्धार्थ को गुमान था कि उसकी सेहत अच्छी है, लेकिन यहां जितने लड़के जमा हैं, उनमें कम-से-कम एक लड़के की सेहत, उससे कहीं बेहतर है। इस बात को स्वीकार करने को वह मन-ही-मन विवश हो गया। अब उसे चांस कहां मिलेगा ? लेकिन नहीं, उसे किसी न किसी तरह यह नौकरी लेनी ही होगी। उसने धीरज से काम लेना बेहतर समझा और अपने पुकारे जाने की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

एक-एक करके तमाम लड़के अपना नाम पुकारे जाने पर, कमरे में दाखिल होते और पल-भर में लौट आते थे। सबके चेहरों पर अजब-सी बदहवासी झलक रही थी। अन्दर ही अन्दर निराश होते हुए भी कोई अपने चेहरे से यह जाहिर नहीं होने देना चाहता था। सबके चेहरों पर ऐसी हंसी थी, मानो सवालों का ताबड़तोड़ जवाब देकर, इन्टरव्यू-बोर्ड को घायल कर दिया हो। अब वह लोग उन्हें नौकरी दिये बिना कहां जा सकते हैं ?

शुरू-शुरू में एक-दो लड़कों के बाहर निकलते ही लड़कों के झुंड ने उन्हें घेर लिया। क्या-क्या पूछा ? कैसे सवाल पूछ रहे हैं, भाई साहब ? पढ़ाई की कोई बात या सिर्फ जरनल-नॉलेज ? आज के अखबर को किसी न्यूज के बारे में तो....?'

काफी देर से कुछ लड़कों का ध्यान एक खास लड़के की तरफ आकृष्ट हो रहा था। उस लड़के ने निहायत लापरवाह लहजे में कहा, 'हुंह ! बेकार के अंट-संट सवाल ! अरे भाई, उन लोगों में एक मद्रासी साहब भी बैठा है न ! वही ज्यादा फटफटा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहा होगा। इन सालों की तो अंग्रेजी भी अच्छी तरह समझ में नहीं आती, सिर्फ अण्डाई, मण्डाई–''

–उन लोगों ने क्या-क्या पूछा, बताइए न !

–उन्होंने पूछा, बॉन कहां की राजधानी है ? मैंने बता दिया–जर्मनी।

–अरे, सिर्फ जर्मनी बताकर रह गये ? पश्चिमी जर्मनी बताना था।

–देखिए, मुझे सिखाने की कोशिश मत कीजिए ! मुझे शिक्षा देने की जरूरत नहीं है। मैंने जो कहा, ठीक कहा।

–और ? और ?? और ???

–उसके बाद पूछा रायगंज कहां है ? बंगाल के किसी जिले में है ? मैं सोच ही रहा था कि उस मद्रासी के बच्चे ने खींसे निपोरते हुए कहा, "जर्मनी की खबर रखते हो, लेकिन बंगाल के बारे में नहीं जानते ?''– मैंने भी उसके चेहरे पर एक सवाल थूक दिया , "बंगाल में रायगंज नामक तीन अलग-अलग जगह हैं। आप किस जगह के बारे में पूछ रहे हैं ? डू यू नो, हुगली जिले में भी रायगंज नामक एक जगह है ?''

–अच्छा ? वैसे सारे सवालों का जवाब अंग्रेजी में देना होगा न ? भाई, काम तो बंगाल के गांवों में करना है....अंग्रेजी को क्या धो-धोकर पीयेंगे ?

सिद्धार्थ के हाथ-पैर ठण्डे होने लगे। अंग्रेजी की वजह से नहीं....अंग्रेजी में बातचीत तो वह किसी तरह चला लेगा, लेकिन रायगंज कहां है ? इस जगह का नाम तो खैर, सुना है, लेकिन यह ठीक किस जगह है ? बौकुड़ा में या पश्चिमी दिनाजपुर में ? कहीं मालदेह में तो नहीं है ? इसका सही-सही जवाब क्या वह किसी से पूछ ले ? लेकिन उससे भी रायगंज के बारे में ही पूछा जाएगा, इसकी क्या गारन्टी है ? उफ ! क्या मुसीबत है ? उसने यह सब पांचवी-छठी क्लास में भूगोल की किताब में पढ़ी थी। उसके बाद जरूरत ही कहां पड़ी ? खैर वह कह देगा कि अगर नौकरी में इसकी जरूरत पड़ी, तो वह अनायास ही नक्शा देखकर जानकारी प्राप्त कर सकता है।

धीरे-धीरे इन्टरव्यू का समय घटता गया। हर कोई अन्दर जाता और एकाध मिनट में ही लौट आता और एक झटके से बाहर निकल जाता था, अच्छा, सच ही क्या किसी को चुन लिया गया ? नहीं, नहीं, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। सिद्धार्थ अन्दर जाकर उन्हें समझाने की कोशिश करेगा, उसे इस नौकरी की सख्त जरूरत है। इस नौकरी के बिना उसका काम नहीं चल सकता। यूं उसके पास हर तरह की योग्यता भी है। वह खूब मन लगाकर काम करेगा। हो सकता है, और लोगों के पास भी ये तमाम योग्यताएं हों, लेकिन इस नौकरी की उसे ही सबसे अधिक जरूरत है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

....धूप भी क्रमशः असहनीय हो आयी। हद है ! इतने सारे लड़कों को बुला लिया, लेकिन उनके बैठने का कोई का इन्तजाम नहीं किया। जब कभी वह काफी देर के लिए घर से बाहर रहता है, उसे जोरों की भूख लग आती है।

दूसरों की देखा-देखी वह भी लगातार सिगरेट फूंकता रहा। खाली पेट में मानो हवा भर गयी हो। लगता है, पेट के भीतर कोई कल-पुर्जा नहीं है, वहां सिर्फ एक वीरान गुफा है।

एक का घण्टा बजते ही आधे घण्टे के लिए टिफिन की घोषणा की गयी; इन्टरव्यू-बोर्ड के मेम्बर खाना खाने जायेंगे। सिद्धार्थ रास्ता पार करके, आलू-मटर चाट बेचनेवाले के सामने जा खड़ा हुआ। पल-भर को उसका मन हुआ कि वह घण्टे-दो घण्टे के लिए कहीं घूम-फिर आए। उसका नाम पुकारे जाने में अभी काफी देर है। लेकिन उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसके मन में कहीं यह उम्मीद भी थी कि हो सकता है, बाकी लोगों को छोड़कर अलग से उसी का नाम खास तौर से पुकारा जाए।

....हो सकता है उसकी दरख्वास्त देखते ही वह लोग उसे बुलाकर कहें, "तुम्हारे पास जो डिग्री और योग्यता है, तुम्हें इंतजार करने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी नौकरी पक्की है।''

सिद्धार्थ के बगल में एक और लड़का भी खड़ा था। काफी देर से वह लोगों से बातों में व्यस्त था। वह भी उसके साथ आलू-मटर वाले के सामने आ खड़ा हुआ। वह लड़का जरा हकलाकर बोलता था। सिद्धार्थ हंसी दबाकर, उसकी बातें सुनता रहा। उसने मन ही मन यह समझ लिया, इस लड़के की नौकरी असम्भव है। इतने सारे लड़कों के होते हुए, इस लड़के की नौकरी का कोई चांस नहीं है।

....लेकिन उस लड़के से बातें करते हुए, उसे दया आने लगी। उसका चेहरा बेहद सरल और दुःखी-दुःखी लगा। सिद्धार्थ सोचता रहा—क्यों हलके लोग क्या इंसान नहीं होते ? आखिर उसे नौकरी क्यों नहीं मिलेगी ? उस लड़के की पारिवारिक स्थिति जानने के बाद, वह और उदास हो आया। उस लड़के ने एम०एस-सी० में एडमिशन भी लिया था, लेकिन खर्चा नहीं चला पाया। सात-सात भाई-बहन, बीमार पिता, विधवा दीदी और उसके दो बच्चे ! इधर पांच महीने का मकान किराया चढ़ गया है। उसने ट्यूशन के लिए भी कोशिश की थी, लेकिन निभी नहीं। लड़के उसकी हंसी उड़ाते थे। उसने स्कूल-मास्टरी के लिए भी कोशिश की थी।

सिद्धार्थ को उसकी कहानी सुनकर लगा, उस लड़के को इस नौकरी की उससे ज्यादा जरूरत है। उसे कम से कम घर का किराया तो नहीं देना पड़ता। सुतपा की नौकरी के अलावा बापू की कम्पनी से रॉयल्टी के रूप में भी थोड़े-बहुत रुपये मिलते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। लेकिन बिचारा यह लड़का....।

इतनी दयनीय स्थिति के बावजूद जब उस लड़के ने आलू-मटर के पैसे दे दिए, तो वह एकबारगी अभिभूत हो उठा। उसने उसका हाथ दबाकर, उसकी तरफ देखते हुए, खुद ही दोनों के पैसे चुका दिए। उसका मन हुआ कि अगर यह नौकरी उसे मिल भी जाए तो उसे इंकार कर देना चाहिए ताकि इस लड़के को उसकी जगह ले लिया जाये।....लेकिन यह सम्भव नहीं था।

सिद्धार्थ ने अपनी तरफ से सवाल किया, "आपने इससे पहले भी कोई इन्टरव्यू दिया है ?"

लड़के ने हंस कर कहा, 'एक नहीं, बहुत से ! बहुत सारे इन्टरव्यू ! कितनी ही जगहों पर द....द....द....द....–दरख्वास्त भेज चुका हूं, कोई ठिकाना नहीं ! मेरे एक बो....बो बोन्धु क्या कहता है, जानते हैं ? वह कहता है अब और कितने दरख्वास्त टा....टा....टा–इप करेगा, बेहतर है तू एक जैसी तीन सौ प्रतियां छ....छ....छपवाले, ऊपर की थोड़ी-सी छो....छो....छोड़ देना यानि ब्लैंक रहने देना।"

–इन्टरव्यू के वक्त आपसे कहा जाता है ?

"अरे, कहेंगे क्या ? ह....ह....हकले को कोई उसके चेहरे पर हकला कहेगा ? लेकिन सब कुछ निर्भर करता है ल....ल....लक पर, समझे ? लक के अलावा और कोई चा....चा....रा...."

सामने से एक कार सर्राटे से गुजर गयी। सिद्धार्थ का कलेजा धक से रह गया। कार में टुलटुल थी न ? हां, टुलटुल ही थी। उसके साथ दो-एक सहेलियां और छोटी मौसी भी थी। केया भी उसी कार में थी। टुलटुल ने झुककर केया के कान में कुछ कहा भी था। केया ने भी पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा। इतनी दूर से क्या वह उसे देख पायी होगी ? सिद्धार्थ ने ऐसा भाव दिखाया, मानो वह बस के इंतजार में खड़ा है।

जब तीन बज गये तो इन्टरव्यू के लिए आये हुए लोगों में असंतोष की अजब-सी लहर फैल गयी। इतनी देर में सिर्फ सौ लड़कों का इन्टरव्यू लिया गया था, डेढ़ सौ प्रत्याशी अभी भी बाकी थे। इस रफ्तार से तो रात आठ-नौ बजे से पहले इन्टरव्यू खत्म नहीं होगा। सुबह नौ बजे से लोग एक पैर पर खड़े हैं। उन्हें बैठने तक की जगह नहीं मिली। सुबह जिन लड़कों के चेहरे पर जिन्दादिली की चमक थी, दिन-भर की गर्मी पसीने और थकान के मारे बुझ आये थे। इस वक्त लॉन में खड़ा होना भी असम्भव है। सब उस लम्बी गैलरी में ही जमा थे और वहां एक पंखा तक नहीं था।

इतने सारे हम-उम्र लड़के। कोई भी चुप नहीं था। चारों तरफ अजब-सी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुसफुसाहट, बीच-बीच में आवाजें तेज होकर शोर में बदल जाती थीं। शोर मचते ही अन्दर की घण्टी बज उठती थी और दो भोजपुरिया दरबान आगे बढ़कर तेज आवाज में कहते थे, आप लोगन के अइसन चिल्लाने से—साहब बोलता रहा कि सब बन्द हो जाएगा ! एक दम चुप कीजिए। मुंह मत खोलना !''

जिस कमरे में इन्टरव्यू लिया जा रहा था, एक दल लड़के उसी दरवाजे के सामने जा खड़े हुए। बीच-बीच में दोनों दरबान उन्हें लगभग धकेलते हुए पीछे हटाने की कोशिश कर रहे थे। लोगों के मन में बुरी तरह बेचैनी भरती जा रही थी। इतने सारे लोगों में सिर्फ चार लड़कों को नौकरी मिलेगी—यह बात अब और अधिक परेशान कर रही थी।

सिद्धार्थ जी जान से अपने को तसल्ली दे रहा था। उसका चेहरा गहरे अपमान से आहत हो उठा।

उसकी बगल से ही कुछ लोगों का उत्तेजित लेकिन दबा हुआ स्वर सुनायी पड़ा, "यह क्या बाप का राज समझा है, सालों ने ? लोगों से पांच-पांच रुपयों के पोस्टल-आर्डर वसूले हैं। किसी को आने-जाने का भी खर्च नहीं दिया। दोपहर के खाने पर भी पैसे बिगड़ गये। उस पर से जरा-सा बैठने तक को जगह नहीं....''

"और खुद तो मजे में पंखे के नीचे बैठे हैं और हम लोग गरमी में हलवा हो रहे हैं....''

"अब और कितनी देर सताओगे, मेरे बाप ?''

—अरे, भइया मैं इन लोगों की सारी टेकनीक जानता हूं ! देख लेना, पांच बजते ही कहा जाएगा—अब कल आना !

—अब कल दुबारा आना होगा ? हद है....उलबेरिया से किराये के पैसे खर्च करके, फिर दौड़ना होगा। साले गाड़ी का किराया तक नहीं देंगे, मजाक है क्या ?

—और क्या ? अगर किसी और को सिलेक्ट कर लिया है, तो कह दो—

—देख नहीं रहे हो, एक न एक आदमी अन्दर जाता है और लौट आता है। इनसे पूछो कि इन्टरव्यू का यह कौन-सा तरीका है ?

—साले, सूरत देखते होंगे ! लड़कियों का मुखड़ा निहारने की आदत पड़ गयी है न !

—हुंह, इससे तो बेहतर था लॉटरी खोल लेते। सारा झमेला ही खत्म हो जाता।

—सालों को बम मारकर उड़ा देना चाहिए।

सिद्धार्थ इस बात-चीत में हिस्सा नहीं ले रहा था। वह चुपचाप खड़े-खड़े उनकी बातें सुन रहा था और क्रमशः उत्तेजित हो रहा था। न चाहते हुए भी उसके चेहरे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर आवेश के सारे लक्षण उभर आए। उसकी सांस तेज हो उठी और शरीर भर के रोंए खड़े हो गए। उसकी कनपटियां तपने लगीं। ऐसे में समूचा शरीर ही उसके लिए नुकीला हथियार बन जाता है। उसका जी होता है इस हथियार से वह सब कुछ तोड़-फोड़ डाले। उसका जी हुआ वह लात मारकर एक झटके से सामने के बन्द दरवाजे खोल दे और अन्दर घुसकर धड़ाम से एक कुर्सी पटककर तोड़ डाले और हाथ में टूटा हुआ हत्था उठाए हुए तनकर खड़ा हो जाए। इस वक्त उसे यह सोचते हुए तकलीफ भी नहीं हो रही थी कि उसे नौकरी की बेहद जरूरत थी और यह सम्भावना भी धीरे-धीरे धूमिल पड़ती जा रही है।

इन्टरव्यू का सिलसिला बीच में एक बार फिर गड़बड़ा गया। लोगों का आक्रोश चरमसीमा पर पहुंच गया अब बेयरा साहब लोगों के लिए ट्रे में चाय लिए अन्दर घुसा। कुछ मिनटों के विश्राम की सूचना ! बाहर इतनी भीषण गर्मी कि टिकना मुश्किल हो गया। सभी ने मेहनत से धुली और प्रेस की हुई शर्ट पहनी थी। जो इस वक्त पसीने से भीगकर बिल्कुल बदन से चिपक गयी थी। बहुत से लोगों ने अपने-अपने शर्ट के बटन खोल दिए थे और चेहरे के सामने रूमाल घुमाकर हवा करने की कोशिश कर रहे थे।

....विद्रोह की शुरुआत हुई बेंच पर बैठने के हक को लेकर ! सिर्फ तीन बेंचों पर काफी देर से अठारह-उन्नीस लड़के ठसाठस भरे हुए थे।

एक दल लड़कों ने उनके सामने जाकर कहा, "अब आप लोग यहां से उठिए, भाई साहब, हम लोगों को बैठने दीजिए।"

शोर-गुल सुनकर तीस-चालीस लड़के इकट्ठे हो गये। जो लड़के बैठे थे वह जगह छोड़ने को राजी नहीं थे।

ये तमाम बहसबाजी और धक्का-मुक्की चरमसीमा पर पहुंचती, इससे पहले ही किसी ने खींचकर कहा, "भाई, आपस में झगड़ने से क्या होगा ? ले-देकर कुल तीन बेंचें हैं। आइए, सब मिलकर चलें और बैठने के लिए जगह मांगें ! मजाक समझ रखा है क्या ?"

एक दल पीछे हट गया, दूसरा दल आगे बढ़ आया। उनके साथ सिद्धार्थ भी गिरोह में शामिल हो गया और बन्द दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ। उसी ने दरवाजा खोलकर बेहद मुलायम स्वर में कहा, 'मे आई कम इन सर ? क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?"

सूट-टाई में चुस्त-दुरुस्त तीन प्रौढ़ सज्जन चाय की चुस्कियां लेते हुए हंसी-मजा में मशगूल थे। मेज पर कागजों के ढेर !

तीनों की हैरतभरी निगाहें सिद्धार्थ की तरफ उठ गयीं उनमें से एक ने कहा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं, अभी नहीं। अभी नहीं !! थोड़ी देर बाद। सबको बारी-बारी से बुलाया जाएगा।"

सिद्धार्थ ने दुबारा कहा, "इस वक्त हम तो कोई और दरखास्त लेकर आए थे, सर।"

–अभी नहीं ! बाद में, बाद में !

सिद्धार्थ ने देखा तीनों में से किसी ने भी हाथ नहीं हिलाया, शायद पैर से ही कौलिंग-बेल दबाया। घंडी बज उठी। क्रिंग....क्रिंग....क्रिं....। घंटी सुनते ही दरबान निकल आए और उन्हें धकेलते हुए बड़बड़ाने लगे, "भीड़ हटाइए ! भीड़ हटाइए !!"

सब के सब एकबारगी पीछे हट गये।

उनमें से एक लम्बे कद के लड़के ने उत्तेजित आवाज में चीखकर कहा– "माजरा क्या है ? हम सब क्या कुत्ते-बिल्ली हैं ? मामूली-से दरबान की ये हिम्मत कि हमें धक्का देकर निकाले ? चलिए, हम दुबारा बात करें।"

एक मोटे-से युवक ने भी उसकी बातों से सहमति जताते हुए कहा, अलबत्ता उन्हें बैठने की जगह देनी ही होगी। दरखास्त के साथ रुपए भी दिए हैं ! इस बार दरबान सालों ने चूं-चपड़ की तो उनके पेट पर ऐसी लात जमाऊंगा....'

वह लोग फिर आगे बढ़ आए ! दरबानों को जबर्दस्ती पीछे धकेलते हुए उन्होंने दरवाजा खोलकर कहा, "सर, हम सब पांच-छः घण्टों से खड़े हैं। अगर हम लोगों के लिए बैठने का इन्तजाम...."

इस बार उन तीनों में से एक साहब उठ खड़े हुए और दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे। सिद्धार्थ सीधे-सीधे उस आदमी की आंखों में आंखें डालकर एकटक देखता रहा।

सज्जन ने कड़ककर पूछा, "तुम क्या कह रहे थे ?"

–सर, हम लोग बहुत देर से खड़े हैं। कहीं बैठने तक की जगह नहीं है....

उन सज्जन ने मीठी-सी मुस्कान फेंकते हुए कहा, "भाई, इस नौकरी में इससे अधिक तकलीफ सहनी होगी। अगर तुम लोग इतनी जरा-सी तकलीफ भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हो तो....। हम लोग जान-बूझकर ही...."

–सर, खड़े-खड़े काम किया जा सकता है, लेकिन इतनी-इतनी देर बेकार खड़े रहना..."

–मैंने कहा तो, अगर तुम्हें तकलीफ हो रही हो, तो तुम....

–देखिए, सर, मैं इन तमाम लड़कों की तरफ से अनुरोध करूंगा....

उस पल सिद्धार्थ को लगा, दरअसल वह बिल्कुल अकेला है। वह दल, जो उसके पीछे खड़ा था, उन साहब के आते ही पीछे खिसक गया था। विद्रोह करने को सिर्फ वही अकेला रह गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन सज्जन ने दुबारा हंसकर कहा, "ठीक है, तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारा सीरियल नम्बर कितना है ? तुम्हें अगर बहुत असुविधा हो रही है, तो तुम्हारा इण्टरव्यू हम पहले निपटा देते हैं।"

सिद्धार्थ मन ही मन सहम गया। उसके सामने स्पष्ट हो गया कि उसके हाथों से नौकरी का सुनहरा मौका क्रमश: फिसलता जा रहा है। लेकिन उस भय की स्थिति में भी एक अजीब-सा अपेक्षा-भाव जाग उठा। उसने कहा, "नहीं, सर, मैं सिर्फ अपने लिए नहीं कह रहा हूं। मैं अपने लिए अलग से काई फेवर नहीं चाहता।"

उन सज्जन के अचानक सख्त आवाज में डांटते हुए कहा, "तो फिर जाओ, चुपचाप खड़े रहो। गोल-माल मत करो।"

उन्होंने धड़ाम से दरवाजा बन्द कर दिया। सिद्धार्थ निरर्थक क्रोध से कांपता हुआ खड़ा रहा। अचानक उसके सीने में कहीं तीखा दर्द उमड़ आया।

तमाम लोग अब तक निस्तब्ध खड़े थे। अचानक फिर कोहराम मच गया।

वह हकला लड़का सिद्धार्थ का हाथ पकड़कर खींचते हुए उसे अलग ले गया और हार्दिक सहानुभूति के लहजे में कहा 'अकेले अपको ही बो....बो....बोलने की क्या पड़ी थी ? उसने आपका चेहरा पहचान लिया, अब....?'

कई और लोगों ने भी उसके प्रति सम्वेदना जताने की कोशिश की, 'भाई साहब, आपने खुद ही अपना चांस खराब कर लिया। अब इन्टरव्यू देकर क्या करेंगे ? नौकरी मिलने से पहले ही जब आप उनके मुंह लग रहे हैं, तो उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि नौकरी मिलते ही आप यूनियन-फूनियन शुरू कर देंगे। वैसे आपने इंसाफ की बात कही थी, भाई साहब, लेकिन आप समझ ही रहे हैं, नौकरी के लिए इन सालों के तलुओं में तेल न रगड़ा तो....'

सिद्धार्थ बदहवास नजरों से इधर-उधर देखता रहा। वह दोनों लम्बे-तगड़े लड़के उनके आस-पास कहीं नहीं दिखे।

सिद्धार्थ भरपूर ताकत से चीख उठा, ऐसी नौकरी के मुंह में मैं पेशाब कर सकता हूं। उन लोगों ने समझ क्या रखा है ? अगर यह नौकरी नहीं मिली तो क्या मैं भूखों मर जाऊंगा ?'

सिद्धार्थ ने दौड़कर दरवाजें पर दुबारा धक्का दिया। दरवाजा खुलते ही तनकर खड़ा हो गया, 'यह सब फुटानी बाजी और कितने दिन चलेगी, जनाब ? शरीफ घरों के लड़के बुलाकर धूप में खड़ा कर दिया और खुद तोंद फुलाए बैठे हैं ? अब वह सब जमाना लद गया....स्साले। बहन चो....। बोका....'

कॉलिंग बेल दुबारा घनघना उठी। दोनों दरबान आगे बढ़कर उसे हाथ लगाए, इससे पहले ही उसने एक को धक्का मारकर गिरा दिया और तेज कदमों से बाहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकल गया। सामने खड़ी भीड़ को चीरते हुए वह पागलों की तरह भागता गया। किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि आगे बढ़कर उसे रोक ले। गैलरी-लॉन से होकर दौड़ते हुए उसने रास्ता पार किया और पल भर को सामनेवाले फुटपाथ पर ठहर गया। नहीं, कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है। वह खुद हांफ उठा था। उसने उस आफिस की तरफ जलती हुई निगाहों से देखते हुए जैसे अपने से ही वादा किया, "किसी दिन मैं यहां दुबारा आऊंगा। जरूर अपने से ही वादा किया, "किसी दिन मैं यहां दुबारा आऊंगा। जरूर आऊंगा !! साले, तुम्हारा ही नहीं, तुम्हारे कुल-खानदान तक का बारह बजा दूंगा, देख लेना ! अगर किसी दिन इस सालों को जान से न खत्म करूं तो...."

चौरंगी ! दोपहर का वक्त ! ट्राम-बस, कारों की दौड़ती हुई कतारें ! लोग अपने-अपने ख्यालों में खोए हुए सड़क पर आ-जा रहे थे। तिलमिलाया हुआ कुछ देर यूं ही खड़ा रहा। उसकी उंगलियों की पोर और कनपटियां मानो तप रही थीं। उसे लग रहा था, वह ढेर सार खून उगल देना चाहता है। उसकी सांसें मानो चिनगारियां बिखेर रही थीं। वह तय नहीं कर पाया कि अब वह क्या करे।....मशीनगन ! काश, इस वक्त उसे कहीं से एक मशीनगन मिल जाता तो वह घुटने टेककर बैठ जाता और दनादन गोलियां बरसाता....कट ! कट !! कट !!! सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर डालता। उस बिल्डिंग को चकनाचूर करके धूल में मिला देता ! सालों को कुत्तों की तरह....लेकिन इस वक्त वह कुछ न कर पाने की स्थिति में अशक्त है ! वह नजर गड़ाए हुए एकटक उस इमारत की तरफ देखता रहा। इतने सारे लोग सड़क पर चल रहे हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि उसके मन में कैसा भयंकर तूफान शोर मचा रहा है।

उसने घर लौटकर शर्ट-पैण्ट भी नहीं बदली, सिर्फ जूते-मोजे उतारकर, बिस्तर पर लेट गया। शाम ढलने ही वाली थी। कमरों के कोनों में अंधेरा फैलने लगा था। उसने खिड़की की तरफ निगाहें टिका दीं। पतंग उड़ाते हुए लड़कों का चहकता हुआ शोर ! और चारों तरफ शाम से विदा मांगती हुई दोपहर की आखिरी किरणों की गुलाबी आभा बिखरी हुई थी।

सिद्धार्थ तकिए में मुंह गड़ाए लेटा रहा। उसे बहुत जोर की रुलाई आ रही थी। सीने में तीखा दर्द ! उसका मन हो रहा था कि वह खूब रो ले। लेकिन बहुत दिनों से रोने की आदत छूट गयी है, अत: चाहकर भी रो नहीं पाया। समूचे दिन की थकान ने उसे गहरी नींद सुला दिया।

थोड़ी देर बाद ही मां ने उसे झकझोरकर जगाया, 'एइ, बीनू ! बीनू !! सही-सांझ क्यों सो रहा है ? क्या हुआ आज ? इन्टरव्यू कैसा दिया ?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ उनींदी आंखों से चुपचाप मां की तरफ देखता रहा। अचानक वह मां की बात सोचकर उदास हो आया। बहुत दिनों बाद, अचानक उसने दुबारा महसूस किया कि दुनिया में सिर्फ मां ही उसकी नितान्त अपनी है। मां की आवाज में इतनी छटपटाहट है। मां को वह कैसे दुःख दे पाएगा ? अचानक उसने मन ही मन कोई फैसला किया और झटके से उठ बैठा। उनसे हंसते हुए कहा, "बहुत अच्छा हुआ, मां ! नौकरी निश्चित है ! एक तरह से उन्होंने वादा किया है। बस, कुछेक हफ्तों में एप्वाइन्टमेन्ट-लेटर भी मिल जाएगा।''

अचानक उसे खिड़की से सुतपा की साड़ी का आंचल दिखाई दिया। उसे आती हुई देखकर उसने अपने गले की आवाज जरा तेज करते हुए कहा, "जानती हो, मां, कुल मिलाकर चार सौ-दस रुपए मिलेंगे। इसके अलावा टूर पर गया, तो फर्स्ट क्लास टी०ए० भी देगे। बहुत बढ़िया पोस्ट है।

मां कोई और सवाल करें, इससे पहले ही सिद्धार्थ ने हड़बड़ाकर कहा, "अच्छा, मैं जरा बाहर घूम आऊं।''

वह चप्पल पहनकर बाहर निकल गया। थोड़ी देर बेकार ही इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। अचानक वह केया के मकान के सामने से होकर गुजरा। केया ने कहा था, आज वह घर पर नहीं होगी, लेकिन उसके फ्लैट से रोशनी आ रही थी। खैर, आज वह वहां जाने के मूड में भी नहीं है।

सिद्धार्थ काफी देर इधर-उधर चहलकदमी करने के बाद शिवेन के होस्टल जा पहुंचा। उस समय शिवेन अपने कमरे में नहीं था। अपनी छोटी मौसी के यहां गया था। सिद्धार्थ का मन हुआ, वह भी वही पहुंच जाए। छोटी मौसी ने तो उससे दुबारा आने को कहा ही था। वह अपने किसी आत्मीय-स्वजन के घर कभी नहीं जाता। लेकिन शिवेन की छोटी मौसी के यहां जाना, उसे अच्छा लगता है। खैर, उस दिन के बाद तो उधर जाना ही नहीं हुआ।

आदिनाथ नंगे बदन, सिर्फ जांघिया पहने हुए खटिया पर बैठा था और अपने सामने किताबों और कागजों का ढेर लगाए पढ़ रहा था। सिद्धार्थ को देखते ही उसने राहत की सांस ली, "चल, अच्छा हुआ, किस्मत से तू आ गया है। मां कसम, दोपहर से नॉन-स्टॉप पढ़ रहा हूं, साली, आंखें जलने लगी ? चल, अब अपन थोड़ी फुर्ति करेंगे।''

आदिनाथ एक बारगी उठ खड़ा हुआ और सिद्धार्थ को अपने से चिपटाकर, उसके गालों को चूम लिया और नाचने के अन्दाज में गुन-गुनाने की कोशिश की पम्-पम्-पपम् ! पपम्-पम् ! पम् ! पम् !

सिद्धार्थ ने हंसकर कहा, "छोड़ यार ! मैं कहता हूं छोड़ दे। पागल हो गया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या ?''

आदिनाथ खुशी से उमड़ा पड़ रहा था। उसने कहा, ''हर वक्त किताबों में सिर खपाना किसको भला लगता है ? साले, तुझे भगवान ने भेज दिया। चल, जरा खुराफातें करें। आज ही घर से रुपए मिले हैं। शिव से भी कहा....''

–आदिनाथ, मैं अपनी घड़ी बेचना चाहता हूं, खरीदेगा ?

–घड़ी बेचेगा ? वा–वा–वा–वाह ! यह हुई न मेरे मनलायक बात ! लेकिन घर में क्या कहेगा !

–मुझे जो कहना होगा, कह दूंगा ! यह बता कि तू खरीदेगा या नहीं ?

–अबे, मैं घड़ी लेकर क्या करूंगा ? मेरे पास तो एक है ही, एक अपने ब्याह से वसूलूंगा। मैं तो कह रहा था, मेरी जान-पहचान की एक दुकान है। चल, तुझे अच्छी कीमत दिलवा दूंगा। चल।

उस दिन आदिनाथ खासतौर से सजने-संवरने में लगा रहा। उसने आल्मारी खोलकर धुली हुई शर्ट–पैण्ट निकाली। आईने के सामने खड़े होकर वैनिशिंग क्रीम रगड़ते हुए, दो राउण्ड नाच भी लिया। सिद्धार्थ को मुस्कराते हुए देखकर आदिनाथ ने कहा, ''आजकल मैं शीर्षासन सीख रहा हूं देखेगा ?'' कहते हुए वह एक छलांग में बिस्तर पर आ गिरा। अपना सिर नीचे करके दोनों पांव ऊपर उठा दिये और उसी पोज में कहा, 'देख ले ! देख ले, पांव बिल्कुल सीधे हैं न ? इस पोज में मैं पन्द्रह मिनट रह सकता हूं।'' थोड़ी देर तक वह अपने पांवों को हवा में हिलाता रहा, अचानक सिद्धार्थ के कंधे पर रख दिया।

''अगर तू कहे तो अपने चचेरे भाई के यहां चलूं !''

''अबे तेरे ,चचेरे भाई कहां से पैदा हो गये ? कलकत्ते में ही रहते हैं ?''

आदिनाथ ने मुंह बिगाड़कर कहा, ''साले, तू क्या समझता है, सिर्फ शिवेन की छोटी मौसी का मकान है, मेरा कोई नहीं है। यहीं फर्न रोड में चाचा रहते हैं। उसके मकान में भी कई कमसिन लड़कियां हैं। बहुत-सी लड़कियों का आना-जाना भी है। लेकिन मैं शिवेन की तरह लड़कीबाज नहीं हूं। दरअसल मैं नाते-रिश्तेदारों के घर ज्यादा जाना 'लाइक' नहीं करता।

–अबे, तुझे पसंद नहीं है, इसीलिए और किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा ? शिबू अगर...।

–अच्छा बाबा, ठीक है ! ठीक है !! लेकिन तुझे मुझ पर यह अहसान तो करना ही होगा, मां, कसम, अब मैं मास्टर खोजने कहां जाऊं ? तुझे तो गणित में लेटर मार्क्स मिले थे। अगर तू....ज्यादा नहीं हफ्ते में सिर्फ तीन दिन चले जाना। अस्सी रुपए देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–अस्सी रुपए ?

–हां, इससे अधिक वह नहीं दे पाएंगे। जानता हूं, तुझे काफी असुवधिा होगी। तेरी सारी शाम मारी जाएगी।....लेकिन....

सिद्धार्थ अस्सी रुपए का प्रस्ताव सुनकर, आदिनाथ के प्रति एक बारगी कृतज्ञ हो उठा। खासकर आदिनाथ जैसा लड़का इस मामले में इतनी तमीज से बात कर रहा है, यह बात उसे बेहद भली लगी। वह उसी वक्त अगले हफ्ते से ही पढ़ाने को राजी हो गया।

बस-स्टॉप तक पहुंचने के पहले ही आदिनाथ ने कहा, "तू अपनी घड़ी आज रहने दे। आज वक्त खराब नहीं करेंगे। मेरे पास आज ब–होत रुपए हैं, चाहे तो मुझसे उधार ले सकता है।"

चौरंगी पहुंचकर आदिनाथ एक चाइनी रेस्तरां में घुस गया और बैरे को बुलाकर इस अन्दाज में ऑर्डर दिया, मानो वहां रोज आता-जाता हो। उस वक्त कोई केबिन खाली नहीं था। लेकिन आदिनाथ केबिन के अलावा और कहीं बैठने को राजी नहीं हुआ। वह केबिन खाली होने के इंतजार में खड़ा रहा। कुछ देर बाद केबिन खाली होते ही वह अन्दर चला आया और शर्ट की बटन खोलते हुए बैर को आवाज देकर पंखे की स्पीड़ बढ़ा देने को कहा, फिर सिद्धार्थ की तरफ हंसकर देखा, "बता, क्या खाएगा ?"

–तेरा जो मन हो, लाने को कह दे।

–बता, तुझे क्या चीज अच्छी लगती है ? ह्विस्की ? ब्रॉण्डी ? रम ?

सिद्धार्थ ने अचकचा कर पूछा, "शराब ?"

–आदिनाथ ने जोर का ठहाका लगाया, "क्या बात है, रे, तू भी क्या मोरार जी का चेला है ? देख, ज्यादा बनने की जरूरत नहीं है, कौन-सी पिएगा, बता दे !"

–नहीं भाई, मैं यह सब नहीं पीता। मुझे बेहद भूख लगी है। मैं खाना खाऊंगा।

–अबे, खाना तो खैर, खाएंगे ही। उसके साथ जरा यह भी....अच्छा, सच्ची, तूने पहले कभी नहीं पी ?

–ना !

–ग्रैंड ! ग्रैंड !! ग्रैंड !!! चल, तब तो आज उस साले को दिखा दूंगा। शीबू के बच्चे को तो इतना-इतना समझाया लेकिन.... ।

–नहीं यार, सुना है बहुत गन्ध आती है। घर में कहीं मां को पता चल गया तो....

–अबे, किसी को पता नहीं चलेगा। मैं सब इन्तजाम कर दूंगा। बैरा ! बैरा !!

पहली चुस्की में सिद्धार्थ को मजा नहीं आया। कैसा अजीब-सा कडुवा स्वाद है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गले से जैसे नीचे उतरना ही नहीं चाहता, बार-बार जुबान तक लौट आता है। लेकिन आदिनाथ ने शराब के बारे में इतनी बढ़ा-चढ़ा कर तारीफ कर डाली कि ड्रिंक के लिए मना करते हुए उसे शर्म आने लगी। वह चिकेन खाते हुए बीच-बीच में सांस रोककर ड्रिंक के गिलास से भी दो-एक सिप ले लेता था।

बीच में आदिनाथ एक बार बाथरूम की तरफ गया। उसके जाते ही सिद्धार्थ ने अपनी शराब आदिनाथ के गिलास में डाल दी और अपने गिलास में सोड़ा मिलाकर बराबर कर लिया।

थोड़ी देर बाद आदिनाथ ने जब दूसरे पेग का आर्डर दिया, तो उसने साफ मना कर दिया कि अब वह और नहीं पिएगा। आदिनाथ उपेक्षा से हंस दिया, "साले, तुम लोगों के मुंह से अन्नप्रासन की महक अभी तक नहीं गयी। आखिर तू कब जवान होगा, बे ?"

आदिनाथ पीकर बहकने लगा, "जानता है बीनू, डाक्टरी पास करके सीधे विलायत चला जाऊंगा....। इस जुआचोर मुल्क में मेरे लिए कोई स्कोप नहीं है। विलायत जाकर बस जाने में ही बुद्धिमानी है। मेरा एक मौसेरा भाई करीब आठ-नौ साल से कनाडा में ऐश कर रहा है। उसने तो शादी-ब्याह भी नहीं किया। लेकिन उधर के मुल्कों में बिना शादी-ब्याह के ही....लेकिन, हां, मैं वादा करता हूं कि इस मुल्क में अगर कभी विद्रोह शुरू हुआ, तो चाहे तू लिखकर रख ले....मैं लौट आऊंगा और जंग के मैदान में कूद पडूंगा। वैसे भी इस देश में सिवाय विप्लव या दंगे-फसाद के और कुछ होने का भी नहीं, समझा ? जब तक बदन से सड़ा हुआ खून निकल नहीं जाएगा....

सिद्धार्थ जैसे उसकी बातें सुन ही नहीं रहा था। बस, बीच-बीच में हूं-हां भर कर रहा था। आदिनाथ अपने ही रौ में बहकता रहा। अचानक सिद्धार्थ को बेहद थकान लगने लगी। दोपहर वाला अपमान उसे दुबारा याद आ गया। उसका मन हुआ। वह आदिनाथ से सारी घटना बताकर अपने को हल्का कर ले, लेकिन आदिनाथ कुछ सुनने के मूड में ही नहीं था।

इस बीच आदिनाथ विलायत और विप्लव से हटकर और ही किसी विषय की तरफ बहकने लगा।....उसकी क्लास में पांच लड़कियां आती हैं। उनमें से कौन-किस वक्त उसे किस अदा से निहारती है, बातें करती हैं....उनमें से दो लड़कियां तो उसकी तरफ ऐसे गद्-गद् भाव से देखती हैं कि वह अगर जरा-सा भी बढ़े तो वह....। कुलसुम नामक एक मुस्लिम लड़की भी आती है। डाक्टरी भाषा में उसके अंगों का वर्णन करते हुए आदिनाथ के मुंह से अचानक ही निकल गया, जानता है, आज शिवेन की छोटी मौसी अपनी कार में उसे लेने आयी थी। मां कसम....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ ने उत्सुक निगाहों से आदिनाथ की तरफ देखा। आदिनाथ के चेहरे के भाव बदलते जा रहे थे। उसके मोहक चेहरे पर मानो अव्यक्त-उदासी के चिन्ह उभर आये। उसकी लाल-लाल आंखें छलछला आयीं। वह अपने बालों में कंघी की जगह बार-बार अपनी अंगुलियां फेर रहा था।

आदिनाथ ने दुःखी आवाज में कहा, "साला शीबू का बच्चा, मुझे अपनी मौसी के घर कभी नहीं ले गया, हालांकि उसके साथ मैं सातवीं क्लास से पढ़ रहा हूं। तुझे वह ले जाता है....तुझये ज्यादा प्रीत है। आज गाड़ी में उसकी मौसेरी बहन को भी देखा। क्या नाम है उसका ? सचमुच क्लास-वन माल है, देखने में ! मेम-वेम भी शरमा जाए, ऐसा दूध-धुला रंग ! ऐसी लड़कियों से अगर जरा-सी बातचीत का भी मौका मिल जाए तो अच्छा लगता है। काश, वह एक नजर इधर भी फेंक कर मुस्करा देती। लेकिन वह शीबू साला कभी मेरा परिचय भी नहीं करवाता, ऐसा खच्चर लड़का है। जानता है, उस वक्त मैं गाड़ी के बिल्कुल पास ही खड़ा था। उनके साथ एक और लड़की भी बैठी थी। घुंघराले बालों वाली ! हंसमुख चेहरा ! जानता है, उसकी हंसी कैसी लगी ? रात के अंधेरे में राह चलते हुए कभी अचानक ही-खिले हुए, गंधराज फूल पर नजर पड़ी है ? तूने अगर कभी देखा हो तो–

सिद्धार्थ ने गंधराज के फूल का रूप-रंग याद करने की कोशिश की। लेकिन उसे याद नहीं आया। अचानक उसके मुंह से एक दबा हुआ उच्छ्वास निकला, "केवड़ा तो नहीं ?''

"गंधराज न सही, केवड़े का फूल तो देखा है ? चल, वही ठीक है। लेकिन जानता है, केवड़े का फूल जरा खतरनाक होता है। उसके आसपास सांपों का उत्पात मचा रहता है। तू उस लड़की को पहचानता है ?''

–हूंऽ–

–मां, कसम, मेरी उससे जान-पहचान करवा देगा ? तू जो खाना चाहे, खिलाऊंगा। बस, तू केया से मेरी दोस्ती करवा दे।

–इतना बेसब्र क्यों हो रहा है ? तू उससे दोस्ती करके क्या करेगा ? सच, उसे देखकर इतना मन हो आया कि....

–आदिनाथ, तू जरा तमीज से बात किया कर। हर किसी के बारे में जो-सो बकने लगता है।

–अरे, अरे, तू क्यों इतना बिगड़ रहा है ? मैंने ऐसा क्या कह दिया ? सिर्फ एक चुम्बन ही तो मांगा है।

–देख, मैं तेरी जीभ खींच लूंगा। तू मुझे पहचानता नहीं है–

–जा बाब्बा। तू क्यों इतना फायर हो रहा है ? लगता है उस छोकरी से तेरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई लन्द-फन्द है। ओह-ओ! मुझसे पहले ही बता दिया होता। तो यह बात है, स्साले! देख, आदिनाथ में चाहे जितने ऐब हों, लेकिन वह यारों के माल की तरफ गलत नजर नहीं डालता। अरे, अपने यार के लिए तो मैं जान भी दे सकता हूं। ठीक है! केया अगर तेरा माल है तो–

–तू फिर बकने लगा?

–यह क्या, बउआ? अबे, औरत जात को मैं माल भी नहीं कह सकता? ठीक है! अब से मैं शुद्ध संस्कृत बोलूंगा।....केया तेरी बान्धवी है। उसके बारे में मुझे बुरी बात कहने का कोई हक नहीं है। ले, अब तो खुश्श? अच्छा चल उठ, तेरी केया तुझे मुबारक! अपने पास भी एक टूटी-फूटी नैया है, चल, आज वहीं चलते हैं।

आदिनाथ बिल चुकाकर सिद्धार्थ के साथ बाहर निकल आया। उसके पैर डगमगा रहे थे।

साढ़े-आठ बज चुके थे। सिद्धार्थ घर लौटना चाह रहा था। लेकिन आदिनाथ उसे किसी शर्त पर छोड़ने को राजी नहीं हुआ! उसने उसे रोकते हुए कहा, "अबे, साले, तू कैसी बात कर रहा है? इतनी जल्दी घर लौटकर क्या करेगा? अभी तो असली जगह जाना बाकी है।"

आदिनाथ उसका हाथ पकड़कर खींचातानी करने लगा। सिद्धार्थ भीड़ जमने के डर से उसके साथ जाने को विवश हो गया। चौरंगी से आगे बढ़ते हुए सिद्धार्थ ने आदिनाथ से पूछा, "तूने शराब कब से पीना शुरू की?"

–बहोत दिन हो गये! अब तो याद भी नहीं।

–तुझे शराब पीना किसने सिखाया?

–आंय?

–बता न, तूने पीना कहां से सीखा लिया?

–तूने मेरे बाप के बारे में नहीं सुना? मशहूर पियक्कड़! तू केष्टोनगर के किसी भी राहगीर से दरयाफ्त कर सकता है। वह जितना बड़ा डाक्टर है, उतना ही बड़ा शराबी! सुना है, मेरे दादा भी बेतहाशा शराब पीते थे! अन्त में उनका लिवर फट गया था।

–तुझे शराब पीना तेरे पिता ने सिखाया?

–अरे, नहीं! कोई अपने हाथ से प्याला उठाकर मेरे मुंह में लगाने नहीं गया था। मैं हर शाम देखता था बापी का चेहरा बदल जाता है मां कहती थी–तेरे बापी पेट-दर्द की दवा लेते हैं। ओह! वह बोतलें देखने में कितनी खूबसूरत लगती थीं? आज भी बापी विलायती खराब के अलावा और किसी चीज को हाथ नहीं लगाते। सो ऐसा हुआ कि एक दिन मैंने भी चोरी-चोरी वह टॉनिक चखकर देखा। तू मुझे समझता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या है? सीधे-सीधे रॉ शराब पीया था। वह भी खींचकर, समझा? एक बार तो छाती में ऊपर से नीचे तक आग जल उठी, लेकिन, उसका स्वाद चखकर जो मजा मिला, अहा !.... तू भी तो कलकत्ते के जमींदार-परिवार में जन्मा था, तेरा बाप नहीं पीता था ?

–नहीं–कभी नहीं !

–अबे, जाऽ जा ! इतनी तेजी मत दिखा ! शराब न पीना, कोई बहुत बड़ी बहादुरी नहीं है।

दोनों लिंड्से स्ट्रीट से होते हुए, फ्री-स्कूल स्ट्रीट की तरफ चले आए और एक मकान के सामने रुक गये।

आदिनाथ ने अपनी घड़ी पर निगाह डालकर कहा, "ठीक है ! आ मेरे साथ।"

दोनों दो-मंजिले पर चले आये। सिद्धार्थ मन ही मन विस्मित होने के बावजूद उसके पीछे-पीछे चला गया। आदिनाथ का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। सिद्धार्थ के अनाड़ीपन की तुलना में आदिनाथ काफी पका हुआ लग रहा था, लेकिन उसकी भाव-भंगिमा में कहीं ऐसे बचपने की झलक भी थी कि उससे नाराज भी नहीं हो पा रहा था....

उस दिन शिवेन आदिनाथ को बुरी तरह डांट रहा था। हमउम्र होने के बावजूद वह उसे अक्सर ही किसी-न-किसी वजह से डांट देता है।

आदिनाथ ने अपराधी की तरह मिनमिनाती हुई आवाज में कहा, "ठीक है ! ठीक है !! कह तो दिया अब नहीं करूंगा। अब सब, चुप हो जा।"

शिवेन तब भी चुप नहीं हुआ।

उसे चुप कराने के लिए आदिनाथ एक अविश्वसनीय कांड कर बैठा। उसने मेज पर से एक आलपिन उठा ली और झट से अपने हाथ में घोंप लिया ! काफी सारा खून बह निकला। शिवेन और सिद्धार्थ इतना खून देखकर सहम गये। आदिनाथ ने हंसते हुए कहा, "क्यों ? अब चुप हो गया न !"

उसी दिन से सिद्धार्थ को हर वक्त यही भय लगा रहता है कि उस पर जाने कब फिर फितूर सवार हो और वह सहज खेल-खेल में ही आग में छलांग लगा दे या चलती हुई गाड़ी से टकराकर एक्सिडेण्ट कर ले।

आदिनाथ दो-मंजिले के एक बन्द दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ। और सांकेतिक भाषा में दरवाजे पर हल्की-सी थपकी दी।

दरवाजा एक लड़की ने खोला, जो उम्र में उससे कम-से-कम दस साल बड़ी थी। और जिसके बदन पर नर्स का यूनीफॉर्म था।

आदिनाथ को देखकर उस लड़की ने मुस्कराकर कहा, "क्यों ? आज फिर धमक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गये ? और तुम्हारे साथ ये साहब कौन हैं ? पहले तो कभी नहीं देखा।''

आदिनाथ ने लापरवाह मुद्रा में कहा, "तुमने इसे नहीं देखा होगा। यह आर॰जी॰कर॰ में पढ़ता है। इसका नाम परितोष है। एई, अन्दर चला आ। देख ले, यही है मेरी टूटी नैया।'' उसने सिद्धार्थ की तरफ देखते हुए अपनी एक आंख दबा दी।

लड़की ने सिद्धार्थ का हाथ पकड़कर ऐसी आत्मीयता से स्वागत किया मानो उससे बहुत पुरानी जान'पहचान हो, "आओ, भाई, आओ ! बैठ जाओ। पैर उठाकर आराम से बैठो।''

आदिनाथ ने बेहद सहज भाव से दस-दस के दो नोट निकालकर उसके टूटे-फूटे ड्रेसिंग-टेबल के ड्राअर में रख दिये, फिर सिद्धार्थ की तरफ मुड़कर कहा, "आराम से बैठ न, परितोष ! इसका नाम लतिका है। हमारी काफी पुरानी जान-पहचान है।''

सिद्धार्थ सारा मामला कुछ-कुछ समझ गया था, लेकिन पूरी तौर से विश्वास नहीं कर पा रहा था। क्या यह सच है ? क्या सच ही वह किसी बुरी लड़की के कमरे में बैठा है। वह किसी अनजाने भय और जड़ता से आक्रान्त हो उठा। वह लतिका की तरफ विस्फारित निगाहों से घूर-घूरकर देखता रहा। वह लड़की भी कहीं से अस्वाभाविक नहीं लगी। अनायास ही उसे कोई उसकी दीदी या चाची भी समझ सकता था।

लतिका ने अपनी बांहें सिर के पीछे लेजाकर अंगड़ाई लेते हुए कहा, "बस, अभी-अभी ड्यूटी से लौटी हूं। सारे दिन खूब मेहनत करवायी है, उस अस्सी साल के बुड्ढे ने। हुंह। मरता भी नहीं है। लाओ एक सिगरेट तो दो।''

सिगरेट का पॉकेट सिद्धार्थ की जेब में ही पड़ा था। वह यन्त्रचालित ढंग से सिगरेट निकालकर, उसकी तरफ देखता रहा।

लतिका उसकी तरफ बढ़ आयी और हंसते हुए कहा, 'ऐसे मुंह बाए क्या देख रहे हो ? सिगरेट भी नहीं जला सकते ? भई, तुम्हारा दोस्त भी खूब है ! लगता है, बिल्कुल अनाड़ी है।''

लतिका ने सिगरेट सुलगाकर एक लम्बा कश लिया और थोड़ी देर धुंए के छल्लों से खेलती रही। सिगरेट होठों में दबाकर वह बेहद नाजोअदा से अपनी कड़ी और बुर्राक सफेद स्कर्ट के बटन खोलने लगी। यूनी-फॉर्म उतारकर उसे अच्छी तरह स्टैण्ड पर रख दिया, ताकि उसकी प्लेट्स न खराब हो जाएं। अब उसके बदन पर सिर्फ पेटीकोट और ब्रैसियर भर रह गया था। वह उन्हीं कपड़ों में कमरे भर में घूमती रही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ ने किसी औरत कोई तने कम कपड़ों में इतनी करीब से कभी नहीं देखा था। उसने नंगी औरतों की तस्वीरें जरूर देखी थी, लेकिन इस वक्त उसके सामने एक जीती-जागती औरत खड़ी थी, जो उससे सिर्फ दो-तीन हाथ की दूरी पर थी। सिद्धार्थ के तन-बदन में अजीब-सी झुरझुरी फैल गयी। उसे मन ही मन बेहद अजीब भी लग रहा था, लेकिन यह चाहकर भी अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था।

ललिता सूरत-शक्ल से भी काफी स्मार्ट लग रही थी। भरी हुई देह, नंगे पेट के पास एक-दो सलवटें, झीने पेटीकोट के अन्दर से झांकती हुई उसके अंगों की आकृति बिल्कुल स्पष्ट थी। उसके बाहों के नीचे बालों का नामोनिशान भी नहीं था। उसकी समूची देह और नाक-नक्श में तृप्ति का ऐसा अद्‌भुत भाव था कि उसकी जिन्दगी के बारे में सवाल करने का मन ही न हो।

लतिका आदिनाथ के सामने पीठ फेरकर खड़ी हो गयी, "ए जी जरा मेरी ब्रेसियर का हुक तो खोल दो ! चलूं, जरा हाथ-मुंह धो आऊं ! सारी देह एकदम से उबलने लगी है।"

आदिनाथ ने ब्रेसियर का हुक खोल दिया लेकिन उसे बाहों में भरकर अपनी गोद में बिठा लिया और उससे बरजोरी शुरू कर दी।

सिद्धार्थ मन ही मन सिहर उठा। उसने मुंह घुमा लिया। उसके सीने की धड़कन इतनी तेज हो गयीं की लगा आसपास के लोगों तक को उसकी धड़कन सुनाई दे रही थीं। लतिका की खिलखिलाती हुई आवाज मौसी की काकली की तरह तीखी लग रही थी। उसने हंसते हुए कहा, "एई, छोड़ो ! छोड़ो !! कहा तो, पहले जरा हाथ-मुंह धो आऊं ! पसीने से चिपचिपाती देह से लिपटना-झपटना क्या अच्छा लगता है, तुम लोगों को ?"

आदिनाथ ने जैसे उसकी कोई बात ही नहीं सुनी। वह पागलों की तरह उत्तेजित होकर लतिका की छाती में मुंह गड़ाकर अजीब-अजीब तरह की आवाजें निकालता रहा, फिर उसे सिद्धार्थ की तरफ धकेलते हुए कहा, "लो अब जरा मेरे यार को भी प्यार कर लो।"

लतिका सिद्धार्थ के बदन पर आ गिरी।

सिद्धार्थ सचमुच डर गया। "नहीं ! नहीं !! नहीं !!!" वह दूर खिसक गया, लेकिन उसकी निगाहें लतिका की तरफ ही लगी रहीं।

लतिका के दोनों उरोजो की गोलाइयां सर्च-लाइट की तरह सिद्धार्थ को घूर रही थीं। मन्त्र-मुग्ध सांप की तरह उसकी तरफ निगाहें गड़ाए हुए उसने अस्फुट स्वर में कहा, "नहीं, मैं नहीं ! मुझे नहीं !!"

अचानक वह पल-भर को होश-हवास खो बैठा और उसकी तरफ हाथ बढ़ाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही जा रहा था कि लतिका छिटककर उठ खड़ी हुई। उसने सिद्धार्थ की मुट्ठी पर उंगलियां फेरते हुए लम्बी-सी उसासं भरकर कहा, "हा–य।"

लतिका ने जिस अन्दाज में 'हा-य' कहा था, ऐसी जादुई आवाज उसने कभी नहीं सुनी थी।

वह बाथरूम में चली गयी।

सिद्धार्थ की उंगलियों के पोर ऐसी बुरी तरह चिनचिना उठे कि लगा अभी फट जाएंगे। सिद्धार्थ हठात् अपराधी हो आया ! उससे गलती हो गयी। वह पापी है !! वह केया के प्रति अपना वादा नहीं निभा पाया, हालांकि उसने ऐसा वादा नहीं किया था। यूं केया से कभी अन्तरंग बातें भी नहीं हुई। साधारण-सा परिचय-भर ही था लेकिन उसका सुन्दर रूप सजा हुआ घर, उसकी अनुपम मुखश्री, झरने की तरह उजला-पादर्शी व्यवहार–उसमें एक अजीब माधुर्य का अहसास होता है। सिद्धार्थ अनजाने में ही उस माधुर्य के प्रति वचनबद्ध था–वह कभी भटकेगा नहीं। लेकिन आज वह कहां आ पहुंचा है ?

सिद्धार्थ में इतना साहस भी नहीं था कि वह उठकर चल दे। उसने आदिनाथ से पूछा, "आदिनाथ, इससे तेरी जान-पहचान कैसे हुई ?"

अभी थोड़ी देर पहले आदिनाथ पागलों की तरह उत्तेजित हो उठा था, वही अब चित्त होकर लेट गया। उसका चेहरा बुझ आया। उसने सिद्धार्थ के प्रश्न का जवाब न देकर उदास लहजे में कहा, "कुछ अच्छा नहीं लगता, मां कसम ! कु–च्छ भी अच्छा नहीं लगता।"

–अच्छा नहीं लगता तो आया क्यों ?

–क्या जानूं ? देखा नहीं, उसे मैंने प्यार तक नहीं किया। इन लोगों को चूमने में भी मुझे उबकाई आती है ! मैंने समूची जिन्दगी में कभी किसी साली को नहीं चूमा ! मुझे भी किसी ने....

–तेरा तो दिमाग खराब हो गया है।

–हां, शायद मेरा दिमाग ही खराब हो गया है। मुझे कु–च्छ भी अच्छा नहीं लगता।

–जानता है, अगर मेरे बापू जिन्दा होते और डाक्टरी पढ़ने का खर्चा चला पाते तो मैं तेरी तरह गलत राह हरगिज नहीं जाता।

–गलत राह ? मैं गलत राह पर हूं ?–आदिनाथ हुंकार उठा, "कौन स्साला कहता है ? कौन स्साला ?" आदिनाथ की आंखें मानो फटकर बाहर निकल आना चाह रही हों। उसने विकृत आवाज में दुबारा कहा, "मैं गलत राह पर जा रहा हूं ? मैं ? जानता है, साले, मेरी क्लास में ऐसा एक भी लड़का नहीं है, जो मुझसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ने-लिखने में बेहतर हो। मैं ही फर्स्ट आऊंगा, तू लिखकर रख ले। अखबारों में मेरी ही तस्वीर निकलेगी। मैं विलायत जाकर एफ०आर०सी०एस० बनूंगा--तू और क्या चाहता है ?''

सिद्धार्थ समझता है, आदिनाथ की बातें बिल्कुल बेमतलब या निहायत खोखली भी हैं। लेकिन जाने क्यूं वह उसे स्वीकार नहीं कर पाता। कहीं कुछ गलत जरूर हो रहा है। सिद्धार्थ चोर-निगाहों से अपनी घड़ी की तरफ देखता रहा, लेकिन उस गलती को पकड़ नहीं पाया।

लतिका नहा-धोकर कमरे में दुबारा दाखिल हुई। इस बार उसने अपनी नंगी देह पर एक साड़ी लपेट रखी थी। सिद्धार्थ ने गौर किया, उसकी भीगी हुई पीठ मर्दो की तरह चौड़ी है।

आईने के सामने खड़ी होकर उसने अपने बालों में कंघी फेरते हुए बेहद शान्त भाव से पूछा, "क्यों जी, तुम लोग इतने चुपचाप क्यों बैठे हो ? कुछ पीओगे ? बोतल मंगवाऊं ?''

आदिनाथ ने बेसब्र होकर कहा, "नहीं, नहीं, मैं कुछ नहीं पीऊंगा ! काफी रात हो गयी है, अब तुम इधर आओ न।''

लतिका ने मुंह फेरकर बिना किसी पूर्व-प्रसंग के अपनी बात छेड़ दी, "जानते हो, तुम्हारे डाक्टर दे सरकार मुझे दुबारा अपने नर्सिंग-होम में आने को कह रहे हैं।''

आदिनाथ ने कहा, "अरे, वाह, फिर तो कहना ही क्या है ! तब तो तुम्हें मोटी इन्कम हुआ करेगी। लेकिन तुम्हें पता है न, डाक्टर दे सरकार की बीवी पागल हो चुकी है ? देखना किसी दिन तुम पर ऐसा हाथ जमाएगी कि–

लतिका ने आकर्षक हंसी हंसते हुए कहा, 'इश्श ! सब कुछ इतना ही आसान है न–''

उसने बाल बनाकर चेहरे पर मेक-अप किया और घुटने मोड़कर खटिया पर बैठ गयी फिर बेहद अदा से दोनों हाथ अपनी गोद में रखकर कहा, "हां, अब बोलो।'' मानो वह कोई बहुत बड़े राज की बात सुनने को उत्सुक हो।

....एक बार ट्रेन में जाते हुए, सिद्धार्थ ने किसी गांव की कच्ची-झोंपड़ी के आंगन में एक ग्रामीण वधू को देखा था। लिपे-पुते घर की तरह उस औरत का चेहरा भी बेहद तरोताजा और मोहक लगा था। इस वक्त लतिका को निहारते हुए अचानक उसे ग्रामीण-वधू की याद हो आयी।

आदिनाथ ने लतिका की तरफ हाथ नहीं बढ़ाया सिर्फ प्रशंसा भरी नजरों से उसे निहारते हुए, जैसे अपने-आप से ही कहा, "साली का पिटुअटरी-ग्लैण्ड खूब बहता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, यह तो देखते ही समझ गया था। अच्छा, चलो, जरा मेरे यार को भी प्यार-व्यार करके उसका जी खुश कर दो ! उस बिचारे का मिजाज गरम हो गया है।''

''नहीं, नहीं बेहतर है मैं....''

लतिका ने धीरे से मुस्कराकर कहा, ''क्या करूं भाई, तुम्हारे दोस्त को मैं पसंद नहीं आयी।''

लतिका के मुंह से पसंद न आने की बात सुनकर सिद्धार्थ झेंप गया। उसने हड़बड़ाकर कहा, 'नहीं, नहीं, मैं....आपने गलत समझा। मेरा मतलब है–''

–इतना शरमा क्यों रहा है, बीनू ? अरे, भई, यह केया नहीं है। कहा तो यह एक टूटी-फूटी आम नैया है, यानी जनता का माल इस पर जो चाहे सवार हो सकता है।

आदिनाथ अपने मजाक पर खुद ही हंस पड़ा। केया का नाम सुनते ही सिद्धार्थ का दिमाग झनझना उठा। ऐसे अपवित्र कमरे में केया का नाम लेने का किसी को हक नहीं है। उसे लगा केया का किसी ने अपमान कर दिया है और इस अपमान के लिए वही जिम्मेवार है। आदिनाथ की जुबान पर केया का नाम अशोभन लगता है। वह झटपट बिस्तर से नीचे उतर आया। कहा, ''अच्छा, मैं चलता हूं।''

आदिनाथ ने हाथ बढ़ाकर सिद्धार्थ को रोकते हुए कहा, ''अरे, रुक न ! थोड़ी देर ठहरकर जाना–''

सिद्धार्थ के बदन में जाने कहां से आसुरी शक्ति आ समायी। उसने आदिनाथ का हाथ झटककर उसे बिस्तर पर धकेल दिया।

आदिनाथ ने चीखकर कहा, ''तुझे क्या हो गया, बीनू ? मैं तो तेरे भले के लिए ही–''

–चुप कर ! आज के बाद फिर किसी दिन मुझसे बात करने की भी कोशिश मत करना।

–अरे, हुआ क्या ? मैंने क्या कोई बुरी बात कह दी ? तेरी केया तुझको मुबारक ! भई, मुझे उससे कुछ लेना-देना नहीं है ! अपने यार के मुनाफे में मैं कभी हिस्सा–

सिद्धार्थ ने उसकी तरफ आंखें तरेरकर देखा। उसका मन हुआ वह आदिनाथ की गर्दन दबाकर हमेशा के लिए उसका बोलना बन्द कर दे और यह जो गूंगी-बहरी-सी लड़की बैठी है, उसे गर्दनिया देकर सीढ़ी से नीचे फेंक दे। इस वक्त वह कुछ भी कर सकता है। लेकिन वह तेज कदनों से दरवाजे से बाहर निकल गया। जाते-जाते वह दरवाजे से बुरी तरह टकरा गया। उसके माथे पर गुमड़ा उभर आया। उसने मारे गुस्से के इतनी जोर से दरवाजा खोला कि सारा मकान हिल गया। लतिका उसी तरह अपनी गोद में हथेलियां टिकाए शान्त बैठी रही और मुस्कराती हुई सिद्धार्थ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को जाते हुए देखती रही।

सिद्धार्थ काफी तेज-तेज कदमों से चल रहा था। वहां से लगभग दौड़ता हुआ जब चौरंगी पहुंच गया तो उसने राहत की सांस ली। नहीं, कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था।

सारी शाम उमस-भरी गर्मी के बाद इस वक्त ठण्डी बयार बह रही थी। रास्तों पर सिनेमा-हाल से निकलते हुए लोगों की भीड़ ! जो लोग इस इलाके में सिनेमा देखने आते हैं, सब-के-सब स्मार्ट कपड़ों में खिले हुए दिखते हैं। एक साथ इतने सारे हंसते-बोलते मर्द-औरतों को देखकर उसे बहुत अच्छा लगा। उसने सड़क भी पार कर ली लेकिन बस में चढ़ने के बजाय वह चुपचाप खड़ा रहा। अचानक वह अपने ख्यालों में गुम हो गया। अच्छा, आज से पांच-सात साल बाद अगर दुनिया के तमाम लोगों की जिन्दगी में कहीं सचमुच ही इतनी बेलौस खुशी भर जाए, तो कितना अच्छा हो। अब ये सब झगड़े-झंझट अच्छे नहीं लगते। सिद्धार्थ की कल्पना में उन दिनों की तस्वीर स्पष्ट उभर आयी, जब वह थोड़ा और लम्बा हो जाएगा। उस समय रोज-रोज दाढ़ी-शेव करने की वजह से, उसके चेहरे पर पुरुषोचित रूढ़ता भी उभर आएगी और वह भी अपनी खूबसूरत बीवी के साथ सिनेमा-हाल से निकल रहा होगा। अच्छा, कौन होगी उसकी बीवी ?....कौन होगी वह लड़की ? इस वक्त उसका चेहरा पहचान में नहीं आ रहा है। हां, उसके बाल घुंघराले होंगे। सिद्धार्थ उसके साथ हंसी-मजाक करते हुए आगे बढ़ेगा। अचानक अपने पर्स से कुछ फुटकर पैसे निकालकर किसी भिखारी के आगे फेंक देगा। अच्छा, उन दिनों कोई भिखारी रह जाएगा ? इस बारे में निश्चित रूप से वह कुछ नहीं सोच पाया।

—अरे, सिद्धार्थ तुम यहां कहां ?

सिद्धार्थ ने चौंककर पीछे की तरफ देखा, मानो अचानक ही किसी बिजली के रंगे तार पर हाथ पड़ गया हो। वह अन्दर तक सिहर उठा।

नरेश दा ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर हंसते हुए पूछा, "इतनी रात गये तुम यहां क्यों खड़े हो ?"

नरेश दा का चेहरा शान्त था और आवाज भी बेहद मुलायम लेकिन इस वक्त सिद्धार्थ नरेश दा की जगह किसी और को देखता तो शायद इतनी बुरी तरह न चौंकता। उस दिन सुबह चाय की दुकान पर उनसे मुलाकात होने के बाद, उसने मन-ही-मन चुनौती स्वीकार कर ली थी। लेकिन वह चुनौती किस बात के लिए थी यह उसके सामने आज भी स्पष्ट नहीं थी। वह अस्फुट स्वर में बार-बार दुहराता रहा, 'मैं दिखा दूंगा। एक दिन मैं सबको दिखा दूंगा !!' उसे लगा, आज वह अपनी चरम दुर्बलता के पलों में पकड़ा गया है। सिद्धार्थ बुरी तरह सकुचा उठा। उससे कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहाना भी नहीं करते बना।

उसने अटक-अटककर अपनी बात पूरी की, "नहीं....माने....इस तरफ....अभी बहुत रात तो नहीं हुई....।"

नरेश दा के पास घड़ी नहीं थी। उन्होंने उसकी घड़ी पर निगाह डालकर कहा, "साढ़े-नौ बज रहे हैं ! तुम इधर सिनेमा देखने आए थे ?"

–जी, हां ! मेरा मतलब है....एक दोस्त के पल्ले पड़कर मेट्रो में फिल्म–

सिद्धार्थ ने आदिनाथ के साथ शराब भी पी थी। नरेश दा को उसकी गन्ध तो नहीं मिल गयी ? लतिका के कमरे में पाउडर और पसीने की मिली-जुली अजीब-सी गन्ध थी। कहीं उसके बदन से वही गन्ध तो नहीं आ रही है ? अगर कहीं नरेश दा को सारी बातें मालूम हो गयीं तो–? लेकिन नरेश दा उसके कौन लगते हैं ? कोई नहीं ! उसके मौसेरे भाई रूनू के दोस्त ! जब रूनू दा से ही उसकी बातचीत नहीं है, तो बड़े आए उनके दोस्त ! हुंह अगर वह जान भी गये तो उसकी बला से ! लेकिन सिद्धार्थ कहकर भी अपना संकोच नहीं मिटा पा रहा था। उसके चेहरे पर अजीब-सा अपराधी भाव घिर आया।

नरेश दा थोड़ी देर उसकी तरफ अपलक देखते रहे, फिर पूछा, "क्यों तुम तो हमारी पार्टी के दफ्तर में आने वाले थे न ? वहां तुम बहुत कुछ कर सकते थे। तुम्हें भी अपने जिन्दा रहने का कोई उद्देश्य समझ में आ जाता।"

सिद्धार्थ ने छूटते ही कहा, "हां-हां, आऊंगा ! कल ही आऊंगा। आज चलूं।"

"आओगे न ? आना जरूर ! अरे, तुम्हारी आंखें इतनी लाल क्यों हैं ?"

"कुछ नहीं ! यूं ही ! अच्छा, नरेश दा, आज मैं चलता हूं।"

सिद्धार्थ ने लगभग दौड़कर दुबारा सड़क पार की। उसी समय अगर उसे कोई बस मिल जाती तो बेहतर होता ! लेकिन सामने बिछी लम्बी सड़क बिल्कुल सूनी थी। दूर-दूर तक किसी बस का नामोनिशान नहीं था। उस तरफ से नरेश दा की नजरें एकटक उसी पर गड़ी हुई थीं। सिद्धार्थ एक खम्भे के पीछे छुप गया। अच्छा नरेश दा जोंक की तरह उससे क्यों चिपक गये हैं ? हुंह, जीवन का उद्देश्य ! नरेश दा खुद अपने जीवन का उद्देश्य पहचानते हैं ! किसी परिचित से मुलाकात होते ही बस, लेक्चर झाड़ देते हैं। काश, वह भी कभी उस स्थिति में फंसे होते जिसमें वह फंस गया था।

सामने एक बस आकर रुकी लेकिन सिद्धार्थ चढ़ा नहीं, उसी तरह बौखलाया-सा खड़ा रहा। अभी भी उसके बदन से शराब की गन्ध तो नहीं आ रही है ?

उसकी बगल में एक आदमी काफी देर से कुछ फुसफुसा रहा था। इस बार सिद्धार्थ ने ध्यान से सुना, कोई दीन-हीन गरीब-सा आदमी था। उसके हाथ में एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छड़ी भी थी। वह मानो अपने-आप से ही कह रहा था–"सूरदास पर कृपा कीजिए, बाबू ! सूरदास को जरा रास्ता पार करवा दीजिए ! इस अंधे पर रहम करें !"

सिद्धार्थ ने देखा, नरेश दा वहां नहीं थे ! उसे इसी तरफ से बस पकड़नी थी, लेकिन, उसने उस आदमी का हाथ पकड़कर धीरे-धीरे उस पार पहुंचा दिया।

इतना जरा-सा काम उसे अजीब-सा आत्म-संतोष दे गया। यूं तो उस रास्ते पर सैकड़ों लोग आ-जा रहे थे लेकिन किसी ने भी उस अंधे को रास्ता पार करने में मदद नहीं की ! सिर्फ उसके इस नेक काम की वजह से केया उसे जरूर माफ कर देगी। ज-रूर ! केया का मन बेहद कोमल है।....अच्छा, दुनिया में जितने अंधे हैं, सबका नाम सूरदास ही होता है–कैसी मजेदार बात है !

7

सिद्धार्थ केया के डैडी को अभी तक ठीक-ठीक समझ नहीं पाया। उनसे लगातार दो दिन मुलाकात हुई। उन्होंने काफी शिष्टता से बातें की। वह बात-बात में कलकत्ते और दिल्ली शहरों की तुलना करते रहे। उसके घर-परिवार के बारे में खोद-खोदकर पूछते रहे। लेकिन जब वह बातें करते हुए अचानक बीच में ही चुप हो जाते हैं, और एकदम उसके चेहरे की तरफ देखने लगते हैं, तो वह जाने क्यूं मन-ही-मन सहम जाता है। हालांकि वह अच्छी तरह जानता है कि उस वक्त वह कुछ और ही सोच रहे हैं, लेकिन अपने चेहरे पर उनकी अपलक दृष्टि महसूस करते हुए, उसे बेचैनी होने लगती है। केया के डैडी काले फ्रेमवाला चश्मा पहनते हैं। चश्मे के मोटे कांच से झांकती हुई उनकी आंखें पहेली-सी दुर्बोध जान पड़ती हैं।

सिद्धार्थ की आदत है, जब वह किसी नये व्यक्ति से मिलता है, तो उसके बारे में फौरन अपनी मिनी राय कायम कर लेता है कि वह शरीफ है या बदमाश ! लेकिन केया के डैडी के बारे में वह अभी तक कुछ तय नहीं कर पाया।

.....उस दिन केया से रास्ते में ही मुलाकात हो गयी ! अब तक सिद्धार्थ का व्यक्तिगत अनुभव यही था कि लड़कियों से अगर रास्ते में मुलाकात हो जाए तो वह बात तक नहीं करना चाहतीं। बहुत हुआ तो एक बार निगाह उठाकर देख लेंगी या एक सूखी-सी मुस्कान फेंक देंगी। उन्हें आवाज देकर अगर बातें करने की कोशिश भी करो तो वह बिना रुके राह चलते-चलते ही बेकार-सा जवाब देकर आगे बढ़ जाएंगी।

केया उन सबसे बिल्कुल अलग लगी। उसे देखते ही उसका चेहरा चमक उठा। उसने फौरन सवाल किया, 'एइ, इतने दिन हो गए, तुम आए क्यों नहीं ?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसी दिन केया के डैडी से भी परिचय हुआ था। सिद्धार्थ मन-ही-मन डर रहा था कि केया के डैडी शायद उसे पसंद नहीं करेंगे। उसके अपने मुहल्ले के लड़के-लड़कियां काफी लुक-छिपकर मिलते-जुलते हैं। कोई लड़का किसी लड़की से मिलने उसके घर आ धमके और उसके मां-बाप के सामने ही बातें करे, ऐसा उसने कभी नहीं देखा था।

केया के व्यवहार में कहीं कोई हिचकिचाहट नहीं थी। जब उसने अपने डैडी से परिचय कराया तो उन्होंने हंसकर बेहद शराफत से बातें कीं। उसकी तारीफ करते हुए कहा, 'वाह ! तुम्हारी सेहत तो बहुत अच्छी है, आजकल के अधिकांश लड़कों का जो चेहरा होता है—क्या पढ़ते हो तुम ? या पढ़ना छोड़ दिया है ? अच्छा, डाक्टरी पढ़ने की सोच रहे हो ? बहुत अच्छी बात है। मेरी मानो डाक्टरी पास करने के बाद गांवों में जाना, समझे ? शहर में मत रहना। हमारे देश को अभी इस बात की बेहद जरूरत है कि—अचानक वह बीच में ही चुप हो गए। अच्छा, बीच-बीच में वह इतनी गम्भीरता से क्या सोचने लगते हैं ?

उस दिन केया अपने छोटे भाई पिन्टू को लेकर सिद्धार्थ के साथ घूमने निकली थी। अभी तक कलकत्ता शहर उसके लिए निहायत अजनबी था। यूं उसका बहुत कुछ देखने-जानने का मन होता है। खासकर उत्तरी कलकत्ता तो उसने देखा ही नहीं था।

सिद्धार्थ ने बेहद उत्साहित स्वर में उत्तरी कलकत्ते के गुण-दोषों का वर्णन शुरू किया, 'जानती, हो, इस तरह लोगों की भीड़ अपेक्षाकृत अधिक है। रास्ते भी काफी टूटे-फूटे हैं—लेकिन यह कलकत्ते शहर का सबसे पुराना इलाका है, जिसे आदि-कलकत्ता कहते हैं ?'

—अच्छा, तुमने राजेन्द्र मल्लिक का मार्बल-पैलेस देखा है ? उस तरह का शानदार महल दक्षिण कलकत्ता या दिल्ली में कहीं नहीं मिलेगा ? इसी तरह पारसनाथ के दो मन्दिर हैं—वहां के तालाबों में काफी बड़ी-बड़ी मछलियां हैं—जानती हो, बचपन में मैं शोभा बाजार के किसी मकान में खेलने जाया करता था। उस मकान के सामने सिंह की दो मूर्तियां थीं।

सिद्धार्थ की बातें सुनते हुए केया के चेहरे पर एक दबी हुई मुस्कान उभर आयी। उसने हंसते हुए कहा, ''आप चाहे जो कहें, मुझे तो अपना दक्षिणी कलकत्ता ही अधिक पसंद है। यह इलाका तो बेहद गन्दा है।''

—अच्छा, हम लोगों ने तय किया था न कि हम एक-दूसरे को तुम कहेंगे ?

—आप ही तो वादा-खिलाफी कर रहे हैं।

—मैं ? मेरा मतलब है, मैं तो काफी पहले से मन-ही-मन तुम्हें 'तुम' पुकारने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 4538 19/3/003
Date

लगा हूं।

—मन-ही-मन ?

—हां, इसी बीच मैं तुमसे ढेर-ढेर बातें भी कर चुका।

—ओ, आप तो काफी मजेदार आदमी हैं ! क्या-क्या बातें की हमें भी बताइए न।

सिद्धार्थ अचानक शर्म से लाल हो उठा। उसने जरा हिचकिचाते हुए कहा, ''नहीं, कोई खास बात नहीं। मेरा मतलब है, हम मन ही मन जितना कुछ कहते हैं, अक्सर जुबान से नहीं कह पाते।''

केया खिलखिलाकर हंस दी।

सिद्धार्थ ने जरा आहत होकर पूछा, ''इसमें हंसने की क्या बात है ? मैंने ऐसी कोई हंसी की बात तो कही नहीं थी।''

केया ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उसी तरह हंसती रही।

सिद्धार्थ पिन्टू का हाथ थामे हुए काफी देर तक केया के साथ घूमता रहा। बीच-बीच में वह महसूस कर रहा था कि रास्ते के तमाम लोग उन लोगों को ही घूर-घूरकर देख रहे हैं। इन दिनों वह अपने अन्दर काफी परिवर्तन महसूस करने लगा है। अभी कुछ दिनों पहले तक शिवेन के होस्टल के अलावा ऐसी कोई जगह नहीं थी, जहां वह अपनी शामें बिता सकता। अक्सर वह रास्तों पर चक्कर लगाया करता था। लेकिन अब वह केया जैसी तेज और आश्चर्यजनक लड़की के साथ हंसता-बोलता और घूमता है। हर किसी को जरूर उससे ईर्ष्या हो रही होगी। लेकिन कुछ ही महीने बाद केया दिल्ली लौट जाएगी—यह सोच कर वह थोड़ा उदास हो गया।

अगले दिन सुबह नींद खुलते ही उसे केया की बातें दुबारा याद आने लगीं, लेकिन शाम से पहले उससे मुलाकात होने की कोई सूरत नहीं है। केया रोज सुबह साढ़े आठ बजे तक कालेज जाने के लिए तैयार हो जाती है। जब वह कालेज जाया करता था, तो उसकी क्लास तो गयारह-चालीस या साढ़े बारह बजे से शुरू होती थी, लेकिन केया किसी मिशनरी कालेज में जाती है न। उनकी तो हर बात अलग है। अच्छा, केया के बापू क्या खुद उसे कालेज तक छोड़ने जाते हैं ? अचानक सिद्धार्थ के मन में उससे मिलने की तीखी चाह जाग उठी। उसका मन हुआ वह मानिकतल्ला के मोड़ पर खड़े होकर उसका इन्तजार करे और जब केया उधर से गुजरे तो उसे बस, एक नजर देख ले। अगले ही क्षण उसे अपनी चाल बेहद बचकानी लगी।

वह चाय पीकर काफी देर तक अखबार पढ़ता रहा, लेकिन उसके बाद उसके लिए कोई काम नहीं रह गया। वह घर से बाहर निकल आया। वह फुटपाथ पर धीरे-धीरे चलते हुए, मानिकतल्ला के मोड़ पर आकर खड़ा हो गया। काफी देर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़े-खड़े केया का इन्तजार करता रहा, वह दिखाई नहीं दी।

उसी दिन दोपहर को उसने अपनी नौकरी के लिए और दो-एक जगह कोशिश की। उसने फैसला कर लिया था कि अब वह अपने तमाम जान-पहचान वालों के यहां जाकर नौकरी के लिए कोशिश करेगा। उससे जो व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है, अब वह उसी के अनुसार उनसे अपना रिश्ता कायम करेगा। शिवेन ने कहा था कि उसके मौसा कर्नल सूर अगर चाहें तो उसे नौकरी दिला सकते हैं। इतने दिनों तक सिद्धार्थ ही राजी नहीं हुआ। दरअसल वह टुलटुल के डैडी का कोई अहसान नहीं लेना चाहता था। मौसी उसे कितनी ममता देती है। अगर वह उस घर में दया का प्रार्थी होकर जाएगा, तो कोई उसका सम्मान करेगा ? चलो, न करें, लेकिन ऐसे आखिर कितने दिन चलेगा ? यह आदर-सम्मान क्या वह धो-धोकर पीयेगा ? कर्नल सूर अगर उसे नौकरी दिलवा देंगे तो वह छोटी मौसी के घर कभी नहीं जाएगा। उसी घर में केया से मुलाकात हुई थी। उस दिन की बात याद करते हुए सिद्धार्थ अनजाने में ही सिहर उठा। केया का मकान अगर मानिकतल्ला में न होकर बालीगंज में होता तो ? तब वह मालविका के साथ लौटती, सिद्धार्थ को उसे घर पहुंचाने का मौका ही नहीं मिलता। फिर क्या कभी केया से मुलाकात, सम्भव थी ? नहीं, उससे दोस्ती होने की कोई सम्भावना नहीं थी–यह बात, वह सोच भी नहीं सकता।

उस दिन दोपहर को सिद्धार्थ के मन में नौकरी के बारे में एक निश्चित उम्मीद बंधी। उसके दोस्त राज के बड़े भाई ने उससे किसी दिन दफ्तर में मिलने को कहा था। उन्होंने उसकी नौकरी के लिए कोशिश करने का आश्वासन दिया था। उस दिन यूं ही उनके दफ्तर में दवाओं की किसी बड़ी कम्पनी के बड़े अफसर थे।

सिद्धार्थ को देखते ही उन्होंने उलाहना देते हुए कहा, "तुम मुझसे पहले क्यों नहीं मिले ? अगले महीने हमारे दफ्तर के कुछेक सेल्स-रिप्रजेन्टेटिव ट्रेनिंग में लिए जाएंगे ! तुम फौरन एक दरखास्त लिख दो। शक्ल-सूरत से स्मार्ट हो, बॉयोलॉजी, लेकर बी०एस-सी० पास किया है न ? बस, काम बन जाएगा।"

सिद्धार्थ को जैसे अपने कानों पर भरोसा नहीं हो रहा था। इतनी आसानी से बात बन गयी ? मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव की नौकरी तो अच्छी-खासी होती है। भला हुआ, जो उसने अपनी घड़ी नहीं बेची। अब तो उसे घड़ी की सख्त जरूरत होगी। कभी वह खुद डाक्टर बनना चाहता था....अब उसे डाक्टरों के पास जाकर दवाएं बेचने के लिए धरना देना होगा। कोई बात नहीं ! तन्खाह भी बुरी नहीं है ! बोनस भी मिलेगा।

दरखास्त लिखने के बाद उसने अजय दा के साथ चाय पी। जब वह दफ्तर से बाहर आया तो पल-भर के लिए उसके सीने में आशंकाओं का तूफान दुबारा उठ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़ा हुआ। यह नौकरी उसे सच ही मिल जाएगी न ? कोई भरोसा नहीं, नहीं बाबा ! पहले अप्वाइन्टमेन्ट-लेटर तो मिल जाएगा। लेकिन अजय दा उसे झूठा आश्वासन आखिर क्यों देंगे ? वह भी उसे अन्य लोगों की तरह अनायास ही दो-चार चिकनी-चुपड़ी बातें करके लौटा सकते थे। एक दिन इन्हीं अजय दा को उसने कैरम के खेल में हरा दिया था। न्ना, अभी भी इस दुनिया में दो-चार भले लोग जरूर हैं।

सिद्धार्थ के तन-मन में उमंग की लहर दौड़ गयी। रास्ते में सिगरेट का एक खाली पैकेट पड़ा हुआ था। उसने कसकर उसे एक ठोकर लगायी और रास्ते के कीचड़-भरे गड्ढे को कूदकर पार कर गया। उसके सामने से फुल-स्पीड़ में दौड़ती हुई ट्राम गुजर रही थी। उसने एक जोखिम भरी छलांग लगायी और ट्राम का रॉड पकड़कर भूल गया।

....शाम होते ही बेचैनी होने लगी। लेकिन केया पांच बजे से पहले कालेज से नहीं लौटती। हो सकता है, छुट्टी के बाद वह टुलटुल के यहां चली जाए। क्या एक बार यह भी ख्याल आ सकता है कि उससे मिलने के लिए उसके घर आएगा और निराश लौट जाएगा ? ऐसे भी केया के कालेज में लौटने के फौरन बाद ही उसके घर नहीं धमक जाना चाहिए। समूची शाम वह लोगों से बचता रहा, ताकि किसी-किसी दोस्त से मुलाकात न हो जाए। अगर कोई मिल गया तो क्या वह उसकी उपेक्षा करके केया के पास जा सकता है ? लेकिन आज केया से मिलना बेहद जरूरी है। लेकिन क्यों ? यह वह खुद भी ठीक-ठीक नहीं जानता। शाम घिरते ही सिद्धार्थ केया के मकान की तरफ चल दिया, लेकिन निराश होकर लौट आया। जिस समय वह रास्ता पार कर रहा था कि अचानक उसके डैडी पर नजर पड़ी। वह किसी महिला के साथ टैक्सी से उतर रहे थे। उन महिला को उसने पहले भी उनके साथ देखा। यह क्या वही मौसी हैं, जिससे केया के डैडी ब्याह करने वाले हैं ? लेकिन वह दुबारा विवाह क्यों कर रहे हैं ? सिद्धार्थ को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आयी। लेकिन उसकी पसंद-नापसंद से क्या आता-जाता है ? उन दोनों को देखकर उनके घर जाने को मन ही नहीं हुआ। यूं भी केया के डैडी के सामने उनके घर जाने में संकोच होता है। खासतौर से इस वक्त तो उन लोगों के बीच जाना सरासर अनुचित होगा।

सिद्धार्थ उनके घर नहीं गया, लेकिन वहां से लौटकर और कहीं जाने का भी मन नहीं हुआ। वह बेकार ही रास्ते पर इधर-उधर चक्कर काटता रहा। इस वक्त उसे सिगरेट का स्वाद भी अच्छा नहीं लगा। उसने अपने सीने पर एक वजनी बोझ महसूस किया और मन ही मन बेसब्र घोड़े की तरह छटपटा उठा। वह अभी-इसी वक्त केया से मिलना चाहता है, लेकिन मिलने की कोई राह नहीं दिख रही है। राह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों नहीं दिख रही है ? इस वक्त वह और कुछ सुनना-समझना नहीं चाहता है। उसे लगा अचानक सबने मिलकर उसके खिलाफ दुश्मनी का ऐलान कर दिया है। हुंह, मजाक है क्या ? वह एक लैम्प-पोस्ट से पीठ टिकाकर खड़ा हो गया। उसकी तबीयत हुई, वह उस लैम्प-पोस्ट को उखाड़कर रास्ते पर फेंक दे। अच्छा। अग़र वह रास्ते के तमाम लैम्प-पोस्ट तोड़-फोड़ डाले तो क्या हो ? सिद्धार्थ ने देखा केया के फ्लैट के कमरों की बत्तियां जल रही थीं। पीले पर्दे के पीछे लोगों की चलती-फिरती छायाएं भी नजर आ रही थीं। लेकिन उनमें केया की छाया कौन-सी है, वह पहचान नहीं पाया।

करीब घण्टे-भर तक वह उनके मकान के आस-पास घूमता रहा। अचानक रतन से मुलाकात हो गयी। उसी तरह ढीली-ढीली धोती पर हवाई-शर्ट ! जेब में रेजगारी–चलते हुए झनझनाकर बज उठती थी। रतन बचपन में जितना चुप्पा था, अब वह उतना ही बातूनी हो गया है। नॉन-स्टॉप बकवास किये जाता है, मानो बचपन की चुप्पी की सारी कसर निकाल रहा हो। मुलाकात होने के बाद वह आसानी से पीछा छोड़ने वाला नहीं था।

सिद्धार्थ ने बोर होकर पूछा, "क्यों रे, आज दुकान से इतनी जल्दी क्यों लौट आया ?"

–तबीयत अच्छी नहीं है, मां कसम !

हुंह ! तबीयत ठीक नहीं है, इसीलिए दुकान से छुट्टी मार दी। लेकिन इस वक्त गप्प मारने में तो वह जरा भी आलस्य नहीं दिखा रहा है।

आज दो महिलाएं उसकी दुकान पर जेवर बेचने आयीं थी, रतन उनके बारे में लम्बा किस्सा छेड़ बैठा। बातचीत में वह बार-बार ऐसे-ऐसे बड़ा बाजारिया शब्द इस्तेमाल कर रहा था कि वह अवाक हो उठा; "नयन-सुख औरतें' औरतों के लिए ऐसे-ऐसे विशेषण उसने पहले कभी नहीं सुने थे।

रतन की बातें सुनते हुए भी, सिद्धार्थ की निगाहें बार-बार केया के फ्लैट की तरफ उठ जाती थीं। अचानक उसकी छाती जोर से धड़क उठी। केया के डैडी उसी भद्र-महिला के साथ बाहर निकल रहे थे। उनके साथ केया भी है ? नहीं ! सिर्फ वही दोनों जन बाहर जा रहे हैं। सिद्धार्थ रतन को अब बरदाशत नहीं कर पा रहा था। दरअसल इस वक्त उसे दुनिया के किसी किस्से-कहानी के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं है।

"चलता हूं रे, मुझे सियालदह जाना है !" सिद्धार्थ ने अचानक ही सामने से गुजरती हुई ट्राम पकड़ ली। अगले स्टॉप पर वह उतर पड़ा और बेहद सतर्क भाव से वापस लौट आया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह आहिस्ते-आहिस्ते केया के मकान की सीढ़ियां चढ़ने लगा। थोड़ी देर वह उसके बन्द दरवाजे के सामने खड़ा रहा, फिर आहिस्ते से थपकी दी।

केया ने ही दरवाजा खोला।

उसे देखकर सिद्धार्थ बुरी तरह चौंक उठा। केया की आंखें बेतरह सूजी हुई और लाल थीं। हां, वह दावे के साथ कह सकता था कि केया अभी-अभी रोकर आयी थी। सिद्धार्थ दिशाहारा हो उठा। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

केया ने ही स्थिति सम्हालते हुए कहा, "आइए, भीतर आइए न !"

–केया, तुम्हें क्या हुआ है ?

–आप अन्दर तो आइए !

–नहीं, मेरा मतलब है, आज मैं लौट जाऊं....।

–क्यों ? आप ऐसे क्यों कर रहे हैं ? आइए न...।

–तुम रो रही थीं ?

केया ने मुंह फेरकर आंखें पोंछ लीं। कहा, "नहीं, रो कहां रही थी ?"

कमरे के बीचोंबीच खड़े-खड़े सिद्धार्थ अपने को बेहद मिसफिट महसूस करता रहा। उसके दोनों हाथ आस-पास झूल से गये और गर्दन झुक आयी। वह सपने में भी केया की रोती हुई आंखों की कल्पना नहीं कर सकता था। जब कभी केया से मुलाकात हुई है, उसे हमेशा जरूरत से ज्यादा हंसती हुई पाया है। जब वह हंसना शुरू करती है, तो जैसे रुकना ही नहीं चाहती। केया का घर और उसका बेलौस व्यवहार देख कर उसे लगा था, वहां सिर्फ सुख ही सुख है। इसीलिए उसका मन भी हर वक्त यहां भाग आने को बेचैन रहता है। लेकिन आज अचानक ही सारी तस्वीर बदली हुई नजर आयी। वह इन सारी बातों में कहीं कोई ताल-मेल नहीं बिठा पा रहा है। उसका मन हुआ वह अपनी भरपूर ताकत से केया का सारा दुःख-दर्द पोंछ दे। उसका हर दुःख मिटा दे ! लेकिन इस इरादे को पूरा करने के लिए वह क्या करे, यह उसकी समझ में नहीं आया।

केया चाहकर भी अपने आंसू नहीं रोक पायी। उसकी हंसी की तरह, आंसू भी मानो उसका अकुंश नहीं मानते।

सिद्धार्थ उसके और करीब आ गया। उसने बेहद गहरी और अन्तरंग आवाज में पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है, मुझे नहीं बताओगी ?"

"बापी ने आज मुझे मौसी के सामने बुरी तरह डांट दिया। बापी मुझे–"

केया की आंखें दुबारा भर आयीं। उसने बच्चों की तरह हथेलियां उलटकर अपनी भींगी हुई पलकें पोंछ डालीं। इस वक्त वह अपनी उम्र से बहुत छोटी लग रही थी। मानो वह पांच साल पहलेवाली उम्र में लौट गयी है, जब उसकी मां मरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी।

सिद्धार्थ पल-भर उसके बापी के कठोर भावहीन चेहरे की कल्पना करता रहा, फिर पूछा, "क्यों ?"

–अब वह बात रहने दो। चलो, छोड़ो ! आप बैठिए न !

–नहीं ! आप बैठिए न !

सिद्धार्थ सोफे पर बैठ गया। केया बगलवाले सोफे पर बैठ गयी। वह मुंह फेरकर बैठी हुई थी लेकिन उसका बदन रह-रहकर कांप उठता था।

सिद्धार्थ यह तय नहीं कर पाया कि इस वक्त उसका चले जाना ही बेहतर है या नहीं ! वह उसी तरह चुपचाप बैठा रहा। काफी देर तक हर ओर चुप्पी छायी रही। दोनों में से किसी ने भी बात करने की कोशिश नहीं की। इस बीच सिद्धार्थ की आंखें कमरे की दीवारों पर जा टिकीं। सीने में एक असहनीय दर्द उमड़ आया। अचानक उसे लगा कि अपनी बात शायद वह किसी को भी नहीं समझा पाएगा। दुनिया में उसके अस्तित्व की कहीं कोई कीमत नहीं है। किसी के लिए उसकी जिन्दगी का कानी-कौड़ी भर भी मोल नहीं है। नहीं, कहीं कुछ भी नहीं बदलता–दुनिया के क्रूर नियमों के आगे वह बिल्कुल असहाय है। इस पल, इस घर में बैठे रहने से भी कहीं कोई फर्क नहीं पड़ता। दरअसल उसकी कहीं कोई कीमत नहीं है। दुनिया का शायद हर व्यक्ति उससे अधिक कीमती है। अच्छा होता अगर केया से उसकी जान-पहचान ही नहीं हुई होती। सचमुच उसके नाम कहीं कोई प्राप्य नहीं था, जरा-सा भी नहीं !

सिद्धार्थ के दिलो-दिमाग पर अजीब-सा सम्मोहन छा गया और उसने बिना कुछ सोचे-समझे अचानक केया की बांह पर हाथ रख दिया और उसके करीब जाकर फुसफुसाते हुए कहा, "सुनो, केया, मैं तुम्हें....मतलब, तुम्हारी खातिर मैं...."

पल-भर के लिए केया की निगाहें सिद्धार्थ की आंखों में एकटक देखती रही। सिद्धार्थ का चेहरा बुझ आया था।

अचानक केया के आंसू सूख गए। उसने बेहद कोमल लहजे में कहा, "मैं जानती हूं–"

8

जिस रात सुतपा घर नहीं लौटी, उस दिन शाम से ही जोरों का आंधी-तूफान और बारिश थी। सिद्धार्थ भी घर लौट आया था। काफी देर बाद टूनू भी गीले कपड़ों में लगभग तैरता हुआ, घर लौट आया। उनकी गली में काफी पानी जम जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इधर कई दिनों से छोटे कक्का को तेज बुखार है। उन्होंने सामने की खिड़की खोल रखी थी। बीच-बीच में वह बिस्तर से उठकर खिड़की से बाहर झांक आते थे।

सुतपा अपने दफ्तर से अक्सर ही रात नौ-साढ़े नौ बजे के बाद लौटती थी। इन दिनों वह जरा जल्दी लौट आती है। लेकिन घरवालों से बातचीत बिल्कुल ही बन्द थी। इतनी आंधी-पानी में घर के सभी लोग उसके लौटने का इंतजार कर रहे थे, लेकिन किसी ने अपनी जुबान से कुछ नहीं कहा। मां बीच-बीच में उठकर मेन-गेट तक चक्कर लगा आती थी। जब दस बज गये तो उन्होंने सिद्धार्थ और टूनू का खाना परोस दिया और सुतपा की थाली ढंककर रख दी। टूनू खाने के फौरन बाद ही सोने चला गया।

मां ने सिद्धार्थ को आवाज देकर कहा, "हां-रे, तपू लौटेगी कैसे ? बारिश तो तेज होती जा रही है।"

सिद्धार्थ ने झल्लाकर कहा, "बारिश तो शाम से ही शुरू हो गयी थी। तुम्हारी बेटी अगर चाहती, तो जरा पहले नहीं लौट आती ? अब तो ट्राम-बसें भी नहीं चल रही हैं।"

—तो क्या वह अलका के घर—?

अलका बुआ का घर भवानीपुर में है। आफिस से लौटते हुए सुतपा कभी-कभी उस घर के भी एकाध चक्कर लगा आती थी। दो-एक रात वहां रह भी गयी है, लेकिन हर बार घरवालों को बता कर गयी है। मां, मानो जी-जान से यह यकीन करने की कोशिश कर रही थी कि सुतपा वहीं रुक गयी होगी। सिद्धार्थ को भी करीब-करीब यही आशंका हो रही थी कि इतनी भीषण आंधी-पानी में सुतपा फंस गयी होगी और घर नहीं लौट पायी। वह अलका बुआ के घर चली गयी होगी। आखिर वह किसके हाथ खबर भिजवाती ?

छोटे कक्का बुखार में ही उठकर मां के कमरे तक आए। उन्होंने कहा, "अलका के यहां तो फोन है न ? अगर खबर मिल जाती—"

ऊपर मंझले कक्का के यहां फोन है। लेकिन इधर दो सालों से बातचीत लगभग बन्द है। वैसे आफत-विपदा के समय, इतना सोचने से काम नहीं चलता।

सिद्धार्थ ने ही पूछा, "ऊपर रुनू दा के यहां से एक फोन कर आऊं ?"

मां ने अपनी आशंका दबाते हुए मना कर दिया, "नहीं, नहीं, उन लोगों से कुछ कहने की जरूरत नहीं है, मैं जानती हूं, ये लोग भी हमारी रत्ती-भर मदद नहीं करेंगे, ऊपर से इधर-उधर बदनामी करते फिरेंगे।

दरअसल असली परेशानी यही थी कि सुतपा के बारे में घर के हर व्यक्ति का विश्वास कमजोर पड़ चुका है, वरना सुतपा ऐसी कोई बुद्धू या डरपोक लड़की नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। बारिश के कारण अगर नहीं लौट सकी, तो कहीं और ठहर गयी होगी, इससे ऐसा कुछ नहीं था-जो नितान्त अस्वाभाविक लगे। यूं भी वह अचानक किसी मुसीबत में पड़ने वाली लड़की नहीं है। घर में कोई किसी से कुछ बोल नहीं रहा था, लेकिन सबके चेहरे पर आशंका की छाया थी। दरअसल सुतपा अब उनकी अटकलों के बाहर जा चुकी है।

....और कहां से टेलीफोन किया जाए ? गली के मोड़ पर बिजली की दुकान में भी फोन है। रात को उस दुकान में एक लड़का सोता है, अगर उसे जगाकर फोन किया जाए....

सिद्धार्थ ने पायजामा मोड़कर घुटनों तक चढ़ा लिया और छाता लेकर निकल पड़ा। बारिश अभी भी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। सड़क का पानी घुटनों के ऊपर तक चढ़ आया। वह पानी में रास्ता बनाता हुआ, किसी तरह बिजली की दुकान पर पहुंचा और उस आदमी को जगाकर फोन करने लगा। नम्बर डायल करते हुए अचानक उसे खटका लगा। अलका बुआ के यहां फोन करना क्या उचित होगा ? अगर सुतपा वहां न हो तो वह लोग बेकार ही परेशान होंगे। ऐसा भी तो हो सकता है कि वह किसी सहेली के घर ठहर गयी हो। उसके मन में घरवालों का डर-भय तो रहा नहीं। घर में सूचना भिजवाने का उसे ख्याल भी नहीं आया होगा।

सिद्धार्थ सुतपा की दो-एक सहेलियों को पहचानता भी है। एक लड़की सुतपा के आफिस के बगल में ही काम करती है। पहले सुतपा उसके बारे में कितनी बातें किया करती थी। लेकिन उनके यहां भी फोन करने की हिम्मत नहीं हुई। एक नाम काफी देर से उसके दिमाग में घूम रहा था-अनन्त सान्याल ! अचानक उसके सारे बदन में झुरझुरी फैल गयी। अगर सच ही वह अनन्त सान्याल के घर हो, तो....? नहीं ....नहीं ! यह असम्भव है ! काफी सोच-विचारकर उसने टेलीफोन-गाइड में अनन्त सान्याल का नम्बर खोज निकाला और उनका नम्बर डायल करने लगा। उसका हाथ कांप रहा था। काफी देर तक इन्गेज्ड़-टोन आता रहा। कुछ देर सिद्धार्थ ने दुबारा नम्बर डायल किया। इस बार भी वहां की लाइन इन्गेज मिली। इतनी रात गये वह आदमी इतनी-इतनी देर तक....किससे बातें कर रहा है ? तीसरी बार भी जब उसे नम्बर नहीं मिला तो उसने इन्क्वायरी का नम्बर मिलाया। उधर से किसी की झल्लायी हुई आवाज सुनाई दी, "लाइन खराब है, जनाब ! इस एक्सजेंज की सारी लाइनें आउट-ऑफ-आर्डर हैं।"

अब वह क्या करे ? सिद्धार्थ दुविधा में पड़ गया। अनन्त सान्याल की लाइन न पाकर जाने क्यों उसने राहत की सांस ली।

इतनी देर से दुकानदार मन ही मन झुंझला रहा था। उसने उसकी तरफ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाराजगी से देखकर पूछा, "हो गया, भाई साहब ?"

सिद्धार्थ अभी भी हाथ में रिसीवर थामे हुए कुछ सोच रहा था। वह अकेले किसी बात का निर्णय नहीं ले पाया था। इस वक्त अगर और कोई भी उसके साथ होता ....। काश ! वह टूनू को ही अपने साथ ले आता....। उसने दुकानवाले से कहा, "बात यह है कि मेरा छोटा भाई अभी तक घर नहीं लौटा–मां बहुत परेशान हो रही हैं।"

उस आदमी ने जमुहाई लेते हुए कहा, "जैसी भीषण बारिश हो रही है....आ नहीं पाया होगा। किसी दोस्त-वोस्त के यहां रुक गया होगा। वैसे भी आप क्या कर सकते हैं ? इस वक्त अगर थाने में भी रिपोर्ट लिखवाने जाएं तो पुलिस भी इस बारिश में खोजने नहीं निकलेगी, महाशय।"

सिद्धार्थ जैसे बेहद निश्चिन्त हो आया। सच ही तो, जब सड़कें पानी में तैर रही हैं–इस वक्त कुछ भी करने का चारा नहीं है। सिद्धार्थ उसी तरह पानी में छप्-छप् करता हुआ घर लौट आया।

मां बिस्तर पर बेहोश की तरह पड़ी हुई थी। उन्हें देखकर साफ जाहिर था कि मारे रुलाई के उसकी देह रह-रहकर कांप उठती थी। कक्का ने भी इधर तीन-चार दिनों से दाढ़ी नहीं बनाई थी। उनका मुर्झाया हुआ चेहरा और करुण हो आया था। उन्होंने जरा झुककर मां का हाथ छूकर दबी आवाज में मनुहार करते हुए कहा, "भाभी ! भाभी !! पहले से ही यूं हिम्मत मत हारो। हो सकता है, कुछ भी न हुआ हो। वह जरूर किसी सुरक्षित जगह पर रुक गयी होगी।"

सिद्धार्थ को देखते ही वह उठकर खड़े हो गये। उन्होंने घबराई हुई आवाज में पूछा, "क्यों, कुछ पता चला ?"

सिद्धार्थ ने मां की तरफ बढ़ते हुए कहा, "मां, उठो ! कहीं कुछ नहीं हुआ है। तपू अलका बुआ के यहां है।"

मां ने सिद्धार्थ की तरफ टटोलती हुई निगाहों से देखा। फिर शिथिल आवाज में पूछा, "तपू ने खुद आकर तुझसे फोन पर बात की ?"

–हां-हां ! उठो ! अब चलो, कुछ खा लो।

–मुझे छूकर कह रहा है न ?

–अरे ! मैं क्या झूठ बोलूंगा ? लो, तुम्हें छूकर कह रहा हूं ! चलो, अब उठो ! उसने अच्छा ही किया, जो वहां रुक गयी। वैसे वह शाम से ही इस इन्तजार में थी कि हम लोग उसकी खोज-खबर लेने को फोन जरूर करेंगे।

टूनू किताब पढ़ते-पढ़ते काफी देर पहले ही सो गया था। उसने कमरे की बत्ती तक भी नहीं बुझायी थी। सिद्धार्थ बत्ती बुझाकर उसकी बगल में लेट गया। काफी देर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक उसे नींद नहीं आयी। वह अंधेरे में आंखें खोले हुए चुपचाप लेटा रहा। आज शाम से ही तीखी बारिश शुरू हो गयी थी। अभी भी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। पानी बरसने की घिसी-पिटी आवाज ! कहीं छत पर पाइप चू रहा है ! हहराकर पानी गिरने की आवाजें आ रही हैं। बीच-बीच में तूफानी हवा की सांय-सांय ! किसी मकान की कोई खिड़की खुली रह गयी है, हवा के साथ बार-बार दीवार से टकराकर बज उठती है। बंगाल की खाड़ी में कहीं तापमान घट गया है। मौसम की सरसराती हुई हवाओं और बदलियों की आंख-मिचौनी शुरू हो गयी। हवा और तूफान मानो समूचे कलकत्ते शहर पर छा गए हों। तूफान के शोर और एकरस बरसात में समूचा कलकत्ता शहर जैसे निष्क्रिय और बेजान हो आया था। सिद्धार्थ को नींद नहीं आ रही थी। उसने खुली हुई आंखों से अंधेरे को निहारते हुए अचानक ही महसूस किया कि वह बेहद, बे–हद अकेला है। इतनी सारी जिम्मेदारियां वह अकेला निभा पा रहा है।

कहीं भयंकर बज्रपात हुआ था। समूचा मकान बिजली की चकाचौंध से जगमगा उठा। सिद्धार्थ हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने टूनू को झकझोरकर जगाया। "टूनू ! एई, टूनू !"

टूनू की नींद नहीं टूटी ! वह करवट बदलकर फिर सो गया। काफी आवाजें देने पर अचानक वह भी चौंककर उठ बैठा, "क्या हुआ ? क्या हुआ दद्दा ?"

सिद्धार्थ ने खाली आवाज में कहा, "तपू आज रात घर नहीं लौटी है।"

टूनू को नींद की खुमार में उसकी बात ठीक-ठीक समझ नहीं आयी। पूछा, "क्या ? क्या हुआ है ?"

–तपू आज घर नहीं लौटी, तुझे पता है ? उसने कोई खबर भी नहीं भिजवाई।

–कौन नहीं लौटी ? दिदिया ?

टूनू कुछेक पल सोचता रहा, फिर अंधेरे में ही खटिया से नीचे उतरकर बत्ती जला दी। वह भाई के चेहरे की तरफ देखता रहा। सिद्धार्थ का ऐसा हारा हुआ, असहाय चेहरा उसने पहले कभी नहीं देखा। उसने खूंटी से शर्ट उतारते हुए कहा, "चल, बाहर चलें।"

–अभी कहां जाएगा ? किससे पता करेगा ?

–अस्पतालों में पता किया था ?

–अस्पताल ?

–वैसे मेरा भी यही ख्याल है कि ऐसी कोई दुर्घटना नहीं हुई होगी। वह किसी के घर-वर तो नहीं रह गयी ?

–अब यह मुझे क्या मालूम ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूनू थोड़ी देर जाने क्या सोचता रहा। वैसे भी घर के बारे में वह कोई खास खबर नहीं रखता। घर के मामलों में परेशान होने की उसकी आदत भी नहीं है ! लेकिन इस वक्त आधी रात को सिद्धार्थ के चेहरे की उड़ी हुई रंगत उसे परेशान कर गयी। वह धीमे कदमों से आगे बढ़ा और सिद्धार्थ के कंधे पर हाथ रखकर बड़े भाई की तरह उसे तसल्ली देते हुए कहा, "तू इतना घबड़ा क्यूं रहा है ? लगता है, बारिश की वजह से कहीं अटक गयी। दिदिया ऐसी लड़की नहीं है कि गली-चौराहे पर गुम हो जाए। वैसे भी अगर वह एकाध रात घर से बाहर कहीं और भी गुजारती है, तो यू शूड़ नॉट माइण्ड। हां, तुझे एतराज नहीं होना चाहिए।''

–ऐसी बात नहीं हैं तपू, दरअसल बच्ची है और जिद्दी है। उसमें अपना भला-बुरा समझने की आखिर अक्ल भी कितनी है ?

बच्ची है ? दिदिया बच्ची है ? हद्द हो गई, आज की दुनिया में कोई भी बच्चा नहीं है। अच्छी खासी बीस साल की जवान लड़की है। आफिस में नौकरी करती है। शी इज मैच्योर इनफ। काफी समझदार है ! मेरा ख्याल है....कहते-कहते टूनू ने बाहर की आहट लेने की कोशिश की, फिर पूछा, "मां क्या कर रही है ?''

–मां से मैंने झूठमूठ कह दिया है कि तपू अलका बुआ के घर है। कम-से-कम आज की रात तो....

सिद्धार्थ की बात सुनते ही उसका चेहरा एकबारगी चमक उठा। मानो सारी दुश्चिन्ता मिट गयी हो, "गुड। वह तूने बुद्धिमानी का काम किया ! वन्डरफुल ! फिर तो कोई झमेला ही नहीं रहा।''

–लेकिन तपू अगर वहां न हो ?

–तो भी क्या फर्क पड़ता है ! अरे, मां को कुछ पता न चले, बस्स ! अच्छा, मान ले, दिदिया आज अपने किसी ब्वाय-फ्रेंड के साथ रात गुजार रही हो, इससे क्या सचमुच कोई फर्क पड़ता है ?

–तू जरूरत से ज्यादा बकवास करने लगा है, टूनू ! तुझसे कोई काम-धाम नहीं होने का–

–अरे, भाई, मैं तो एक बात कह रहा था। हो सकता है, वह अलका बुआ के यहां ही हो, लेकिन अगर वहां न भी हो, तो भी कौन-सा महाभारत का युद्ध हो जाएगा ? मां को समझा ले, बस !....चल, अब, सो जा।''

सुबह से ही छोटे कक्का का बुखार तेज हो गया। उनकी दोनों आंखें सुर्ख हो आयीं। उन्हें शायद सांस लेने में भी तकलीफ हो रही हो। तेज बुखार में भी उन्होंने कई बार पूछा, "तपू लौट आयी ? क्या कहा, अभी भी नहीं लौटी ?''

सिद्धार्थ ने उनके सिरहाने खड़े होकर कहा, "तपू ने कहा है कि आज भी अगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पानी जमा रहा, तो वह अलका बुआ के घर से सीधे आफिस चली जाएगी। अब शाम को ही घर लौटेगी ?''

"तू जरा, तपू को टेलीफोन कर दे। आज उसे दफ्तर जाने की जरूरत नहीं है। मेरी बीमारी सुनकर वह दौड़ी चली आएगी।....पहले वह कितनी बार मेरा सिर दबाया करती थी।''

मां सिद्धार्थ की तरफ खोज-भरी निगाहों से देखती रही। शायद वह सिद्धार्थ के चेहरे की रेखाएं पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

सिद्धार्थ निहायत बेफिक्र अन्दाज में बातें करता रहा। यहां तक कि जब वह बाथरूम में मुंह धोने घुसा तो बेवजह सीटियां बजाता रहा। लेकिन उसकी जुबान में अजीब-सी कडुआहट भर गयी थी। उसे लगा, उसके हाथ-पैर जैसे सुन्न हो गये हैं।

सिद्धार्थ ने टूनू को इशारे से बुलाकर, उससे अलका बुआ के यहां एक चक्कर लगा आने को कहा। उसने टूनू को समझाकर कहा कि उन लोगों से कुछ पूछने की जरूरत नहीं है। तपू अगर वहां हो, तो पता लग जाएगा और अगर, वहां न हो तो वह इधर-उधर का बहाना बनाकर, मैनेज कर ले। उन लोगों को इस बारे में कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है।

बारिश का सिलसिला भी अभी खत्म नहीं हुआ था। अभी बड़ी-बड़ी बूंदें बरस रही थीं। फुटपाथों पर पानी जमा हुआ ! ट्राम-बसें भी जाने चल रही हैं या नहीं ! लेकिन सरकुलर रोड में पानी नहीं जमता और अगर पानी जमा भी तो, टूनू अब भी परवाह नहीं करता। टूनू ने अपना पैण्ट मोड़कर ऊपर चढ़ा लिया और सुबह सात बजे ही निकल पड़ा।

करीब नौ बजे वह वापस लौट आया। उसका चेहरा उदास था। सिद्धार्थ उसे देखते ही समझ गया। टूने ने इशारे-इशारे में बताया कि सुतपा वहां नहीं मिली। उसने आसपास मां को न देखकर उसके कान में फुसफुसाते हुए पूछा, "दिदिया घर से झगड़कर तो नहीं गयी है ? मेरा ख्याल है दिदिया को यहां रहना अच्छा नहीं लगा, इसीलिए वह कहीं और चली गयी। चल, देखें, कमरे में कहीं कोई खत-वत तो नहीं रख गयी है ? तब तक मैं मेडिकल कालेज का एक चक्कर लगाकर आता हूं–''

सिद्धार्थ ने शर्ट पहनते हुए कहा, "आज तू घर पर ही रहना, टूनू ! जरूरत पड़े तो मां से झूठ बोलकर मैनेज कर लेना। मैं जरा, बाहर से आता हूं।''

रास्ते पर बहुत कम बसें आ-जा रही थीं। सिद्धार्थ उस भयंकर भीड़ में भी बौखलाया हुआ सा बस की रॉड पकड़कर झूल गया। कीचड़ के छींटों ने उसके कपड़ों का बुरा हाल कर दिया। वह बस से उतरकर लगभग दौड़ता हुआ अनन्त सान्याल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की कोठी पर पहुंचा और बेल दबाया।

करुणा देवी ने ऊपर बरामदे से झांककर देखा। पल-भर के लिए वह भी सिद्धार्थ की तरफ विस्मित निगाहों से देखती रही, फिर हड़बड़ा कर कहा, "ठहरो, मैं आती हूं।"

वह पल-भर में नीचे उतर आयी और दरवाजा खोलकर पूछा, "क्या बात है ?"

–मैं सूतपा, के बारे में खबन लेने आया था।

–सुतपा तुम्हारी बहन है न ? क्या हुआ है, उसे ?

–कल रात घर नहीं लौटी है।

करुणा देवी पल-भर को मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ी रहीं। अचानक उनका सौम्य-गम्भीर चेहरा तल्खी में बदल गया। उन्होने चीखते हुए कहा, "मैंने कहा नहीं था ? मैंने तो तुम्हारे काका को पहले ही आगाह कर दिया था। मैं खुद जाकर उन्हें सारी बात बता आयी थी, फिर भी तुम लोग उसे सम्हाल नहीं पाए ? मुझे पता था, वह लड़की अपना भी सर्वनाश करेगी और साथ ही मेरी दुनिया में भी आग लगाएगी।"

–सुतपा कहां है, आपको मालूम है ?

–ठहरो, बुलाती हूं !

करुणा देवी हड़बड़ाती हुई ऊपर चली गयीं। ऊपर से एक नौकर ने झांककर देखा और फिर वापस चला गया। सिद्धार्थ उसके विशालकाय गेट के सामने अकेला खड़ा रहा।

सिद्धार्थ बेहद चौकन्ना था, मानो किसी दुश्मन के किले में खाली हाथ चला आया हो ! आसपास से हजारों दुश्मनों ने उसे घेर लिया है और उसके करीब आते जा रहे हैं। वह जानता है, उसे अकेले ही लड़ना होगा।

ऊपर से कुछ तोड़-फोड़ की आवाजें आ रही थीं। दो व्यक्तियों की क्रुद्ध चीखें ! यानी अनन्त सान्याल घर पर ही हैं ? सिद्धार्थ फिर गड़बड़ा गया।

थोड़ी देर बाद वहीं सीढ़ियों पर किसी के कदमों की आहट सुनाई दी। अनन्त सान्याल सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। उनके पीछे-पीछे बौखलायी हुई करुणा देवी !

अनन्त सान्याल ने पत्नी से अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा, "उफ ! करुणा, यह क्या पागलपन है ? तुम कहां जाओगी ? इस वक्त उस लड़की को खोजना होगा–"

करुणा देवी हिंस्त्र आवाज में गुर्रा उठीं, "तुम उसे खोजने जाओगे ? तुमने ही तो उसे कहीं छुपा दिया है, अपने उस बगीचे में–"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बेमतलब ही बकवास किए जा रही हो ? कल मैं रात साढ़े-सात बजे ही घर नहीं लौट आया था ?''

....मैंने कितनी बार कहा कि....

–अरे छोड़ो, वह सब तो तुम्हारी चालबाजी है। असल में तुमने ही उस लड़की का दिमाग खराब किया है। बुढ़ाये में जिन लोगों की नीयत खराब हो जाती है, वह–

–सुनो, इस वक्त अगर ये सब बातें न करो तो काम नहीं चलेगा ?

–नहीं, मैं जरूर करूंगी। आखिर मैं क्यों चुप रहूं ? तुम जो चाहे करते फिरो और मैं....? उस दिन तुमने उस लड़की को अपनी गोद में नहीं बैठा रखा था ? मैंने अपनी आंखों से देखा था–

–इश्श ! छिः-छिः-छिः–करुणा, तुम ये सब टुच्ची बातें....! सुतपा मेरी बेटी की उम्र की है। मैं उसे अपनी बेटी समान....

–बेटी समान है ? मुझसे ही चालबाजी ? मेरी आंखें क्या फूट गयी हैं ? मैं पूछती हूं, तुम मुझे तबाह करने पर आखिर क्यों तुले हो ? क्यों, उस दुध-मुंही लड़की का सर्वनाश कर रहे हो ?

अनन्त सान्याल के चेहरे पर दुःख और यन्त्रणा की रेखाएं उभर आयीं। ऐसा लगा, वह बुरी तरह आहत हो उठे हैं। उन्होंने पत्नी की तरफ देखते हुए बिना किसी चीख-चिल्लाहट के गम्भीर आवाज में कहा, "तुम्हारे जो जी में आए, बकवास करो, चिल्ला-चिल्लाकर आसमान सिर पर उठा लो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने सुतपा को–''

अचानक उन्होंने सिद्धार्थ का हाथ पकड़कर बेहद अधिकार-भरे स्वर में आदेश दिया, "चलो, फौरन चलो। बाकी बातें मैं गाड़ी में सुनूंगा।''

सिद्धार्थ को एतराज करने का मौका ही नहीं मिला। वह उसे लगभग खींचते हुए बाहर ले गये और गाड़ी में बिठाकर, कार स्टार्ट कर दी। उन्होंने गेट से निकलते हुए पूछा, "हां, अब बताओ ! क्या मामला है ''

–कल वह घर नहीं लौटी ?

–वह तो मैं सुन चुका ! लेकिन वह जा कहां सकती है ? किसी नाते-रिश्तेदार के घर–?

–मुझे नहीं मालूम।

–कल दफ्तर से सुतपा ने घण्टे-भर पहले ही छुट्टी ले ली थी। मेरे लाख पूछने पर भी नहीं बताया कि वह कहां जा रही है। दरअसल, कल मैं उससे नाराज भी हो गया....घर में तो कोई कहा-सुनी नहीं हुई थी ?

–नहीं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–मेरी पत्नी जो गन्दी बातें बक रही थी। उम्मीद है। तुम उन पर यकीन नहीं करोगे। मैं सुतपा को कहीं छुपाकर रखूंगा ? ऐसी गन्दी-गन्दी बातें उसके दिमाग में आयीं कैसे, मुझे हैरत है ! असल में उसे कोई बच्चा नहीं है न ! खैर, मेरा एक मकान बेहाला में है, अभी हम वहीं जा रहे हैं।

उनकी कार बेहाला की तरफ जा रही थी। बेहाला में कार काफी अन्दर एक खूबसूरत से छोटे मकान के सामने आकर रुकी। उन्होंने बेहद शान्त आवाज में कहा, "जाओ, पूरे मकान की तलाशी ले लो, दरबान से पूछकर अपना शक मिटा लो कि सुतपा है या नहीं।"

सिद्धार्थ संकोच से गड़ा जा रहा था। अनन्त सान्याल के रोबीले व्यक्तित्व के आगे उसकी जुबान ही नहीं खुल रही थी। उसे उतरना नहीं पड़ा। गाड़ी की आवाज सुनते ही दरबान बाहर निकल आया।

अनन्त सान्याल ने पूछा, "कल शाम को यहां कोई मेम साहब आयी थीं ?"

दरबान ने अचकचाकर कहा, "नहीं बाबूजी।"

"सुतपा मेमसाहब को तुमने कब देखा था ?"

"वह तो पिछले इतवार को–"

सिद्धार्थ के तन-बदन में सिहरन फैल गयी। यानी यहां सुतपा बहुत बार आ चुकी है। छोटे कक्का ने ही कहा था। खैर, अभी नाराज होने का वक्त नहीं था। पहले सच सुतपा का खोजना जरूरी था।

अनन्त सान्याल ने गाड़ी घुमाते हुए कहा, "अब हम लाल बाजार चलें ! तुम्हारे घर में–"

"नहीं, घर में अभी किसी को नहीं मालूम। मैंने कह दिया है, सुतपा बुआ के घर है, मुझसे कहकर गयी है। छोटे कक्का बीमार हैं–।

–अच्छा किया।

अनन्त सान्याल ने अपनी कार सीधे लाल बाजार कम्पाउण्ड के अन्दर ले जाकर रोकी। उनकी एक पुलिस आफिसर से जान पहचान थी। सिद्धार्थ को लेकर वह सीधे उनके कमरे में चले आए। वहां से फिर मिसिंग-स्क्वैड !....वहां जिरह पर जिरह, मानो वही अपराधी आसामी है। उनमें एक आफिसर काफी रंगीनमिजाज का था। बात-बात में ओंठ काटना मानो उसकी खास आदत थी। वह घुमा-फिराकर बार-बार एक ही सवाल पूछ रहा था, "अरे भई, उनकी उम्र कितनी है ?" बीस पार करके इक्कीस में कदम रखा है ? तब तो वह आजाद है ! क्या ख्याल है ? क्या कहा–? दो-तीन साल से नौकरी भी कर रही है ? फिर तो रास्ते में गुम हो जाने या चोरों के पल्ले पड़ने की भी कोई सम्भावना नहीं है। हरगिज....हरगिज नहीं ! वेरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनलाइकली ? भई किसी गैर-बिरादरी से इश्क-विश्क का मामला तो नहीं था ? असल में हमारे देश में जाति-प्रथा का इतना बुरा सिस्टम–''

अनन्त सान्याल ने उन्हें बीच में ही काटते हुए कहा, "नहीं, नहीं ! ऐसी कोई बात नहीं थी। वह अचानक किसी के साथ चल देने वाली लड़की नहीं है। वह बेहद शरीफ लड़की है–''

–"शरीफ लड़की है ? अरे, भई, मैंने कब कहा कि बुरी लड़की है। अगर आप इस लाइन में होते तो आपको भी तरह-तरह के अनुभव होते !''

इसके बाद वह दोनों काफी देर तक पुलिस-वैन के पीछे-पीछे अपनी कार दौड़ाते रहे। अनन्त सान्याल सिद्धार्थ को अपने साथ लिए-लिए घूमते रहे।

चितपुर और सेन्ट्रल एविन्यू के बीचोंबीच एक और मुहल्ला है। सिद्धार्थ ने इस मुहल्ले के बारे में थोड़ा-बहुत पहले भी सुना था। वहां पुलिस-वैन रुकते ही, कुछेक पुलिस खटाखट उतर पड़ी और आसपास के मकानों में घुस गयी। भरी दोपहरी में कुछेक लड़कियां नींद से उठकर आंखें मलते हुए दरवाजे पर आ खड़ी हुई। उनमें से कुछ लड़कियां सिर्फ पेटीकोट ब्रेसियर में ही थीं। सिद्धार्थ को घूम-घूमकर उनका चेहरा निहारना पड़ा, सुतपा कहीं यहां तो नहीं है !

सिद्धार्थ ने पुलिस के आगे एतराज भी उठाया था, "नहीं ! नहीं ! नहीं ! सुतपा इन जगहों में नहीं आ सकती। नामुमकिन ! अकल्पनीय !!''

लेकिन पुलिस अफसरों ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उन्हें अपनी ड्यूटी पूरी करनी थी। इसके अलावा उसके साथ अनन्त सान्याल भी थे, जो उनके एसिटैण्ट पुलिस क़मिश्नर के खास दोस्त थे।

वहां से निकल कर सिद्धार्थ चुपके से अपने घर चला आया। सुतपा शायद लौट आयी हो। उसके बाद उसे बहुबाजार ले जाया गया।

सिद्धार्थ की सारी चेतना ही जैसे अवश होती जा रही थी। उसमें प्रतिवाद करने की भी ताकत नहीं बची थी। वह पत्थर की मूर्ति की तरह पुलिस के साथ हर मकान के अलग-अलग कमरों के सामने, लाइन से खड़ी छोटी-बड़ी हर उम्र की औरतों का चेहरा निहारता रहा। किसी जमाने में वह भी औरतों के अंग-प्रत्यंग को बेहद ललचायी हुई आंखों से निहारता था। इस वक्त उसे कुछ भी याद नहीं था। वह तो उन लड़कियों की तरफ अच्छी तरह देख भी नहीं रहा था–बार-बार सिर हिलाए जा रहा था–ना ! ना !! ना !!!

बहुबाजार से धर्मतल्ला–! फ्री-स्कूल स्ट्रीट की तरफ गाड़ी मुड़ते ही उसकी छाती धड़क उठी। यहीं किसी मकान में वह आदिनाथ के साथ लतिका से मिलने आया था। लतिका उसे जरूर पहचान लेगी। इतने सारे लोगों के सामने, पुलिस के सामने अगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लतिका ने–सिद्धार्थ का दिमाग भन्न उठा। मारे डर के उसे पसीना छूटने लगा। इशश् ! आदिनाथ के साथ वह यहां आया ही क्यों था ? उसकी किस्मत अच्छी थी, लतिका के मकान पर पुलिस ने नजर ही नहीं डाली। पुलिस ने अगले दो-तीन मकानों को घेर लिया।

वैसे पुलिस को भी यह उम्मीद नहीं थी कि जिसकी तलाश हो रही है, वह यहां मिल सकती है। बस, खाना-पूर्ति के लिए खोजने के नाम पर खोज हो रही थी। जिन घरों की तलाशी ली जा रही थी, वहां की औरतें भी मानो इस खाना-तलाशी की अभ्यस्त हों। बस औरतें अन्दर ही अन्दर खीजती हुई, अपने-अपने दरवाजे पर खड़ी थीं। उन्हें भी मालूम था कि पुलिस किस तलाश में यहां आयी है, वह यहां किसी दिन भी नहीं मिलेगी। वहां जो औरतें रहती हैं, उनकी तलाश में कभी कोई नहीं आया।

उस अफसर ने, जिसे बात-बात पर होंठ काटने की आदत थी, अनन्त सान्याल की तरफ देखते हुए कहा, ''करीब-करीब सारी जगहें तो देख ली गयीं, सियालदह के पास के दो होटल बच गए। उसके बाद अखबारों में विज्ञापन दे डालिए। मेरा तो ख्याल है–''

''चलो, पहले वह दोनों होटल भी देख डालें।''

कार स्टार्ट होते ही, सिद्धार्थ की जड़ता मानो समाप्त हो गयी। उसने अनन्त सान्याल की तरफ घूरकर देखा। उन्होंने अपने दोनों होंठ कसकर दबा रखे थे। आंखें सुदूर में खोयी हुई, स्टीयरिंग पर हाथ रखे हुए, वह जरा आगे की तरफ झुके हुए थे। उनके चेहरे से साफ जाहिर था कि वह भीतर ही भीतर उत्तेजना से कांप रहे थे। सुतपा को खोज निकालने के लिए वह दृढ़प्रतिज्ञ थे। इसके लिए वह धरती के आखिर छोर तक जाने के लिए भी राजी थे।

सिद्धार्थ को अपने पर ही झुंझलाहट होने लगी। आखिर वह अनन्त सान्याल की गाड़ी में इतनी देर से क्यों बैठा है ? उस आदमी से उसका क्या रिश्ता है ? उस आदमी के घर जाकर वह उसकी घड़ी तोड़ आया था, लेकिन उसने उस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। इसी आदमी ने सुतपा को गुमराह किया है। अभी कुछ साल पहले तक सुतपा बेहद सरल और मामूली लड़की थी। इसी आदमी ने उसकी जिन्दगी तहस-नहस कर डाली। उसके तन-मन के साथ प्यार का खिलवाड़ किया है। सुतपा को बगीचे में ले जाने का क्या मतलब था ? सिद्धार्थ को पक्का विश्वास होता जा रहा कि सुतपा अगर सचमुच ही भटक गयी है, तो यह हरामी का बच्चा अनन्त सान्याल ही उसके लिए जिम्मेदार है !

–गाड़ी रोकिए ! मैं उत्तर जाऊं ?

–उतर जाओगे ? यहां क्यों ? अभी तो सियालदह–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—नहीं, मैं सियालदह नहीं जाऊंगा। मुझे खोजने की जरूरत नहीं है।

—अरे ? तुम नहीं जाओगे तो कैसे चलेगा ? तुम उसके रिश्तेदार हो। साथ में अगर कोई रिश्तेदार न हो तो खोजना सम्भव नहीं होता।

—मैंने कहा न, गाड़ी रोकिए ! मुझे नहीं जाना है !

अनन्त सान्याल ने अब बाकायदा डांट दिया, "पागलपन मत करो ! चुपचाप बैठे रहो।"

उनकी धमकी सुनते ही उसका पारा और चढ़ गया। उसने चलती हुई गाड़ी का दरवाजा खोल दिया और अनन्त सान्याल की तरफ भयंकर गुस्से भरी नजरों से देखा। सामने ट्रैफिक की लाल बत्ती होते ही वह झट से उतर गया और अपनी कमर पर हाथ रखकर उसने अनन्त सान्याल के रोबीले और गम्भीर चेहरे की पूरी तरह उपेक्षा करते हुए दांत-किट-किटाकर कहा, "सूअर के बच्चे, तुझे भी एक दिन मैं देख लूंगा ! तूने समझ क्या रखा है ? साला, बुड्ढा, भूत ! किसी दिन अगर मैं तेरी आंखें न निकाल लूं तो मेरा नाम नहीं ! तू मुझे नहीं पहचानता....स्साले...."

अनन्त सान्याल उसकी तरफ उद्भ्रान्त की तरह देखते रहे।

सिद्धार्थ ने पुलिस-वैन के लोगों को इशारे में बता दिया कि वह नहीं जाएगा।

घर लौटते-लौटते ढ़ाई बज गए। टूनू ने न जाने कितनी तरह का झूठ जड़ा होगा। मां का चेहरा काफी नॉर्मल लगा। छोटे कक्का सो रहे थे। टूनू जरा देर पहले खटिया पर चित्त लेटकर सो गया था। तपी हुई दोपहरी भांय-भायं कर रही थी। वह बुरी तरह थक गया था। नहीं, अब वह हार रहा है। काश, कोई होता जो उसे इन झंझटों से मुक्ति दिला पाता। अगर अजय दा उसे यह नौकरी दिला देते हैं तो वह कोशिश करेगा कि उसे दिल्ली ट्रांसफर कर दिया जाए। केया भी तो दिल्ली में रहेगी।

जाने कब उसे नींद आयी। मां ने ही उसे आवाज देकर जगाया, कोई उसे बाहर बुला रहा था। सिद्धार्थ हड़बड़ाकर बाहर निकला। दरवाजे पर रतन को देखकर वह खीज उठा। इस वक्त वह रतन से गप्पें मारने के मूड में नहीं था। इन दिनों रतन जब भी मिलता है, लड़कियों के बारे में फूहड़ बातें करने के अलावा और कुछ नहीं करता। इस वक्त भी उसके चेहरे-मोहरे से यह स्पष्ट था कि वह ऐसी ही कोई रसीली कहानी का मसाला लेकर आया है। उसने झुंझलाकर कहा, "क्यों रे ? क्या बात है ? मैं तो अभी बाहर जा रहा हूं।"

रतन ने फुसफुसाकर कहा, "तुझसे एक जरूरी बात कहनी है। तू जरा बाहर चल।"

—बाहर क्यों ? यहीं बोल न !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—नहीं, यहां नहीं बता सकता। तू मोड़ पर आ जा। मैं वहीं खड़ा हूं। काम बेहद अर्जेण्ट है ! फौरन आ।

सिद्धार्थ ने अन्दर आकर शर्ट-पैण्ट पहन ली। उसने खटिया के नीचे से सन्दूक खोलकर रुपए गिने। उसके पास कुल मिलाकर सात रुपये थे। उसने रुपए अपनी जेब में रख लिए। सामने लम्बी-सी शाम और रात बिछी थी। वह अब तक यह तय नहीं कर पाया था कि रात को मां के सामने क्या सफाई पेश करेगा।

रतन बेसब्री से गली के मोड़ पर चहलकदमी कर रहा था। सिद्धार्थ के पास आते ही उसने एक बार चारों तरफ चौकन्नी निगाहों से देखा फिर उसके कान में फुसफुसाकर कहा, "हां रे, तेरी बहन सुतपा कहां है ?"

सिद्धार्थ दो कदम पीछे हट गया और बेहद सख्त आवाज में कहा, "क्यों ? तुझसे क्या मतलब ?"

—अरे ! बता न ! मैंने एक बात सुनी है, इसी से–

—कौन-सी बात ?

—सुतपा कल रात घर नहीं लौटी ?

—दैट्स नन् ऑफ योर बिजनेस ! तुझसे क्या मतलब ! देख रतन मैं तुझे आगाह किए देता हूं– '

—तू इतना नाराज क्यों हो रहा है ? यार, मैं तेरा दोस्त हूं, मैं तेरी मदद करना चाहता हूं। अभी-अभी मैंने ऐसी भयंकर बात सुनी कि दुकान छोड़कर भागा-भागा आया हूं। सुना है कि बादल सुतपा को पकड़ ले गया है।

—बादल ?

—देख, वहां रवि खड़ा है ! मुझ पर भरोसा न हो तो तू उससे ही पूछ ले न !

कुछ दूर पर एक और लड़का था। वह बार-बार इसी तरफ देख रहा था।

सिद्धार्थ तेज कदमों से उसकी तरफ बढ़ गया। बादल ? उसने एक दिन सियालदह में भी सुतपा और बादल को साथ-साथ देखा था। वह दोनों आपस में हंसते-बोलते एक रेस्तरां से निकल रहे थे। उसके बाद बादल कुछ दिनों के लिए जेल चला गया। इस रवि को भी वह कुछ-कुछ पहचानता है। रवि भी बादल का साथी है। सिद्धार्थ ने सीधे-सीधे रवि का कॉलर पकड़कर पूछा, "कहां है ? वह दोनों कहां हैं ?"

रवि ने उसे झटकते हुए कहा, "अरे, छोड़िए साहब। छोड़िए ! इसमें मेरा कोई कसूर नहीं हैं वह तो कल दोपहर को मैं अचानक अपने दोस्त के घर पहुंचा, वहां देखा....मेरा मतलब है, मुझे लगा वह आप की बहन है....खैर, हो सकता है मुझे पहचानने में गलती हुई हो....उसके साथ बादल भी था....इसीलिए सोचा कि...."

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धार्थ ने उसका कॉलर खींचते हुए दांत पीसकर कहा, "कहां हैं यह लोग ?"

–पार्क-सर्कस में।

–चलो, मुझे अभी ले चलो–

–देखो, मैं घर दिखा दूंगा, अन्दर नहीं जाऊंगा।

सिद्धार्थ ने इशारे से एक टैक्सी रोकी और रवि के साथ चल दिया। जाते-जाते उसने रतन को हिदायत दी कि वह किसी के सामने इस बारे में जुबान न खोले, वर्ना उसी की खैर नहीं। उसकी टैक्सी पार्क-सर्कस के एक मकान के सामने रुकी।

रवि ने एक मकान की तरफ इशारा करते हुए कहा, "उस मकान की तीसरी मंजिल में दाहिने फ्लैट में। लेकिन मैं अन्दर नहीं जाऊंगा। बादल से मेरी दुश्मनी चल रही है। वह मुझे जान से मार डालेगा।"

सामने से एक ट्राम जा रही थी। उसने दौड़कर वह ट्राम पकड़ ली।

सिद्धार्थ ने एक बार उस मकान पर नजर डाली। वह क्या अकेला ही जाए ? टूनू भी साथ होता, तो अच्छा....खैर, वह अकेला ही निपट लेगा। कोई क्या कर लेगा। बादल ? हुंह ! उसको भी देख लेगा।

सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचने के बाद उसे फ्लैट खोजने की जरूरत नहीं पड़ी। दूर से ही सुतपा की हंसी स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बहुत दिन हो गये, उसने सुतपा को यूं सहज होकर हंसते नहीं देखा था।

कमरे का दरवाजा खुला हुआ था।

सुतपा आरामकुर्सी पर अधलेटी थी। उसके हाथ में जलती हुई सिगरेट थी। उसने जाने किस बात पर फिर एक जोर का ठहाका लगाया। अचानक सिद्धार्थ को देखकर वह डर से सहम नहीं गयी। बस, चेहरा जरा फक्क पड़ गया। उसने उंगलियों से जलती हुई सिगरेट को धीरे से एक ओर फेंक दिया। कमरे के किनारे वाले मेज के आसपास अन्य तीन छोकरे बैठे थे। उनमें बादल भी था।

सिद्धार्थ का मन हुआ। वह चीखकर रो पड़े। हां, वह सुतपा ही थी। नहीं, कोई उसे जबर्दस्ती पकड़कर नहीं लाया था। अभी-अभी वह ठहाके लगा रही थी। सुतपा को यह कभी विश्वास नहीं आएगा कि उसकी चिन्ता में वह रात भर सो नहीं पाया। सुबह से लेकर दिन भर उसी की तलाश में दौड़-धूप करता रहा। उसका पल-पल कितनी यंत्रणा व छटपटाहट में गुजरा है, उसे भरोसा भी नहीं होगा। उसके लिए वह कितना-कितना घुटता रहा, यह भी वह कभी नहीं समझ पाएगी। वह तो सारी माया-ममता से अपने को मुक्त कर चुकी है। लेकिन, वह ऐसा निर्मम नहीं हो पाया।

–तपू....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–क्या है ?

–तू यहां क्या कर रही है ?

–यूं ही बैठी हूं। इन लोगों से बातें कर रही थी।

–कल तू घर भी नहीं लौटी–

–क्या करती ? लौट नहीं पायी। हमारी गाड़ी खराब हो गयी थी।

–गाड़ी ?

–हां, कल बादल व इन लोगों के साथ मैं डाइमण्ड-हारबर घूमने निकल गयी थी। रास्ते में अचानक बारिश शुरू हो गयी। गड़िया हाट तक आते-आते हमारी गाड़ी खराब हो गयी। अभी थोड़ी देर बाद ही घर लौटने की सोच रही थी।

सिद्धार्थ कमरे की दहलीज पर खड़ा था। वह सुतपा की तरफ अवाक निगाहों से देखता रहा। इधर कई दिनों से वह बहुत बदल गयी थी। उसकी आवाज में किसी तरह का संकोच या दुविधा नहीं थी। वह सुतपा कतई नहीं है, जिसे वह इतने दिनों से जानता-पहचानता था। उसके सामने जो औरत खड़ी थी, वह निहायत अजनबी लगी।

सुतपा ने शायद थोड़ी देर पहले ही पान खाया था। उसके होंठ सुर्ख लाल हो आए थे। वेणी-मुक्त उसके अस्त-व्यस्त बाल पीठ पर छितराए हुए थे। वह आराम-कुर्सी पर पाल्थी मारे यूं बैठी थी, मानो इस कमरे से उसका काफी पुराना परिचय हो। वह सिद्धार्थ को अपनी तरफ घूरते हुए देखकर वह कहीं से नर्वस भी नहीं हुई। वह भी बेहद बोल्डली उसकी तरफ देखती रही।

–तपू, तू क्या हम लोगों से सारे नाते-रिश्ते खत्म कर देना चाहती है।

–अगर तुम लोग ही रिश्ता रखना नहीं चाहते, तो मुझे क्या गरज पड़ी है ?

–आखिर तेरी मंशा क्या है ? तू यहां क्यों बैठी है ?

–मुझे अच्छा नहीं लगता। रोज-रोज उस खूसट-बुड्ढे के साथ सैर को जाते हुए. मैं बोर हो गयी हूं। तुम लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है ? घर में बर्तन घिसूं, झाड़ू लगाऊं, दफ्तर में कलम घसीटूं और शाम को उस बुड्ढे का दिल बहलाऊं ? हरगिज नहीं ! मुझे जो अच्छा लगेगा, मैं वहीं करूंगी। तुम लोगों के लिए मैंने बहुत किया, अब मुझे मुक्ति दो।

–तुझे यह सब अच्छा लगता है ?

–क्या सब ?

सुतपा ने उसकी तरफ सीधे-सीधे चैलेंज उछाल दिया। वह उसकी तरफ बाघिन की तरह गुस्से भरी निगाहों से घूर रही थी–वह जो कहना चाहता है, वह कह डाले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेज के चारों तरफ बैठे हुए लोगों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। वैसे तीनों ही–यहां तक कि बादल भी, काफी कीमती कपड़ों में सजे-संवरे बैठे थे।

बादल के होंठों पर मन्द-मन्द मुस्कान थी। कभी इसी बादल को उसने बेतहाशा पीटा था। बादल क्या वह सब भूल गया।

–इतनी देर बाद बादल ने मजाकिया टोन में हंसते हुए कहा, "अरे, बीनू दा। भीतर आकर बैठो न ! बैठकर इत्मिनान से बातें करो। तुम इतने खफा क्यों हो रहे हो ?''

सिद्धार्थ ने उसकी बातों को नजरअन्दाज करते हुए, जोर से चीखकर कहा–"त–पू। चल, उठ ! मैं कह रहा हूं, उठ वहां से। तुझे अब्भी–इसी वक्त मेरे साथ घर चलन्ा होगा, वर्ना मैं....मैं....''

काफी तेज आवाज में चीखने के बावजूद, उसने महसूस किया कि वह बेहद कमजोर है। मानो इसी एक पल पर उसका जीना-मरना निर्भर करता है ! सुतपा अगर उसकी बात अनसुनी कर दे, अगर इस बार भी उसकी उपेक्षा करे....उसकी बाईस साल की जिन्दगी बिल्कुल अकारथ साबित हो जाएगी। स्नेह, ममता, प्यार–इन सुतपा कहीं कोई मोल नहीं रहेगा।

सिद्धार्थ की समूची प्राण-शक्ति मानो उसकी निगाहों में सिमट आयी। वह सुतपा की तरफ एकटक देखता रहा।

सुतपा ने अलसाकर अंगड़ाई ली। उसने कुछेक पल चप्पल पहनने में गुजार दिए, फिर अपना पर्स खोजने लगी। जब पर्स भी मिल गया तो बेहद अलसायी आवाज में कहा, "अच्छा चलती हूं।'' अचानक दरवाजे पर आकर ठिठक गयी, "लेकिन मैं तेरे साथ नहीं जाऊंगी। मैं अलग जाऊंगी।''

–मतलब ?

–मतलब, मैं क्या दूधपीती बच्ची हूं, जो तू मेरी उंगली पकड़कर घर ले जायेगा ? मैं अब एडल्ट हो चुकी हूं। मुझे हक है कि मैं जो चाहूं, कर सकती हूं।''

सिद्धार्थ अपने को सम्हाल नहीं पा रहा था। उसका जी हुआ कि वह सुतपा के गाल पर कसकर एक थप्पड़ जमा दे। इसके बजाय उसने दांत पीसते हुए कहा, "ठीक है। चल, तू ही आगे जा ! लेकिन तू जब चली जाएगी तभी मैं यहां से हिलूंगा।''

सुतपा सिद्धार्थ की बगल से ऐसे कतरा कर निकली कि कहीं उससे छू न जाए।

उसे बाहर निकलते देखकर सिद्धार्थ ने दबी आवाज में कहा, "मैंने मां से यही कहा है कि तू अलका बुआ के घर है। छोटे कक्का की बीमारी काफी बढ़ गयी है।''

सुपता के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं उभरी। जाने उसने उसकी बात सुनी भी या नहीं। उसने एक बार भी पीछे की तरफ मुड़कर नहीं देखा। वह चप्पलें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चटकाती हुई सीढ़ियां उतरने लगी। जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो गयी, सिद्धार्थ उसे जाते देखता रहा। उसके जाते ही उसने पलटकर कमरे में बैठे हुए तीनों लोगों की तरफ घूरकर देखा, "तुम तीनों को तो मैं पुलिस में दूंगा।"

बादल ने बेहद बदतमीजी से हंसकर कहा, "मां कसम, इस लफड़े में अपना कोई कसूर नहीं। हम क्या उसे जबरदस्ती उठा लाए थे ? सुना नहीं, तुम्हारी बहन ने खुद ही कह दिया वह अब एडल्ट हो चुकी है, यानी ज–वा–न हो चुकी है।"

–चुप रह, बदमाश कहीं का।

–अबे, जाऽ-जा, ज्यादा मस्तानबाजी मत दिखा।

सिद्धार्थ अब अपने को नहीं रोक पाया। वह एक-छलांग में ही बादल के पास पहुंचा और कसकर उसकी गर्दन पकड़ ली। उसने एक धक्के में उसे जमीन पर गिरा दिया और उसकी छाती पर सवार हो गया। बाकी दोनों लोग अभी चुप थे। अचानक उन्होंने दोनों तरफ से उसे कसकर लात जगायी। सिद्धार्थ ने बादल को छोड़ दिया और उन पर टूट पड़ा।

काफी देर तक उनमें बेआवाज मार-पीट होती रही। कुछ ही पलों में उसने अनुभव किया, अपनी दानवी ताकत के बावजूद वह तीन-तीन व्यक्तियों से अकेल नहीं लड़ पाएगा। आज वह बेहद थक गया है। बुरी तरह जख्मी ! उसका मन भी कहीं टूट-फूटकर बिखर गया है। उसके चेहरे पर अचानक एक घूंसा पड़ा। उसके मुंह से खून बहने लगा। उनके हमलों के जवाब में, वह भी शिथिल पावों से लड़खड़ाता हुआ वार पर वार किए जा रहा है। लेकिन, वह हार रहा था। उन तीनों ने उसे तीनों तरफ से घेर लिया और अब धीरे-धीरे करीब आते जा रहे थे। अपनी जान जोखिम में जानकर वह सहम गया। नहीं, उसे जिन्दा रहना है। उसे किसी तरह जान बचाकर भागना होगा। उसने उन्हें धकेल कर दरवाजे की तरफ भागने की कोशिश में बेतहाशा हाथ-पैर चलाना शुरू किया। उसकी एक आंखें बुरी तरह सूज आयी थी। अभी वह दरवाजे तक पहुंचा ही था कि किसी के पांव की ठोकर खाकर वह धड़ाम से मुंह के बल गिर पड़ा। पल भर को उसे लगा अब उठने की कोशिश बेकार है। अब वह यूं ही पड़ा रहे, इसी में उसे आराम आएगा। वह सब मिलकर उसे बेतहाशा पीटते रहें। पीटते-पीटते खत्म कर दें, वह कुच्छ नहीं बोलेगा। अब उसमें विरोध करने का भी दम नहीं रह गया है। वह बुरी तरह थक गया है। अच्छा है ! सब मिलकर उसका खून कर दें....अचानक वह उठकर सीढ़ी की तरफ भागा। बादल ने फिर भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। वह एक छलांग में उसकी तरफ झपटा और उसकी कलाई पकड़ ली। सिद्धार्थ ने भी समूची ताकत बटोरकर उसे एक झटका दिया और अपने को मुक्त कर लिया। वह लगभग लुढ़कते हुए सीढ़ियों से नीचे उतर गया। उन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीनों ने ऊपर की रेलिंग के सहारे खड़े-खड़े जोर का ठहाका लगाया। उनमें से एक ने आगे बढ़कर पच्च से सिद्धार्थ पर थूक दिया।

सिद्धार्थ ने बाहर आकर रूमाल से अपना मुंह गोंछा। सारा रूमाल खून से तर हो गया। समूचे चेहरे में तीखी जलन। उनकी वह व्यंग्य भरी हंसी उसके तन-बदन में तीर की तरह चुभ रही थी। वह कैसे कायर की तरह भाग आया है ? अच्छा, वह क्या हर जगह पराजित होने को बना है ? इससे तो बेहतर था, वह मर जाता, लेकिन भगोड़ा साबित न होता। अपने भरसक वह आखिरी दम तक लड़ता रहता। सिद्धार्थ का गुस्सा आवेग के साथ उछल पड़ा। वह दुबारा उस मकान की तरफ लौटा।

अचानक उसे लगा, इस तरह बेकार प्राण गंवाने से क्या फायदा ? ठीक है, वह दुबारा आएगा। वह हार कर भागने वाला नहीं है। वह फिर लौटेगा और उनमें से एक एक-एक को देख लेगा। इस मकान को वह धूल में मिला देगा। सिर्फ वह मकान ही नहीं, बाकी तमाम लोग–अनन्त सान्याल इण्टरव्यू वाला आफिसर–एक-एक को वह जान से मार डालेगा। वह किसी को भी नहीं छोड़ेगा। अब उसके हाथों से कोई जिन्दा बचकर नहीं निकल सकता। वह हर किसी से बदला लेगा, निश्चित रूप से बदला लेगा।

9

....यहां होटल के कमरे काफी छोटे-छोटे हैं–दिन के वक्त भी अंधेरा छाया रहता हैं बालों में कंघी करने के लिए, उसे दरवाजा खोलकर बरामदे में आना पड़ता है। कमरे में एक खिड़की भी है, लेकिन उसे खोलते ही रसोई का धुंआ और तीखे मसाले की गंध परेशान करती है। इसलिए वह खिड़की कभी नहीं खोलता। उस का भाड़ा ढ़ाई रुपए है। सिद्धार्थ को यह कुछ अधिक महंगा पड़ता है। दो रुपए से कम में दोनों वक्त का खाना भी पूरा नहीं पड़ता।

हर रोज सुबह-सुबह दाढ़ी बनाना भी जरूरी है। अभी तो उसकी पूरी दाढ़ी भी नहीं आयी, बस ठुड्डी के पास जरा–सी ! फिर भी वह हर सुबह आईने के सामने सेफ्टी रेजर लेकर बैठ जाता है। जाड़े की सुबह पानी को हाथ लगाने में भी सिहरन होती है। इस इलाके में हड्डी गलाने वाली ठंडक इसके बावजूद सिद्धार्थ हर रोज शेव करके नहाता है। टेरिलिन की पैण्ट-शर्ट पहनकर टाई की नॉट बांधता है, बेहद सलीके से बाल संवारता है। बिल्कुल फिट-फाट होकर, हाथ में काले रंग का ब्रीफकेस लिए निकल पड़ता है।

मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव की नौकरी उसे नहीं मिली। लेकिन अजय दा ने कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंशों में ही सही, अपनी बात निभायी थी। अपने दफ्तर में ही सेल्समैन की नौकरी दिलवा दी है।

अजय दा ने तसल्ली देते हुए उसकी पीठ थपथपाकर कहा, 'देखो, मन मत खराब करना। बेकार बैठे रहने से किसी तरह के काम में लगे रहना बेहतर है, समझे। मैं भी जब इस कम्पनी में आया था, तो मामूली सेल्समैन की हैसियत से ही नौकरी शुरू की थी।....यहां उन्नति के काफी स्कोप हैं, बशर्ते कि तुम इसमें ईमानदारी से लगे रहो। तन्ख्वाह तो कुल मिलाकर दो-सौ बारह रुपए ही है, लेकिन दवाओं की बिक्री पर अलग से कमीशन मिलेगा।''

अजय दा ने विश्वास दिलाया था कि अगर वह मेहतन से काम करेगा तो डेढ़-दो सौ रुपए कमीशन के झटक लेगा।

सिद्धार्थ जी-जान से मेहतन करता है। मां या छोटे कक्का उसकी इस नौकरी से खुश नहीं हैं। इतनी दूर—पश्चिम दिनाजपुर के क्षेत्र में बालुरघाट। जो लड़का अकेला घर से बाहर नहीं गया, वह इतनी दूर बिल्कुल अकेला रहे, मां इसके लिए राजी नहीं हुई। लेकिन सिद्धार्थ ने किसी की बात नहीं सुनी। वह जोर-जबर्दस्ती चला आया। कलकत्ते में उसके लिए कोई आकर्षण नहीं रह गया था।

यहां आकर सिद्धार्थ ने दो जोड़ी कपड़े बनवाए हैं। ये कपड़े भी मां ने ही खरीद दिये थे। वह जब जाने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ दिखा, मां ने अपने आंचल से आंखें पोंछते हुए, पलंग के नीच से दो मोहरें निकाल कर उसके हाथ पर रख दीं। सिद्धार्थ जब पैदा हुआ था, उसके दादा-दादी ने मुंह दिखाई, मैं दो मोहरें देकर पोते का मुंह देखा था। अतः उन दोनों मुंहर पर उसी का हक था। जब चाय का बिजनेस डूब रहा था, तो उसके बापू ने धंधे को बचाने की आखिरी कोशिश में मां के बहुत सारे गहने गवां दिए। लेकिन ये दो मोहरें उन्होंने छुपाकर रख दी थीं।

सिद्धार्थ बहुत दूर परदेश जा रहा था। उसके पास ढंग के कपड़े न हों, मां को यह सहन नहीं था। नौकरी चाहे कितनी भी मामूली क्यों न हो, राय चौधरी घराने का बेटा फटे-पुराने कपड़े पहनकर नौकरी में नहीं जाएगा। मां की जिद पर उसने दोनों मोहरें बेच कर नए कपड़े बनवा लिए थे।

सिद्धार्थ सुबह तैयार होकर जब बाहर निकलता है, सामने की दुकान पर नाश्ते में एक कप चाय और दो नमकीन बिस्कुट लेता है और फिर दिन भर का सिलसिला शुरू हो जाता है। वह पागलों की तरह मेहनत करता है। उसकी जिन्दगी में और किसी चिन्ता के लिए जगह नहीं है। बस, हर दिन तमाम दवाओं की दुकानों और अस्पतालों की लिस्ट लेकर निकलता है, मानो वहां की हर दुकान पर नियमित रूप से हाजिरी देना, उसके जिन्दा रहने का एकमात्र बहाना है। बालुरघाट उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेन-आफिस है--उसके आस-पास के इलाके--मालदह, रायगंज, पुर्णिया, साहबगंज सब उसी के जिम्मे हैं। हर रोज वह चार-पांच घंटे बस का सफर करता है, फिर अपने ठिकाने लौट आता है।

सिद्धार्थ को दिन भर भूख लगी रहती है। शायद इसी भूख की वजह से वह अपने तन-बदन में हर वक्त अजीब-सा तनाव और उत्तेजना महसूस करता है, लेकिन उसके मन में और अधिक परिश्रम करने की लगन और प्रेरणा जाग उठती है। अगर कभी खूब तेज भूख लगी है, तो वह दस पैसे खर्च करके एक कप चाय सुड़ुक लेता है, ताकि कुछ देर के लिए भूख दब जाये। इन दो महीनों में ही सिद्धार्थ ने शहर के तमाम सस्ते होटलों का पता लगा लिया। वह अपना हाथ कसे रहता है--काफी सोच-समझकर पैसे खर्च करता है। दोपहर को किसी सस्ते होटल में अठन्नी का भात! यानी भात-दाल-तरकारी के लिए कुल मिलाकर एक रुपये के अन्दर ही काम चला लेता है। लेकिन हर दूसरे दिन मछली खाने को मन ललचा उठता है। जिस दिन मछली के कारण डेढ़ रुपये से अधिक खर्च हो जाता है, उस रात वह सिर्फ डबल रोटी खाकर सो रहता है। यानी वह अपने खाने पर कभी दो रुपए से अधिक खर्च नहीं करता। शुरू के महीने में वह घर पर सिर्फ अस्सी रुपए ही भेज सका, लेकिन अगले महीने उसने पूरे एक सौ बीस रुपए भेज थे। इसके बाद भी उसके पास तीस रुपए बच रहे थे। रुपया! रुपया!! रुपया ही तो सब कुछ है। सिद्धार्थ जब तक ढ़ेर-ढ़ेर रुपये नहीं जमा कर लेगा, वह कलकत्ता वापस नहीं लौटेगा।

सिद्धार्थ का चेहरा इन दो महीनों में ही बिल्कुल बदल गया है। अब वह छोकरा नहीं लगता, पूरा-पूरा मर्द बन गया है। टेरिलिन की आस्मानी रंग की नयी शर्ट में वह बेहद स्मार्ट लगता है। उसके चौड़े कंधे और अधिक चौड़े लगने लगे हैं। समूचे दिन तपती हुई धूप में चक्कर लगाने की वजह से उसके चेहरे का रंग सांवला पड़ गया है। रास्तों और बसों की उड़ती हुई धूल में बाल सूखे हो आए हैं और चाल में दृढ़ता की स्पष्ट छाप है। कम्पनी का नाम लिखा हुआ, काले रंग का वजनी ब्रीफ-केश उठाए, वह बिल्कुल तनकर चलता है। उसके चेहरे पर कभी पलभर को भी उदासी या थकान के चिन्ह नहीं उभरते।

शहर में घूमते हुए उसने कभी साइकिल-रिक्शा नहीं लिया--हमेशा पैदल ही घूमता है। शहर के संकरे रास्तों पर काफी कीचड़ और धूल होती है। उन पर दौड़ते हुए साइकिल-रिक्शों पर टैक्सियों की भीड़! हर वक्त अजीब-सी उमसभरी गंध! सिद्धार्थ यथासम्भव इन सबसे अपने जूतों की पॉलिश बचाता हुआ, पैदल ही घूमता है।

वह दवा की हर दुकान में जाता है और चेहरे पर मुस्कान खींचकर नमस्कार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता है। दुकानदारों के नाम जैसे रटे हुए हों।

वह एक जिम्मेदार सेल्समैन की तरह काफी गहरी आवाज में कहता है। 'चकलादार बाबू ! लीजिए, मैं दुबारा हाजिर हो गया। आपने कहा था न कि आप अपने यहां मल्टी-विटामिन का स्टॉक देख कर मुझे बताएंगे....'

सिद्धार्थ को अपनी कम्पनी की दवाएं लेकर घूमने की जरूरत नहीं पड़ती। उसकी कम्पनी की सारी दवाएं मालदह में आकर जमा हो जाती हैं। सिद्धार्थ मालदह पश्चिम दिनाजपुर और पूर्णिया के छोटे-छोटे शहर की दुकानों में जाकर, हर दुकान से दवाओं का ऑर्डर नोट कर लेता है, और उसकी सूचना के अनुसार उसकी कम्पनी का आदमी सारी दवाएं पहुंचा आता है। दिन भर की दौड़-धूप के बाद उसे होटल लौटते-लौटते आठ-नौ बज जाते हैं। मुंह-हाथ धोकर खाना खाने के बाद, वह दिन भर की रिपोर्ट तैयार करने में लग जाता है और अपना टी०ए० बिल तैयार करता है। यहां उसका कोई दोस्त भी नहीं है। काम के अलावा वह किसी से बात नहीं करता। दिन भर में पल भर की भी फुर्सत नहीं मिलती। इन सबके फालतू कामों के लिए उसके पास वक्त ही कहां है ?

हां, कभी किसी नौजवान डॉक्टर पर नजर पड़ जाती है, तो वह उदास हो उठता है। कभी-कभी आदिनाथ, शिवेन वगैरह की भी याद आने लगती है। दो-एक साल में वह लोग भी डाक्टर बन जांगे। कभी उसने भी डाक्टर बनने के सपने देखे थे। उसके बापू का भी मन था कि वह डाक्टरी पढ़े। लेकिन बी०एस-सी० की परीक्षा देने के बहुत पहले ही बापू का इन्तकाल हो गया। अब वह सिर्फ दवाएं बेचता है। बहुत से डाक्टर उससे सीधे मुंह बात भी नहीं करते, उससे बैठने तक को नहीं कहते। कोई-कोई डाक्टर तो यह कहकर उससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं कि वह अभी व्यस्त है। इस वक्त उन्हें बात करने की भी फुर्सत नहीं है। अगर वह किसी नयी दवा का सैम्पल लाया हो, तो रखकर चला जाए।

सिद्धार्थ अब नाराज नहीं होता। अपना धीरज भी नहीं खोता। वह चुपचाप इंतजार करता है। उसे अपना काम तो पूरा करना ही होगा।

किसी-किसी रात उसे नींद नहीं आती। सिर्फ, एक डबलरोटी खाने की वजह से भूख के मारे उसके पेट में जैसे आग जलती रहती है। तब वह शाल लपेटकर टहलने निकल जाता है। वह सिगरेट फूंकता हुआ नदी के किनारे तक पहुंच जाता है। उस वक्त समूचाशहर गरी नींद में बेहोश रहता है। यूकेलिप्टस के लम्बे-लम्बे दरख्तों के नीचे से गुजरते हुए खुशबू का हल्का-सा झोंका उसके बदन को छूता हुआ बिखर जाता है। सिद्धार्थ के सीने में तीखा-सा दर्द जाग उठता है। पलभर के लिए उसे लगता है, मानो पूरे कलकत्ते शहर ने साजिशि करके उसे निर्वासित कर दिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। दरअसल उसकी किसी को जरूरत नहीं थी। सबके लिए वह एक अनचाहा बोझ था। उसका मन बोझिल हो आता है। लेकिन अगले ही पल वह सारी उदासी को जबरन झटक देता है। उसे किसी ने यहां जबर्दस्ती नहीं भेजा। वह खुद, अपनी मर्जी से यहां आया है। यह उसके लिए निर्वासन नहीं है, उसका मुखौटा है। इस मुखौटे में छुपकर वह अपने को तैयार कर रहा है। अजय दा ने कहा था, एक साल के अन्दर ही उसे मेडिकल-रिप्रजेन्टेटिव की नौकरी दिलवा देंगे। उसे छः महीने की ट्रेनिंग के लिए बम्बई भेजा जाएगा, कानुपर या शिलांग में उसकी नियुक्ति हो जाएगी। इससे पहले, वह किसी शर्त पर धीरज नहीं खोएगा।

कलकत्ते में सिद्धार्थ की जिन्दगी सचमुच असहनीय हो उठी थी। लोग सुतपा के मामले में विशेष कुछ नहीं जान पाए। मां को थोड़ा बहुत शक भी हुआ तो उन्होंने जुबान से कुछ नहीं कहा।

वह भी यह सब बातें किसी को बता नहीं सकता। उसने टूनू को भी कुछ नहीं बतलाया। वैसे टूनू ने भी कुछ सुनने का आग्रह नहीं दिखाया।

उसे नहीं मालूम कि अनन्त सान्याल और सुतपा के बीच क्या समझौता हुआ था, लेकिन उन्होंने भी जैसे उसकी सारी शर्तें स्वीकार कर लीं। सुतपा पहले की तरह ही दफ्तर जाने लगी। एक दिन जब वह घर लौटा तो उसने देखा अनन्त सान्याल मां और छोटे कक्का के पास बैठे हुए मजे में गप्प लगा रहे हैं। उस दिन सिद्धार्थ जैसे अपने पर काबू नहीं रख पाया। अगर हर कोई अन्त में सब कुछ मान लेने को, हर किसी से समझौता कर लेने को राजी ही था, तो उसे इस मामले में घसीटा ही क्यों गया ? उस दिन मां और छोटे कक्का के प्रति भी गहरी वितृष्णा हो आयी थी। लेकिन अगले ही पल उसका सारा आक्रोश अनन्त सान्याल पर केन्द्रित हो गया। एक दिन उसी आदमी को उसने रास्ते पर खड़े होकर गन्दी गालियां दी थी। इसके बावजूद उस आदमी ने उसके घर में दुबारा कदम रखा, सबसे हंस-हंसकर बातें कर रहा है—यह बात उसे बेहद असहनीय लगी ! इसी अनन्त सान्याल के पास कभी वह दीन-हीन बनकर नौकरी मांगने गया था, इस ग्लानि को भी वह कभी भूल नहीं सकता था। उसे वहां देखकर उसका मन हुआ था कि उसे गरदनिया देकर अपने घर से बाहर निकाल दे। वह क्रुद्ध बाघ की तरह उस पर टूट पड़ा। मां और छोटे कक्का ने ही बीच-बचाव कर दिया। मौका मिलते ही उसने गुस्से से दांत किट-किटाते हुए उसकी गर्दन पर अपने नाखून गड़ा दिए। लेकिन कोई हादसा नहीं हुआ। मां और कक्का ने अनन्त सान्याल के सामने ही उसे डांटना शुरू कर दिया। उसी दिन सिद्धार्थ ने फैसला कर लिया था कि वह यह घर छोड़ देगा। अपने आसपास की हर बात स्वीकार करके मुंह पर ताला लगाए हुए। वह कुछ सहते रहना और शान्त बने रहना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नामुमकिन है। वह इस स्थिति में हरगिज नहीं रह सकता।

इससे भी बड़ा आघात उसे केया के घर लगा था। सिर्फ एक केया ही तो थी, जिसके पास जाकर वह राहत महसूस करता था। केया से जुड़कर उसे भी अपनी जिन्दगी का कोई निश्चित अर्थ समझ आने लगा था। उसे लगा वह सबसे अलग है। किसी दिन अगर वह दुनिया की भीड़-भाड़ में गुम भी हो गया तो कम-से-कम केया को यह भरोसा रहेगा कि वह भीड़ के अन्य लोगों की तरह उद्देश्यहीन होकर भटक नहीं रहा है। जब कभी वह कहीं से अपमानित या लांछित या पराजित होकर लौटा, केया ने उसका हाथ थाम कर सहारा दिया, और उसने एकबारगी महसूस किया कि अचानक ही उसकी देह में मस्त हाथी जैसा प्रचण्ड ताकत आ समायी है।

....अचानक सब कुछ बदल गया। जाने कब केया की अपर्णा मौसी से, केया के डैडी का ब्याह हो गया, उसे पता ही नहीं चला। वह तो अचानक ही एक दिन उनके फ्लैट में पहुंच गया था। सारा फ्लैट लोगों की भीड़ में अंटा हुआ था। अपर्णा देवी को देखकर यह बिल्कुल नहीं लग रहा था कि वह नयी बहू है। उसने ऐसी शादी कभी नहीं देखी। उनमें कहीं कोई शर्म या संकोच नहीं था। वह बेहद सहज भाव से लोगों से बातें कर रही थीं, चाय पिला रही थीं, मानो वह इस फ्लैट में बहुत दिनों से रहती हैं।

सिद्धार्थ को संकोच हो आया। केया के डैडी ने ही दरवाजा खोला। वही उसे अन्दर लिवा लाए। इतने सारे लोगों की भीड़-भाड़ में, वह बुद्धुओं की तरह एक कोने में बैठा रहा। उस दिन केया से भी दो-चार बातों के अलावा कोई खास बात नहीं हुई। उसकी तरफ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। सिद्धार्थ महसूस कर रहा था, कि वह एक अनचाहे मेहमान की तरह आ धमका है। मौका पाकर वह किसी से बिना कुछ कहे-सुने, उठकर चल दिया।

सात-आठ दिन बाद वह केया से दुबारा मिलने गया। उस दिन भी उनके यहां काफी लोग जमा थे। उसे लगा अपर्णा देवी को भीड़-भाड़ और हो-हल्ला बेहद पसंद है। उस दिर वह चोरों की तरह मुंह छिपाकर भाग आया। केया से बाहर मुलाकात करने की भी कोई राह समझ में नहीं आयी। इससे पहले बाहर मिलने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी। बाहर की गलीज दुनिया की तुलना में केया का फ्लैट उसे स्वर्ग लगता था। साफ-सुथरा खूबसूरत फ्लैट ! कहीं कोई शोरगुल नहीं ! पहाड़ी आया भी ज्यादातर चुप रहती थी। केया के डैडी भी शाम के वक्त अक्सर घर से बाहर रहते थे ! छोटा भाई सो जाता।....वह और केया एकान्त में आमने-सामने बैठकर हजारों तरह की बातें किया करते थे—वह बातें जो उन दोनों को अपने-अपने लिए बेहद कीमती लगी थीं। वहां कभी किसी ने उन्हें डिस्टर्ब नहीं किया। अचानक वह तमाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्यारी-प्यारी शामें जाने कहां गुम हो गयीं। ब्याह के बाद केया के डैडी अक्सर शाम को घर पर ही रहते थे या सपरिवार कहीं बाहर घूमने निकल जाते थे। जब-जब वह घर पर होते, मेहमानों का तांता बंधा रहता था। सिद्धार्थ समझ गया, अब वहां भी उसके लिए कोई जगह नहीं है। सबकी प्रश्नभरी निगाहों को झेलते हुए सकुचाए से बैठे रहने में कोई तुक नहीं था। केया के डैडी और नयी मां ने उसे किसी दिन सहज होकर नहीं स्वीकारा ! हालांकि उसे कभी नकारा भी नहीं, लेकिन कभी इज्जत भी नहीं दी। उसके सीने में अजब-सी व्यर्थता का अहसास और आक्रोश जमा होता जा रहा था। पानी में डूबता हुआ आदमी जैसे हवा के लिए छटपटाता है, उसी तरह वह केया के एकान्त सान्निध्य के लिए तरस गया। लेकिन उसका कोई उपाय भी नहीं था। हालांकि यह बात वह अच्छी तरह समझ चुका था कि केया के घर में जाना उचित नहीं है, फिर भी वह जाए बिना रह नहीं पाता था। दिन-दिन भर गली-सड़कों पर पैदल-पैदल भटकता था। धीरे-धीरे वह इतना तल्ख हो उठा था, मानो जुबान पर नीम की पत्ती चिपक गयी हो। कम-से-कम एक बार केया को देखे बगैर, उसे नींद ही नहीं आती थी।

उसके बाद केया के डैडी ने उसे करारी चोट दी थी। वैसे वह भी मन-ही-मन, इसके लिए अपने को थोड़ा-बहुत तैयार कर चुका था।..... उस दिन भी केया के यहां काफी भीड़-भाड़ थी। दरवाजा केया ने ही खोला था। घुंघराली लटों के बीच गन्धराज के फूल की तरह उसका उजला-खिला चेहरा ! उसने काले रंग की सिल्क की साड़ी पहनी थी। वह दरवाजे पर अपनी गोरी-गोरी सुडौल हथेलियां टिकाए खड़ी थी। सिद्धार्थ के सीने में बहुत सारा धुंआ जमा था। एक असहनीय सुख के अहसास ने मानो उसके बोलने की ताकत भी छीन ली हो। ऐसे सुख के पलों में उसके सीने में अजब-सा दर्द जाग उठता है। पल भर को दोनों नि:शब्द खड़े रहे। लेकिन अभी कुछ ही पल बीते थे कि केया के डैडी ने सामने आकर टोक दिया, "तू कहां है, बिट्टू ? मि० सेन गुप्ता..." अचानक सिद्धार्थ पर निगाह पड़ते ही, उनके चेहरे का भाव बदल गया। उन्होंने बेहद शिष्ट लेकिन गम्भीर आवाज में कहा, "आज हम लोग जरा व्यस्त हैं, तुम किसी और दिन आना। अच्छा ?"

किसी और दिन आने को कहकर केया के डैडी ने उसके मुंह पर ही दरवाजा बन्द कर दिया। उस शाम सिद्धार्थ कितनी रात गए तक अकेले-अकेले सड़कों पर चक्कर काटता रहा, जाने कितनी जानी-अनजानी राहों पर, दिशाहारा होकर भटकता रहा।

सिद्धार्थ में आत्मभिमान की कमी नहीं है। उसी दिन उसने फैसला कर लिया कि केया से मुलाकात करने की बात तो दूर, वह उसका नाम भी अपनी जबान पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं लाएगा। जब कभी केया की याद आने लगती, वह बेवजह ही औरों से बातें करने लगता। अकेले में केया का ख्याल उसे हमेशा परेशान करने लगता। अतः वह हर वक्त अपने यार-दोस्तों के साथ सड़कों पर डांव-डांव घूमता रहता। यहां तक कि जो रतन उसे फूटी आंखों नहीं सुहाता था, उसके साथ जान-बूझकर वह ऐरे-गैरे अड्डों पर घूमने लगा। उसी समय उसने जान लड़ाकर नौकरी के लिए भी कोशिश की। पूरे पांच दिनों बाद उसे केया का खत मिला था। तब जाकर उसने राहत की सांस ली।

केया के यहां के पते पर भी एक खत भेजा है—परसों ही मिला है। केया के खत में किसी उदासी का उच्छ्वास नहीं होता। किसी तरह का आक्रोश या निराशा भी नहीं होती। सिद्धार्थ को पता है, अपर्णा देवी केया से अच्छा व्यवहार नहीं करतीं। अब तो केया के डैडी भी काफी बदल गये हैं। लेकिन केया ने कभी किसी की निन्दा नहीं लिखी। चार पन्नों के खत में उसने अपने घर की छोटी-बड़ी तमाम खबरें दी हैं। लेकिन अपने बारे में तो कुछ भी नहीं लिखा ! ज्यादातर दूसरों के बारे में ही लिखा है। खत के अन्त में सिर्फ इतना लिखा है-"तुम्हें दुबारा कब देखूंगी ? तुम क्या अब कभी नहीं लौटोगे ?"

सिद्धार्थ को उसका खत करीब-करीब रट गया है। आधी रात को शॉल लपेटकर जब वह बालुरघाट के निर्जन रास्तों पर टहलता है, तो उसका खत आंखों के आगे ज्यों-का-त्यों अंकित हो जाता है। वह कई-कई बार खत की आखिरी लाइनें दोहराता है—"तुम्हें अब दुबारा कब देखूंगी ? तुम क्या अब कभी नहीं लौटोगे ?"

सिद्धार्थ ने अपनी बाहें फैला लीं, ताकि ठंड न महसूस हो और इधर-उधर से झटका देकर समूचे शरीर को चुस्त-दुरुस्त कर लिया। हां, उसकी सेहत पहले से अधिक अच्छी हो गयी है। उसकी बांहों की मांसपेशियां काफी उभर आयी हैं। हर अंग बेहद हल्का-फुल्का, लेकिन मजबूत। सिद्धार्थ ने किसी झबरेदार शिकारी जानवर की तरह अपनी समूची देह को एक झटका दिया। उसकी आंखें जल उठीं।

वह अचानक अपने होंठ चबाने लगा। उसने खुद ही अपने बालों को मुट्ठी में कस लिया और मन-ही-मन बुदबुदाता रहा—हां, मैं लौट आऊंगा ? अभी तो मैंने अपने को मुखौटे में छुपा रखा है। मुझे सिर्फ केया की खातिर ही वापस लौटना है, पहले मुझे हर किसी से अपना बदला भी लेना है। मैं जरूर वापस आऊंगा। इन्टरव्यू लेने वाले उन तमाम लोगों को, जो खींच-खींचकर बातें कर रहे थे--एकबारगी खत्म कर दूंगा। उस मकान को चूर-चूर करके धूल में मिला दूंगा। जिसमें उस दिन बादल और उसके दोस्तों ने मिलकर उसका चेहरा खून में तर कर दिया था, मैं उनके चेहरे पर कालिख न पोत दूं तो....और वह अनन्त सान्याल....उसकी तो दोनों आंखें निकाल लूंगा ....वह मुझे पहचानता नहीं है। अब उसके सामने वह पुलिस-आफिसर या केया के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डैडी ही क्यों न हों, अगर वह लोग घूसखोर हैं तो सबको एक लाइन से, दीवार की तरफ मुंह घुमाकर खड़ा कर दूंगा और हाथ में राइफल लेकर....सबको देख लूंगा ! हां, मैं सचमुच वापस लौटूंगा। जरूर लौटूंगा !!

●●●

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 4538
Dated 19/3/03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

94191841183

G.M.C.E.J
4538

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनील गंगोपाध्याय

जन्म : 7 सितम्बर, सन् 1934
फरीदपुर (बंगला देश)

समकालीन बंगला साहित्य का यशस्वी हस्ताक्षर; चर्चित, प्रशंसित कथाकार एवं कवि। 25 वर्षों तक 'कृतिवास' पत्रिका का सम्पादन तथा प्रकाशन।

वर्ष 1985 में साहित्य अकादमी द्वारा अपने बृहत उपन्यास 'सेई समय' के लेखन पर सम्मानित। प्रायः हर विधा में लेखन, 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सम्प्रति : आनन्द बाजार पत्रिका से सम्बन्धित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant